श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेषांक
अगस्त-2022
मूल्य-40/-
वर्ष 12
अंक 11
नारायण-मंत्र-साधना
विज्ञान
अष्टलक्ष्मी साधना
महाकाली साधना
योगेश्वर श्रीकृष्ण-
तीन विशिष्ट साधनाएं

पूज्य सद्गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

कृपया ध्यान दें

- 1. यदि आप साधना सामग्री मंगवाना चाहते हैं।
- 2. यदि आप अपना पता या फोन नम्बर बदलवाना चाहते हैं।
- 3. यदि आप पत्रिका की वार्षिक सदस्यता लेना चाहते हैं।

तो आप जोधपुर कार्यालय के फोन नम्बरों पर सम्पर्क करें

8890543002

साधकों को सभी सामग्री स्पीड पोस्ट से भेजी जाती है। अतः साधना सामग्री मंगाने के लिए सामग्री की न्यौछावर राशि के साथ डाकखर्च 100 रुपये जोड़कर निम्न बैंक खाते में जमा करवा दें तथा जमा राशि की रसीद, साधना सामग्री का विवरण, अपना पूरा पता पिनकोड एवं फोन नम्बर के साथ हमें उपरोक्त नम्बर पर वाट्सअप कर दें तो हम आपको साधना सामग्री स्पीड पोस्ट से भेज देंगे, जिससे आपको साधना सामग्री शीघ्र प्राप्त हो सकेगी।

बैंक खाते का विवरण

खाते का नाम	: नारायण मंत्र साधना विज्ञान
बैंक का नाम	: स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
ब्रांच कोड	: SBIN0000659
खाता नम्बर	: 31469672061

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

1 वर्ष सदस्यता 405/-

लक्ष्मी यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

गणेश यंत्र एवं माला
405 + 45 (डाक खर्च) = 450

1 वर्ष सदस्यता 405/-

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म-प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः॥

भोग और मोक्ष प्रदान करने में सहायक : महाकाली साधना
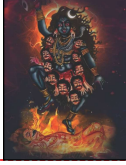
ऋद्धि-सिद्धि के साथ सम्पन्नता प्राप्ति हेतु : लक्ष्मी विनायक साधना

समस्त रोगों को शान्त एवं समाप्त करने में सक्षम : रोग नाशार्थ राहू प्रयोग

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद
पूजनीया माताजी
(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक
श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक
राजेश कुमार गुप्ता

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
श्री अरविन्द श्रीमाली
द्वारा
नारायण प्रिण्टर्स
नोएडा
से मुद्रित तथा
'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'
कार्यालय :
हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से
प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति	40/-
वार्षिक	405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : **http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org** E-mail : **nmsv@siddhashram.me**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

।। ॐ विद्यान्यै विद् विद्महे श्रियत्वं सह श्रिये सदन्नः।।

हे गुरुदेव! आप मुझ पर कृपा करें। मेरे जीवन में सम्पूर्ण साधनाएँ एवं विद्याएँ सहज ही प्राप्त हों, जिससे मैं विश्व में अद्वितीय व्यक्ति बन सकूँ और समस्त विश्व के प्राणियों का कल्याण कर सकूँ।

समर्पण

कथा महाभारत युद्ध की है। अश्वत्थामा ने अपने पिता की छलपूर्ण हत्या से कुंठित होकर नारायणाशस्त्र का प्रयोग कर दिया। स्थिति बड़ी अजीब पैदा हो गई। एक तरफ नारायणास्त्र और दूसरी तरफ साक्षात नारायण। अस्त्र का अनुसंधान होते ही भगवान ने अर्जुन से कहा—गांडीव को रथ में रखकर नीचे उतर जाओ और हाथ जोड़कर नमन की मुद्रा में खड़े हो जाओ...अर्जुन ने न चाहते हुए भी ऐसा ही किया और श्रीकृष्ण ने भी स्वयं ऐसा ही किया। नारायणास्त्र बिना किसी प्रकार का अहित किए वापस लौट गया, उसने प्रहार नहीं किया, लेकिन भीम तो वीर था, उसे अस्त्र के समक्ष समर्पण करना अपमान सा लगा। वह युद्धरत रहा, उसे छोड़कर सभी नारायणास्त्र के समक्ष नमन मुद्रा में खड़े थे। नारायणास्त्र पूरे वेग से भीम पर केन्द्रित हो गया। मगर इससे पहले कि भीम का कुछ अहित हो, नारायण स्वयं दौड़े और भीम से कहा—मूर्खता न कर! इस अस्त्र की एक ही काट है, इसके समक्ष हाथ जोड़कर समर्पण कर, अन्यथा तेरा विध्वंस हो जायेगा।

भीम ने रथ से नीचे उतर कर ऐसा ही किया और नारायणास्त्र शांत होकर वापस लौट गया, अश्वत्थामा का वार खाली गया।

यह प्रसंग छोटा सा है, पर अपने अन्दर गूढ़ रहस्य छिपाये हुए है... जब नारायण स्वयं गुरु रूप में हों, तो विपदा आ ही नहीं सकती, जो विपदा आती है, वह स्वयं उनके तरफ से आती है, इसलिए कि वह अपने शिष्यों को कसौटी पर कसते हैं....कई बार विकट परिस्थितियाँ आती हैं और शिष्य टूट सा जाता है, उससे लड़ते-लड़ते। उस समय उस परिस्थिति पर हावी होने के लिए सिर्फ एक ही रास्ता रहता है समर्पण का... वह गुरुदेव के चित्र के समक्ष नतमस्तकहोकर खड़ा हो जाए और भक्तिभाव से अपने आपको गुरुचरणों में समर्पित कर दे और पूर्ण निश्चिंत हो जाए... धीरे-धीरे वह विपरीत परिस्थिति स्वयं ही शांत हो जायेगी... और फिर उसके जीवन में प्रसन्नता वापस आ जायेगी।

यदि देखा जाय तो हमारे सारे शास्त्रों में, सभी उपनिषदों में कठोपनिषद एक उज्ज्वल हीरक रत्न की तरह है, जिसका एक-एक अक्षर अत्यन्त महत्वपूर्ण है और दिव्य है।

अब तो जाग

इस उपनिषद् में उन प्रश्नों के उत्तर खोजे गए हैं, जिनके उत्तर सामान्यत: विज्ञान और ज्ञान दोनों के पास नहीं हैं, न ज्ञान उन चिन्तनों को समझ पाया है...

और विज्ञान तो कभी उन चिन्तनों को समझ ही नहीं सकता। विज्ञान की तो एक सीमा है, वह केवल भौतिक दृष्टि से आदमी को पूर्णता दे सकता है, मानव शरीर को सुख देने की कोशिश कर सकता है।

जीवन के जटिल प्रश्नों में धर्म, दर्शन, मीमांसा और कई सम्प्रदायों से सम्बन्धित अनेकों प्रश्न हैं, परन्तु मूलभूत प्रश्न हैं

- जीवन क्या है?
- मृत्यु क्या है?
- इस मृत्यु से पहले की स्थिति क्या है?
- इस मृत्यु के बाद की स्थिति क्या है?
- मृत्यु और जीवन के बीच की स्थिति क्या है?

ये प्रश्न वे हैं, जो प्रत्येक ज्ञानी मनुष्य के मन में उठते ही हैं, और जब वे प्रश्न व्यक्ति के मानस में उठते हैं, तो तब तक उसे चैन नहीं मिलता, जब तक कि उसे इनका उत्तर ज्ञात नहीं हो जाय। इन प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए ही अनेकों ग्रंथ, उपनिषद लिखे गये, फिर भी व्यक्ति संतुष्ट नहीं हुआ... उसे हमेशा ऐसा लगता रहा, कि कहीं कुछ शेष बचा रहा है, जहाँ तक कि मैं नहीं पहुँच पा रहा हूँ... और यह शेष... यह खालीपन बाहर नहीं, मेरे भीतर ही है... कैसे इस शेष को समझूं? कैसे इस खालीपन को भरूं?

और कठोपनिषद् में इन प्रश्नों से जूझने का प्रयत्न किया गया है। इसमें जीवन को जीने का तरीका सिखाया गया है। कठोपनिषद में यह स्पष्ट किया गया है, कि मनुष्य के जीवन का क्या हेतु है, क्या प्रयोजन है, क्या लक्ष्य है? हमें जीवन किस प्रकार से जीना चाहिए? क्या हम जिस प्रकार से जीवन जी रहे हैं, वह जीवन है? या जो हम सांस ले रहे हैं, संतान पैदा कर रहे हैं, क्या इसको जीवन कहते हैं?

कठोपनिषद कहता है–नहीं! यह जीवन नहीं है। जीवन तो बहुत बिरले लोग ही जी सकते हैं। लाखों में से एक या दो व्यक्ति ही जीवन जीने की कला जानते हैं, और जिसने जीवन जीने की कला पहिचान ली, उसके जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता रह ही नहीं सकती, क्योंकि वह उन प्रश्नों के समाधान की ओर अग्रसर हो जाता है, जिसको जीवन का आधार कहते हैं।

जीवन और मृत्यु नदी के दो छोर हैं। जहाँ जीवन है, वहाँ मृत्यु नहीं हो सकती, जहाँ मृत्यु है, वहाँ जीवन की कल्पना की ही नहीं जा सकती। जहाँ अंधेरा है, वहाँ प्रकाश कैसे हो सकता है, और जहाँ प्रकाश है, वहाँ अंधेरा आ ही नहीं सकता। जीवन है, तो मृत्यु नहीं आ सकती... और मृत्यु नहीं आ सकती, तो फिर हम समझ सकते हैं, कि जीवन का मूलभूत चिंतन.... तथ्य क्या है? इसीलिए तो कठोपनिषद् को अद्वितीय उपनिषद कहा गया है, क्योंकि उसमें उन प्रश्नों का विवेचन हुआ है, जो जीवन और मृत्यु जैसे अत्यन्त दुर्बोध कठिन प्रश्नों को सुलझाने की ओर प्रेरित करते हैं।

इन सारे प्रश्नों के उत्तर कठोपनिषद में एक कहानी, एक कथा के माध्यम से स्पष्ट किये गए हैं। सामान्य आदमी सीधी-सादी बात समझता है, कठिन सूत्र समझने में उसे असुविधा होती है, जबकि कठोपनिषद में प्रत्येक पंक्ति एक सूत्र रूप में है, जिसको समझने के लिए एक उच्चकोटि की विद्वता, और उच्च कोटि का ज्ञान चाहिए।

सामान्य आदमी मूल कठोपनिषद को समझ नहीं सकता, पढ़ तो सकता है, मगर उसके मर्म को नहीं समझ सकता, क्योंकि उसके मर्म को समझने के लिए उसी प्रकार की भावभूमि चाहिए, उसी प्रकार का ज्ञान चाहिए, उसी प्रकार का चिंतन चाहिए, उसे स्वयं उस ऊंचाई पर पहुँचा हुआ ऋषितुल्य होना चाहिए, तभी वह स्वयं उस मर्म को समझ सकेगा, उस चिंतन को समझ सकेगा।

महर्षि उद्दालक अत्यन्त श्रेष्ठ ऋषि हुए और महान राजा भी, जो राजा हो सकता है, वह ऋषि भी हो सकता है। जो भोग, भोग सकता है, वह वैराग्य को भी समझ सकता है। जिसने वैराग्य को नहीं देखा, वह भोग को भी नहीं देख सकता। इसलिए उच्चकोटि के जितने भी चिंतक बने, कभी न कभी गृहस्थ बने।

– बुद्ध भी पहले भोगी थे, राजपुत्र थे, उसके बाद संन्यासी हुए और बुद्ध बन गए।

–महावीर राजपुत्र थे और फिर संन्यासी बन गए।

–शंकराचार्य को भी, मंडन मिश्र की पत्नी को पराजित करने के लिए परकाया प्रवेश द्वारा एक राजा के शरीर में रहते हुए गृहस्थ जीवन का अनुभव लेना पड़ा।

जितने भी संन्यासी, योगी हुए उन्होंने जीवन के भोग को भी समझा, उन्होंने जीवन के संन्यास मार्ग को भी समझा और जाना, कि ये दोनों एक सिक्के के ही दो पहलू हैं, क्योंकि बिना भोग को समझे संन्यास समझा ही नहीं जा सकता।

–आखिर संन्यास क्या चीज है ?

–भोग की निवृत्ति, तृष्णाओं की निवृत्ति ही संन्यास है।

–फिर वे भोग कौन–से हैं, जिनकी निवृत्ति हो ?

इसे जानने के लिए जीवन मृत्यु को समझना जरूरी है, अगर जीवन को नहीं समझ सकते तो यह भी नहीं समझ सकते, कि मृत्यु क्या है? मृत्यु का स्वरूप क्या है? मृत्यु का सौन्दर्य क्या है? हम मृत्यु से कैसे आबद्ध होते हैं? मृत्यु के साथ कैसे समय व्यतीत कर सकते हैं?–और मृत्यु के साथ समय व्यतीत करने की कला छिपी है–कठोपनिषद् में...।

महर्षि उद्दालक ने ब्राह्मणों को एक लाख गाय दान करने का निर्णय किया। उसने मैदान में उन गायों को एकत्र किया, तभी उसका पुत्र नचिकेता वहाँ आया, नचिकेता ने उन गायों को देखा, छोटा–सा बालक... मगर छोटा सा बालक भी अपने–आप में पूर्ण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति हो सकता है। कोई बालक नहीं होता, कोई वृद्ध नहीं होता। आयु और मन दोनों अलग–अलग चीज हैं। हो सकता है, कि किसी बालक की आयु पांच वर्ष की हो और मन की अवस्था, ज्ञान की अवस्था सौ साल हो। प्रहलाद की शारीरिक अवस्था तो पांच साल की थी, मगर उसके पास जो ज्ञान था, वह सौ साल का था, और ऐसे कई वृद्ध भी हैं, जिनकी आयु तो अस्सी साल की है, मगर उनका मन, उनका चिंतन अबोध बालकों जैसा है, इसलिए दोनों अलग–अलग अवस्थाएँ हैं। यह जरूरी नहीं है, कि पांच साल का बालक पांच साल की ही बुद्धि रखता हो। प्रत्येक बालक अपने–आप में वृद्धावस्था छिपाए हुए होता है। ठीक उसी तरह से एक वृद्ध के मन में भी एक बालक छिपा हुआ होता है, इसलिए साठ साल की आयु के बाद वृद्ध ठीक उसी प्रकार आचरण करने लग जाता है, जैसे बालक करता है।

–उस पांच साल के नचिकेता के मन में अस्सी साल का ज्ञान बोल रहा था... उसने देखा और सोचा–मेरे पिता गायों का तो दान दे रहे हैं, मगर ये गायें अत्यन्त दुर्बल हैं, अत्यन्त कमजोर हैं, इनके दांत गिर गए हैं, इनके थनों में दूध नहीं निकल सकता, दूध की एक–एक बूंद गाय के थनों से निकाली जा चुकी है। अब गायें उस हालत में पहुँच गई हैं, कि यदि घर में रहती हैं, तो केवल चारा खाती हैं, पानी पीती हैं, मगर दूध नहीं दे सकतीं, क्योंकि ये अब वृद्ध हो गई हैं, और ऐसी गायें ब्राह्मणों को दान दी जा रही हैं।

नचिकेता सोचता है कि इन गायों को दान में देने से कैसे पुण्य प्राप्त होगा? दान में लेकर ब्राह्मण इन गायों से क्या प्राप्त करेंगे? जिनके थनों में दूध नहीं, उन गायों को लेकर वे ब्राह्मण करेंगे क्या?

–आखिर मेरे पिता इतने स्वार्थी क्यों हो गए हैं?

–एक बालक यदि अपने पिता के बारे में ऐसा सोचता है, तो उसका ज्ञान अस्सी साल की आयु के बराबर है। उद्दालक का चिंतन पन्द्रह साल के बालक के बराबर है, वह सोचता है–ये गायें मेरे घर में भार स्वरूप हैं। अब इन गायों को दान में दे देना चाहिए, जिससे कि मेरे घर से यह भार हटे, जिससे इनके स्थान पर मैं दूसरी और भरपूर दूध देने वाली गायों को ला सकूँ... परन्तु नचिकेता तो दु:खी है, वह तो उन गायों को ताक रहा है, जिनकी आँखों में आँसू हैं, जिनकी आँखों में विवशता है, जिनकी आँखों में दुर्बलता है, जिनकी हड्डियाँ साफ–साफ दिखाई दे रही हैं।

यह हमारा दुर्भाग्य है, यह हमारा घटियापन है, कि हम दान उस चीजों का देते हैं, जो हमारे लिए व्यर्थ होती हैं। ऐसा दान अपने–आप में कोई प्रयोजन नहीं रखता। इसलिए शास्त्रों में यह स्पष्ट किया गया
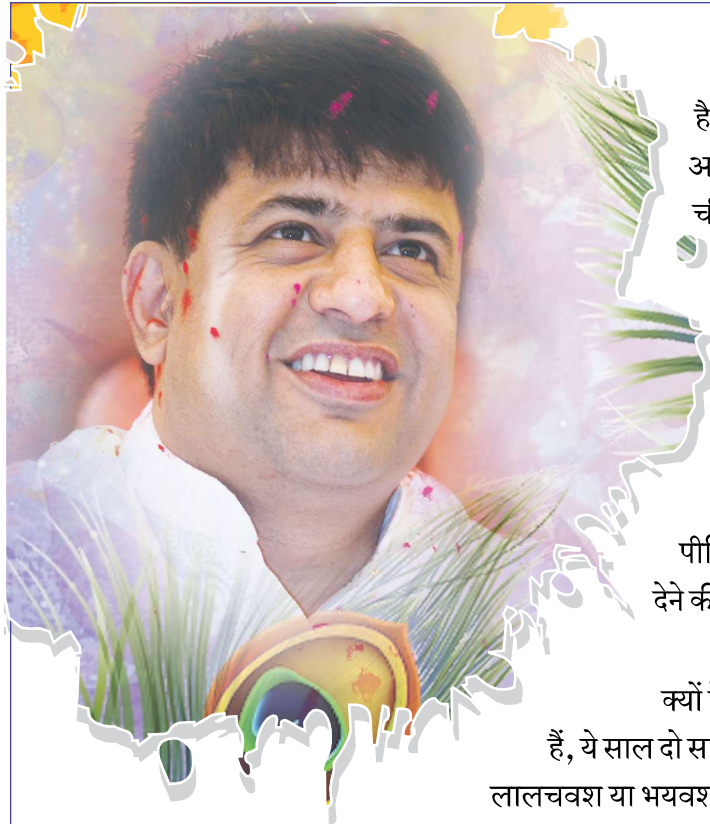
है–दान वह किया जाय, जो तुम्हें बहुत अधिक प्रिय हो, जो तुम्हारे लिए अत्यन्त आवश्यक हो, जिसके बिना तुम्हारा काम चल नहीं सकता, उस चीज का दान दो।

और उद्दालक, उन गायों को दान देना चाहता था, जो गायें व्यर्थ थीं... नचिकेता उन गायों को और अपने पिता की चालाकी को देख रहा था। वह पांच साल का बालक मंथन कर रहा था, यह विचार कर रहा था–क्या इनका दान दिया जाना चाहिए? यह परम्परा मेरे पिता से मुझ तक और आने वाली सभी पीढ़ियों तक जायेगी, तो क्या यह उचित रहेगा? यदि इस दुर्बुद्धि को यही नहीं रोका गया, तो आने वाली पीढ़ियां एक अजीब अपराध वृत्ति से ग्रस्त हो जायेगी। वे उन वस्तुओं का दान देने की कोशिश करेंगी, जो उनके लिए व्यर्थ हैं।

वह पिता के पास गया और हाथ जोड़कर पूछा—आप ये गायें दान में क्यों दे रहे हैं? इन गायों को दान में देने से क्या लाभ होगा? ये गायें तो वृद्ध हो गई हैं, ये साल दो साल में मर जायेंगी, इनको दान देने से ब्राह्मणों का क्या हित होगा? ब्राह्मण तो लालचवश या भयवश ले लेंगे, कि राजा दान दे रहे हैं, यदि नहीं लेंगे, तो कल राजा हमको दुःख दे सकते हैं, तकलीफ दे सकते हैं, राज्य से निकाल सकते हैं... आप इन गायों को दान में क्यों दे रहे हैं? क्या यह उचित है?

एक छोटा सा बालक अगर पिता से ऐसा प्रश्न करे, तो पिता को क्रोध आना स्वाभाविक है, क्योंकि वह तो समझता है, कि मैं बड़ा हूँ, इसलिए क्रोध करना मेरा धर्म, मेरा अधिकार है, मैं क्रोध कर सकता हूँ–और जहाँ पर भी मनुष्य के अहं पर चोट लगती है, उसकी भूल पर, दोष पर चोट लगती है, तो वह क्रोधित होता ही है। सत्य स्वीकार करने पर क्रोध नहीं आता, मगर यदि किसी के मन में पाप है, छल है, झूठ है, और उस पर यदि प्रहार किया जाए, तो क्रोध आना स्वाभाविक है। उद्दालक के मन में भी कुबुद्धि थी, वह समझता था–ये जो गायें हैं, जो फालतु घास खा रही हैं, जो व्यर्थ हैं, इनको निकाल देना चाहिए, यह धूर्तता उसके मन में थी... और नचिकेता ने इसी छल पर प्रहार किया, उसके मन पर प्रहार किया।

उद्दालक को क्रोध आया और क्रोध के मारे आँखें लाल करके उसने गुस्से से मुट्ठियों को भींचा, सोचने लगे–यह छोटा सा बालक मेरे सामने खड़ा होकर जुबान लड़ाता है। बड़े-बड़े महिपति जब मेरे सामने सिर ऊंचा नहीं उठाते, तो इस लड़के की इतनी हिम्मत, कि यह मुझसे आँखें मिला कर बात करे, और उसने उसे डांट दिया।

नचिकेता ने हाथ जोड़कर प्रश्न किया–यदि आप इन गायों को इसलिए दे रहे हैं, क्योंकि ये सब व्यर्थ हैं, आपके घर में भार तुल्य हैं, तो जब मैं भी भार तुल्य बन जाऊंगा, बेकार हो जाऊंगा, आप मुझे भी दान में दे देंगे?

एक बड़ा तीक्ष्ण प्रश्न था, कि मैं कभी वृद्ध हो जाऊंगा, तो मुझे भी दान दे दिया जायेगा?

–''और दे देंगे, तो किसको दान देंगे? ब्राह्मणों को? ....क्या आप मुझे ब्राह्मणों को दान देंगे?'

उद्दालक तो क्रोध के घोड़े पर सवार थे, उन्होंने कहा–''हाँ! हाँ! यदि तू भार स्वरूप होगा, तो तुझे भी दान में दे दूंगा।''

नचिकेता ने कहा–''आप मुझे किसे देंगे, मुझे कौन स्वीकार करेगा?''

क्रोध के आवेश में उद्दालक कहते हैं–''मैं तुझे मृत्यु को दे दूंगा, तू मृत्यु के पास जा।''

नचिकेता ने पिता की आज्ञा को स्वीकार किया।

अन्तर था दोनों में, एक क्रोधमय था... दूसरा शान्तमय था, और क्रोध में आदमी का विवेक समाप्त हो जाता है, क्रोध में आदमी को अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता। क्रोध में उद्दालक उसे दान देने को कहते हैं, जो उनका पुत्र है–मैं तुझे मृत्यु को दे रहा हूँ... इससे ज्यादा क्रोध की स्थिति और क्या हो सकती है... और इससे ज्यादा नम्रता की स्थिति क्या बन सकती है, कि नचिकेता हाथ जोड़कर विनीत भाव से प्रश्न करता है।

–''क्या मैं मृत्यु के पास चला जाऊं?''

और फिर सोचकर स्वयं उत्तर देता है–''आप ठीक कहते हैं, यदि आप मुझे मृत्यु को देते हैं, तो यह मेरा सौभाग्य है, क्योंकि पिता की आज्ञा का पालन करना प्रत्येक पुत्र का कर्त्तव्य और धर्म है.... और मैं आपकी आज्ञा का पालन करूंगा, मैं जरूर मृत्यु के पास जाऊंगा। जिस प्रकार से ये गायें ब्राह्मणों के पास जा रही हैं, उसी प्रकार से मैं मृत्यु के पास चला जाऊंगा।''

उद्दालक के विचारों को झटका लगता है, और वे सोचते हैं–''मैंने ऐसा कैसे कह दिया? मेरे मुंह से ऐसी गलत बात कैसे निकल गई? वे पश्चाताप करते हैं, हतबुद्धि हो जाते हैं... यह मैंने क्या कर दिया?... और नचिकेता ने तो यह बिल्कुल सही मान लिया... वह मृत्यु के पास जाने के लिए तैयार हो गया है।''

इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से उद्दालक की आँखों में आँसू आ जाते हैं, शरीर थरथराने लगता है, क्रोध तो कभी का समाप्त हो गया था। उन्होंने बेटे को अपनी गोदी में उठाया और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा–''मैंने तो क्रोध में कह दिया। तू तो मेरा एकमात्र पुत्र है, मैं तुझे मृत्यु को कैसे दे सकता हूँ, यह तो सम्भव ही नहीं है, यह तो मेरे मुंह से अकस्मात निकल गया, मैं तेरा पिता हूँ, तू मेरा वंशज है, तेरे बिना मेरे जीवन का मतलब क्या होगा?''

नचिकेता ने कहा–''**नहीं! एक बार दान दी गई वस्तु को वापिस ग्रहण नहीं किया जाता। आपने मुझे दान दे दिया है, अब मेरे ऊपर अधिकार मृत्यु का है, अब मुझ पर आपका अधिकार नहीं रहा, और जो वस्तु आपकी नहीं है, उसको आप गोदी में भी नहीं ले सकते, उसके सिर पर हाथ भी नहीं फेर सकते, उसको बहका भी नहीं सकते, उसको बहला भी नहीं सकते। आप मुझे वापिस घसीटिए मत, दिये दान को वापिस मत लीजिए, इस समय मैं मृत्यु की धरोहर हूँ। अब तो मृत्यु जो भी आज्ञा देगी उस आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है, कर्त्तव्य है।**''

उद्दालक मौन हो गये, किंकर्त्तव्यविमूढ़ होने के कारण वे समझ नहीं पा रहे थे, कि उनके मुंह से ऐसा कैसे निकल गया? वे समझ नहीं पा रहे थे कि यह क्या हो रहा है?

–मैं तो गायों को दान में दे रहा था... और कहाँ पुत्र ही हाथ से निकल गया। मैंने क्रोध में कहा, तो पुत्र ने पालन किया... और वास्तव में जो दान में दे ही दिया, उस पर अब मेरा क्या हक हो सकता है? क्या अधिकार हो सकता है? मैंने तो उसे मृत्यु को सौंप दिया।

नचिकेता खड़ा हो जाता है, अन्तिम बार अपने पिता को प्रणाम करता है, उनसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता है–''मैं धन्यभागी हूं जो आप जैसे पिता मुझे मिले। यह मेरा सौभाग्य है, कि आपने मुझे मृत्यु को दान दिया, और मैं अवश्य ही मृत्यु देवता यमराज के पास जाऊंगा, उनके चरणों में बैठूंगा, जो भी वे देंगे, उसको स्वीकार करूंगा। यदि मेरे भाग्य में कुछ लिखा है, तो मैं उसे प्राप्त कर लूँगा। यदि मेरे भाग्य में कुछ नहीं लिखा तब भी यह प्राण, शरीर, चेतना सब यमराज की धरोहर है, वे जैसा भी चाहेंगे, मेरे प्राणों का उपयोग करेंगे।''

–और यह कहकर नचिकेता वहाँ से तुरन्त रवाना हो गया। उद्दालक टुकुर-टुकुर ताकते रहे,
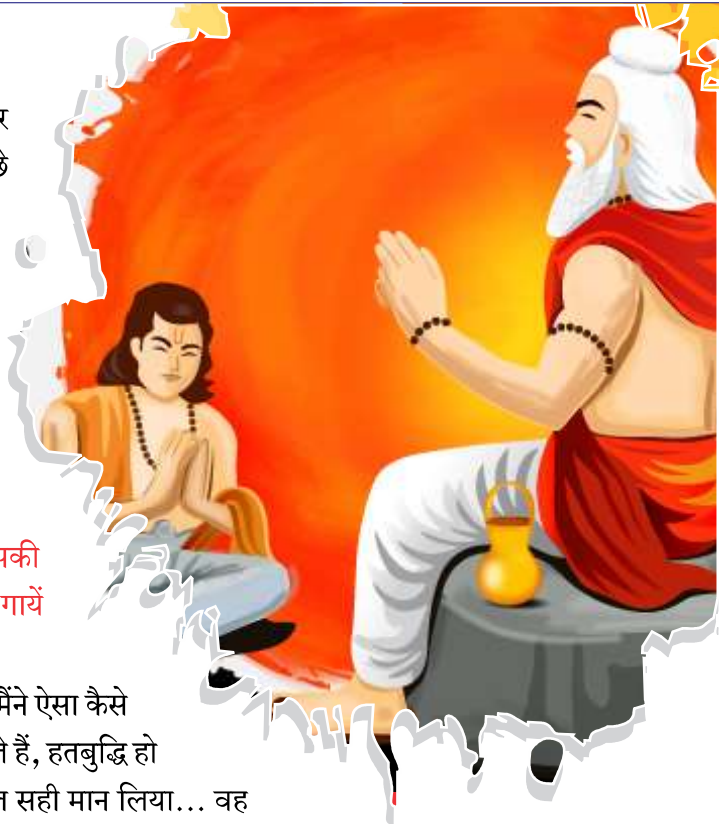
आँखों से आँसुओं की धारा बहती गई, हिचकियाँ भर गई, गला रुंध गया... मगर नचिकेता के हृदय पर कोई प्रभाव नहीं था, वह समझ रहा था—अब वह उद्दालक की धरोहर नहीं रहा, अब वह यमराज की पूंजी है, उसके शरीर व प्राणों पर यमराज का अधिकार है।

नचिकेता यमलोक पहुँचा और यम के द्वार पर खड़ा हो गया। पहली बार यह एक विशेष घटना घटी ब्रह्माण्ड में। इस घटना को समझने की जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति के द्वार पर मृत्यु आती है, पर यहाँ पर मनुष्य स्वयं मृत्यु के द्वार पर पहुँचा, बिल्कुल विपरीत स्थिति बनी। आज तक तो यह हुआ, कि यमराज स्वयं व्यक्ति को लेने के लिए आए, और यहाँ पहली बार यह बात हुई, कि व्यक्ति स्वयं यमराज के दरवाजे पर पहुँच गया!

—पर जो हिम्मत और हौसला रखता है, जो दृढ़ता रखता है, जो मौत के दरवाजे पर पहुंच जाता है, उसे वहाँ मौत नहीं मिलती। मौत तो कायरों को मिलती है, जो कायर दुबककर घर में घुस कर बैठ जाते हैं, मौत उनको दबोचती है, मगर जो स्वयं चलकर मौत के दरवाजे पर पहुंच जाते हैं, उन्हें मौत प्राप्त नहीं होती। यहाँ उपनिषद् के एक मूल मर्म की व्याख्या है।

—नचिकेता जाता है यम के द्वार पर, लेकिन वहाँ पर यम नहीं मिले... जो व्यक्ति मृत्यु के द्वार पर स्वयं चलकर पहुँचता है, और कहता है, मैं देखता हूँ—मृत्यु क्या है?

—मृत्यु का सौन्दर्य क्या है?

—मृत्यु मेरा क्या अहित कर सकती है?

—जो व्यक्ति इतना हौंसला और हिम्मत रखता है, मृत्यु उसके पास नहीं पहुंचती। मृत्यु के दरवाजे उसके लिए नहीं खुलते। उसके लिए अमृत्यु के दरवाजे खुलते हैं, जीवन के दरवाजे खुलते हैं, पूर्णता के दरवाजे खुलते हैं, क्योंकि मृत्यु कायरों को प्राप्त होती है—जो ज्ञानवान हैं, जो चेतनावान हैं, जो श्रेष्ठ हैं, उनको मृत्यु प्राप्त नहीं हो सकती है।

—और नचिकेता भी स्वयं चलकर मृत्यु के द्वार पर पहुंचा और मृत्यु वहाँ नहीं थी, मगर नचिकेता तो यह निश्चय करके गया था, कि यदि मैं मृत्यु के द्वार पर पहुँचूंगा, तो मैं तब तक वहाँ बैठा रहूँगा, जब तक मृत्यु मुझे मिलेगी नहीं, जब तक यमराज मुझे दिखाई नहीं देंगे, तब तक मैं वहाँ बैठा रहूँगा, और इसी दृढ़ संकल्प के साथ वह दरवाजे पर बैठ गया।

यमराज की पत्नी यमी बाहर आई, एक बालक को देखा—भूखा-प्यासा, उसने कहा—''तुम भोजन कर लो, जब यम आयेंगे तब मिल लेना।''

बालक ने कहा—''नहीं! यह मेरा शरीर, मेरी पूंजी तो यम की है, जब वे आज्ञा देंगे, तभी मैं भोजन करूंगा, अब अधिकार उनका है, जैसी आज्ञा देंगे, उसे पालन करना मेरा कर्त्तव्य और धर्म है। मैं तब तक यहाँ बैठा रहूंगा, जब तक कि वे यहाँ नहीं आ जाते।''

तीन दिन तक नचिकेता यम के द्वार पर भूखा-प्यासा बैठा रहा।

यहाँ पर उपनिषद् का एक और मर्म हमारे सामने स्पष्ट होता है। वह तीन दिनों तक भूखा रहा, और जो भूखा रह सकता है, उसको मृत्यु प्राप्त नहीं हो सकती।

तीन दिन—उन तीन गुणों के द्योतक हैं, जिन्हें तामसिक, राजसिक और सात्विक कहा गया है। लोग

आमतौर पर मानते हैं, कि सात्विक स्थिति श्रेष्ठ है, पर वास्तव में ऐसा है नहीं। इस उपनिषद् में बताया गया है, कि इन तीनों गुणों से परे जो स्थिति आती है, वह सर्वोत्तम है, योगियों के लिए उपयुक्त है... और भूख तो इन तीन गुणों की भी नहीं होनी चाहिए—उपवास ही जीवन का मूल धर्म, चिंतन और विशेषता है, क्योंकि उपवास के द्वारा जीवन की पूर्णता प्राप्त होती है। नचिकेता ने उपवास किया और उपवास की परम्परा वहीं से प्रारम्भ हुई।

जो जितना ही ज्यादा खाता है, वह उतनी ही जल्दी मरता है। जिसका आहार जितना कम होगा, वह उतना ही अधिक स्वस्थ और दीर्घायु होगा, इसलिए आहार पर नियंत्रण प्राप्त करना जरूरी है। इसलिए बुद्ध ने, महावीर ने उपवास की परम्परा को और आगे बढ़ाया, क्योंकि हमारा शरीर अपने-आप में एक अद्भुत, महत्वपूर्ण यंत्र है। यदि हम उपवास करते हैं, तो तीन, चार या पांच दिन तक तो भूख लगती है, मगर उसके बाद हमें भोजन की कोई इच्छा नहीं होती। हमारे अन्दर भोजन का जो संग्रह है, हमारे अन्दर जो बढ़ा हुआ मांस है, उस चर्बी को पिघलाकर शरीर अपनी सुरक्षा कर लेता है-यह शरीर की बहुत बड़ी विशेषता है।

-अन्य साधु, संत जहाँ वेदों की और पुराणों की पढ़ी-पढ़ाई बात करते हैं, जो कुछ उन्होंने पढ़ा, वह कहते हैं, वहीं मैंने जो कुछ जीवन में देखा है और अनुभव किया है, उसको कहता हूँ। यदि कोई मंत्र सही है और मैंने उसे अनुभव किया है, तभी मैं बताने की क्षमता रखता हूँ। इसलिए व्रत और उपवास का सारभूत अर्थ समझा रहा हूँ, तो उन अनुभवों के आधार पर ही समझा रहा हूँ, जिनको मैंने स्वयं परखा है।

कालचक्र तो घूमता ही रहता है, समय तो अपने-आप में परिवर्तित होता ही रहता है। कोई भी कार्य, कोई भी संकेत कम-से-कम गुरु की तरफ से तो अकारण होता ही नहीं। प्रत्येक शब्द का अपने-आप में एक महत्व होता है, प्रत्येक घटना का अपने-आप में एक सम्बन्ध होता है। गुरु ठीक समय पर ठीक कार्य करते ही हैं, न एक क्षण पहले, न एक क्षण बाद में। यह बात अलग है कि कोई किसी भी घटना को और कार्य को किस रूप में परखे, अनुभव करे, या विश्वास करे या नहीं करे, यह उस व्यक्ति की बात है।

गंगा नदी बह रही है, आप स्नान करें या नहीं करें, आप दूषित जल कहें, आप पवित्र जल कहें, आप उसका पानी पियें या नहीं पियें, यह आपकी बात है। गंगा नदी आपको नहीं कहेगी, कि आप मेरे जल में स्नान करें और पवित्र हों... आपकी विचारधारा और आपका चिंतन कैसा है... वह तो आप पर निर्भर है। कई लोग उसको प्रदूषण युक्त नदी कहते हैं, और उसके पास में भी नहीं खड़े होते। हरिद्वार के सैकड़ों-हजारों लोग नदी में मल विसर्जन करते हैं, उनका चिंतन वैसा है।

कुछ लोग जाते हैं, तो उस नदी में खड़े होकर स्नान करते हैं, बहुत शीतलता अनुभव होती है... यह तो अपने-अपने चिंतन की बात है। यह ज्ञान की सरिता भी अपने-आप में बह रही है, कोई उसको अनुभव करे या नहीं करे, समझे या नहीं समझे, लाभ उठाये या नहीं, वह तो विवेक पर आधारित है।

विवेकवान होना चाहिए, किन्तु विवेक का प्रयोग सृजनशील कार्यों के लिए ही करना चाहिए। विवेक का प्रयोग जब कुतर्क और विनाशपूर्ण कार्यों के लिए करते हैं, तब उसे बुद्धि शब्द से संबोधित करते हैं। किन्तु इसी विवेक का प्रयोग जब सृजन के लिए किया जाता है, तब विवेक को श्रद्धा शब्द से सम्बोधित करते हैं।
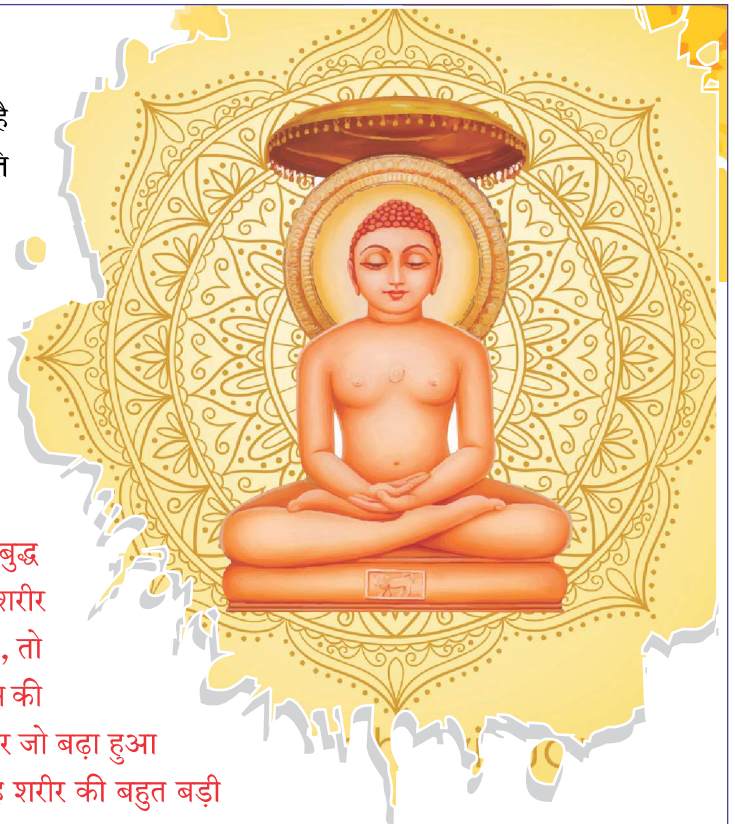
बुद्धि विभ्रम पैदा करती है, और कुमार्ग पर गतिशील करती है, वह सन्देह पैदा करती है, वह मनुष्य को भटकाती है, वह मानव को अहंकार देती है... और अहंकार अपने-आप में जीवन का नाश है, बुद्धि की अतिक्रमणता जीवन का पतन है। बुद्धि का पश्चिम के लोगों ने बहुत प्रयोग किया, तो उन्होंने आपको क्या दिया? उन्होंने आपको दी एड्स जैसी खतरनाक बीमारी, उन्होंने आपको अणु बम दिया, परमाणु बम दिया और उन्होंने आपको अशांति दी।

तीन 'अ' दिये, चौथी चीज नहीं दे सके वे... आनन्द नहीं दे सके, सुख नहीं दे सके, प्रसन्नता नहीं दे सके, हंसी नहीं दे सके, मुस्कराहट नहीं दे सके-मृत्यु दे सके... ईराक में हजारों लोगों को मार कर दिखा दिया... यह तो बहुत घटिया बात हुई-वापिस उनको जीवित कर दें, यह बहुत बड़ी बात होगी।

-ऐसा पश्चिमी सभ्यता नहीं कर सकती, बुद्धि नहीं कर सकती।

इसके विपरीत श्रद्धा अपने आप में उत्पन्न करने की क्रिया है, श्रद्धा जीवन देती है। मरे हुए व्यक्ति के मन में भी एक चिंतन होता है, कि मैं कुछ क्षण जिन्दा रहूँ, गुरु चरणों में बैठूं, देवताओं के चरणों में बैठूं, मैं गीता, रामायण का पाठ सुनूं, वह पांच मिनट और जिन्दा रहने का प्रयत्न करता है, श्रद्धा के अतिरेक में, श्रद्धा के विश्वास में।

हममें जो बुद्धि की अतिक्रमणता है, वह पश्चिम की देन है, हमारी देन नहीं है, हमारे पूर्वजों की देन भी नहीं है, वे इतने अधिक बुद्धि ग्रस्त नहीं थे, वे श्रद्धा करने वाले थे-गंगा नदी पर, देवताओं पर, हिमालय पर, गुरु पर, अपने पूर्वजों पर-एक श्रद्धा थी, एक आत्मविश्वास था, मां बाप के प्रति, सम्बन्धियों के प्रति और रिश्तेदारों के प्रति, उनमें एक प्रेम था... हमने उस प्रेम को वासना के अर्थ में लेकर एक घटिया और गन्दा शब्द बना दिया... लिखते हुए भी अब संकोच होने लगा है, कि मैं प्रेम शब्द लिखूं, कि नहीं लिखूं... मैं लिखूंगा और आपका सीधा माइण्ड वहीं जायेगा, कि प्रेम मीन्स प्यार, मीन्स... फ्लर्ट।

–यह आपका चिंतन है, मेरे मन में तो ऐसी कोई बात ही नहीं।

–"महावीर स्वामी" अपनी साधनाओं के माध्यम से अत्यन्त उच्चतम भावभूमि पर अवस्थित थे, उन्होंने तपस्या के माध्यम से साधना के उस स्तर को प्राप्त कर लिया था, जहाँ वे देह भाव से ऊपर उठ गये, एक गाँव में पहली बार महावीर स्वामी गए, तो वहाँ के लोगों ने सोचा-यह नग्न व्यक्ति कहाँ से आ गया? लोगों ने कई प्रकार की बातें भी की, पर महावीर स्वामी शांत रहे।

उनके एक शिष्य ने कहा-"स्वामी जी! बहुत अटपटा लग रहा है, गाँव के लोगों की बात सुनकर कि आप नग्न हैं।"

–"मैं नग्न...।"

महावीर बोले- "मैं तो नग्न हूँ ही नहीं, उनकी आँख में नंगापन है, इसलिए वे केवल यही देख रहे हैं, कि मैंने कपड़े नहीं पहने हैं... जबकि मुझे तो कुछ ऐसा पता ही नहीं पड़ रहा।"

इसी प्रकार यह आप पर निर्भर है, कि आप मेरे किसी शब्द का क्या अर्थ लगायें, वही अर्थ लगायेंगे,जो आपका दूषित मन कहेगा। आपके मन में छल है, आपके मन में पाप है, तो आप उल्टा सोचेंगे ही। किसी घड़े में अगर घास-फूस हो और मैं उसमें पानी डालूं, और पानी से घड़ा भरूं, तो पहले बाहर क्या निकलेगा?... घास-फूस निकलेगी, पहले शुद्ध जल तो नहीं निकलेगा। इसी तरह जब गुरु ज्ञान डालता है, तो शिष्य के अन्दर जो छल है,

मल है, द्वेष है, झूठ है, गुरु के प्रति अश्रद्धा है, वह सब निकलता है बाहर। आपके अन्दर जो है, घड़े के अन्दर जो है, वही तो निकलेगा बाहर।

मगर जीवन के क्रम में शुद्धता रहनी चाहिए। गुरु बार-बार यह बात दोहराता है, तो इसलिए कि जीवन में एक अनुकूलता पैदा हो, जीवन में सुख पैदा हो। तुम्हारे जीवन में वैभव भी हो, धन भी हो... गुरु ऐसा नहीं कहता कि तुम निर्धन बन जाओ।

महावीर स्वामी, बुद्ध किसी ने भी नहीं कहा, कि तुम निर्धन बन जाओ या भूखे रहो, उन्होंने यह अवश्य कहा-''त्याग और उपवास करो''... किन्तु बाद में उनके अनुयायियों ने, जो उनके चिंतन को समझ नहीं सके, उन्होंने यह कहा, कि व्रत रखो, भूखे रहो, जितने भूखे रहोगे, उतने ही ज्यादा धार्मिक कहलाओगे, और तभी से यह क्रम आरम्भ हुआ, कि भूखे रहना चाहिए।

उपवास तो अलग चीज है, उसका उद्देश्य भी सर्वथा अलग है, जो कि अपने-आप में एक गूढ़ चिंतन युक्त है।

मुझे कोई बताए तो सही, कि कहाँ ऐसा विधान लिखा हुआ है। कोई वेद, कोई पुराण, कोई उपनिषद्, कोई शास्त्र, कोई तो चीज मेरे सामने लाकर रखे, कि देखो इसमें व्रत-विधान लिखा हुआ है। व्रत जैसा कोई चिंतन है ही नहीं कहीं। पीछे जो ढोंगी पैदा हुए उनको कुछ आता ही नहीं था, कथा लिख दी, कि एक राजा था, राजा ने तीन दिन व्रत किया, उसके घर में पुत्र पैदा हो गया!

बस... ठान लिया, कि तीन दिन व्रत रखने से पैदा हो जाता है लड़का! अब तीन दिन भूखे रहने से ही बच्चे पैदा होते, तो फिर चाहिए ही क्या, पूरे संसार में सभी के ही पुत्र पैदा हो जाते, किसी ने लिख दिया आपने मान लिया।

आप पहले ग्यारह दिन भूखे रहिये, और अगर आपके संतान हो जाय, तो फिर लिखिए, वह तो होगा नहीं, बस आपको तो पोथी छापनी है और दो रुपये में बेचनी है, पोथी लिख दी... लिख दी और बिक गई, पोथी पढ़कर सब कुछ प्राप्त कर लेने की इच्छा रखने वाले मिल ही जायेंगे... ऐसा वास्तविक जीवन में नहीं होता।

इसलिए मैंने लिखा, कि भूखे मरना और निर्धन रहना अपने-आप में कोई अहमन्यता नहीं है, यह तुम्हारी कोई विशेषता नहीं है, तुम्हारी कायरता है, यह तुम्हारी बुजदिली है... क्योंकि तुम कुछ कर नहीं सकते, इसलिए तुमने भूखे रहने की क्रिया को बहुत महान मान लिया... महावीर स्वामी बहुत महान हैं, क्योंकि वे भूखे रहे थे। बुद्ध भी भूखे नहीं रहे थे, अपितु उन्होंने उपासना की, और ज्योंही सुजाता आई, उसने श्रद्धाभाव से खीर दी, तो उन्होंने सुजाता की भावना को ध्यान में रख कर खीर खा ली... खा लिया, ऐसा कहकर मैं उनकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ। मैं यह कह रहा हूँ कि व्रत रखने से उनको कैवल्य ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था, कैवल्य ज्ञान प्राप्त हुआ था-तपस्या के माध्यम से, चिंतन के माध्यम से, विचारों के माध्यम से... ज्ञान और भूख का कोई सम्बन्ध नहीं है।

जैनियों में एक प्रथा है, जब वे साठ, सत्तर साल के हो जाते हैं, तो वे संतारा लेते हैं। संतारा का अर्थ है-सांसारिक क्रियाओं से स्वयं को विरक्त कर देना, और पूरा ध्यान अपने इष्ट के प्रति लगा देना। बहुत कठिन तपस्या होती है, जिसे बहुत दृढ़निश्चय वाले व्यक्ति ही कर पाते हैं। जैन लोग बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के होते हैं, और अधिकांश व्यक्ति आधी उम्र पार करने के बाद अपना पूरा चिंतन महावीर स्वामी के प्रति ही रखते हैं। जब उनको यह अहसास होने लगता है, अब मृत्यु सन्निकट है, तो वे अन्न, जल सभी का

त्याग कर देते हैं। संतारा लेने के पीछे एक अत्यन्त दिव्य भावना मोक्ष प्राप्ति की क्रिया है।

– किन्तु युग परिवर्तन के साथ ही साथ लोग संतारा के मूल तथ्य को भूल गये और सिर्फ इतना ही याद रखा, कि जब व्यक्ति की मृत्यु होने वाली हो, तो उसे दाना-पानी कुछ भी नहीं देना चाहिए। इस तरह की भावना को देखकर सुनकर बहुत कष्ट होता है, कि हम आधुनिकता की अंधी दौड़ में, अपने मूल चिंतन से कितना भटक गये हैं।

मगर यह उनका धर्म है, उनका चिंतन है, मैं उनकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ, किन्तु यह बता रहा हूँ, कि लोगों ने कितना विकृत कर दिया है धर्म को। हम एक प्रकार से रूढ़िग्रस्त हो गए हैं।

शास्त्रों में धनहीन या भूखे रहने के लिए नहीं लिखा है। शास्त्रों में लिखा है–''**हम समृद्ध रहें, प्रत्येक भौतिक सुख सम्पदा से युक्त रहे।**'' वशिष्ट, विश्वामित्र, अत्रि, कणाद आदि जितने भी हमारे ऋषि हुए हैं, देवता हुए हैं, उनमें गरीब तो कोई भी नहीं था, मुझे बताइये, कि उनमें से कौन गरीब था? देवताओं के चेहरे, लाल सूर्ख हैं, इतने लाल सुर्ख चेहरे तुम्हारे तो हैं ही नहीं।

ऐसा इसलिए, क्योंकि तुममें मंत्रों के प्रति आस्था नहीं रही, जबकि मंत्र के माध्यम से ही जीवन में पूर्णता आ सकती है, अन्य किसी तरीके से नहीं आ सकती। अगर सिर्फ मेहनत-मजदूरी के माध्यम से या और किसी तरीके से पूर्णता आ सकती, तो कोई गरीब नहीं रहता। सैंकड़ों-हजारों लोग हैं, जो दिन भर मजदूरी करते हैं, पत्थर उठाते हैं, दिन भर मेहनत करते हैं, और शाम को बीस रुपये लेकर घर जाते हैं, पच्चीस रुपये लेकर घर जाते हैं।

जो भाग्यवान होते हैं, या जिन्होंने पूर्वजन्म में तपस्या की होती है या इस जन्म में तपस्या की है, वे ही पूर्ण बन सकते हैं। पूर्वजन्म के किये-कराये हिसाब तो हमें मिलते ही हैं–उस पूर्वजन्म के कर्मों का फल तो हमें इस जन्म में भोगना पड़ता ही है, अच्छा हो या बुरा। इसलिए हिरण्यकश्यपु के घर में प्रहलाद पैदा हो जाते हैं। हिरण्यकश्यपु जैसे राक्षस, सतानेवाले के घर में प्रहलाद जैसा भला, एकदम सात्विक व्यक्ति पैदा हो, तो जरूर उसने पूर्वजन्म में कुछ किया होगा, इस जन्म में तो कुछ किया ही नहीं था। हम आश्चर्य करते हैं, कि हम रोज चार घंटे पूजा करते हैं लक्ष्मी की, शिवजी की और ऐसे लोगों के घर में आ जाती है, जो रोज लोगों को गालियाँ देते हैं, देवताओं की कभी पूजा नहीं करते, हाथ नहीं जोड़ते, फिर भी उनके घर में पैसे बरसते हैं... ये क्या खेल है? हमें आश्चर्य होता है, क्योंकि हमने पिछले जीवन की कड़ी को नहीं देखा, पिछले जीवन की कड़ी और इस जीवन की कड़ी जुड़ी हुई है।

यह तो प्रसंगवश मैं व्रत और उपवास के अन्तर को समझा रहा था, मैं पुन: उसी मूल चिंतन पर आता हूँ।

– इसलिए नचिकेता ने यह निश्चय कर लिया, कि मैं उपवास के माधयम से यम को प्राप्त करूंगा, और यम से वह प्रश्न पूछूंगा, जिसके द्वारा जीवन का मर्म, जीवन का उद्देश्य, जीवन का लक्ष्य और जीवन का ध्येय स्पष्ट हो सके।

नचिकेता तीन दिन तक भूखा-प्यासा यम के द्वार पर बैठा रहा, मृत्यु के द्वार पर बैठा रहा। चौथे दिन यम आए तो उनकी पत्नी ने कहा–''एक ब्राह्मण पुत्र तीन दिनों से भूखा-प्यासा दरवाजे पर बैठा है, और हमारा कर्तव्य है, कि पहले अतिथि को भोजन कराएं, उसके बाद हम भोजन करें।''

अतिथि, जो बिना तिथि बताए घर आए। जो पहले से सूचना देकर आए, वह अतिथि नहीं है, जो पहले से बताकर आए और हम उनके घर आने की खुशी में सभी तैयारी करके रखें, यह जीवन की श्रेष्ठता नहीं है। श्रेष्ठता तो यह है, कि हम हर समय तैयार रहें।

यम बाहर आए, नचिकेता खड़ा हो गया। यम ने कहा–''मुझे ज्ञात हुआ है, कि तुम तीन दिन से भूखे-

प्यासे मेरे दरवाजे पर खड़े हों... पर क्यों खड़े हों?–क्या चाहते हो?–क्या इच्छा है?–तुम क्यों आए हो?–जिनकी आयु समाप्त हो जाती है, उन्हें मैं स्वयं लेने के लिए जाता हूँ। तुम खुद चलकर मेरे दरवाजे पर आए हो, यम के दरवाजे पर आए हो, मौत के दरवाजे पर आए हो, ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं।''

नचिकेता बोला–''मेरे पिता ने मुझे आपको सौंप दिया है, अब इस शरीर पर, मेरे मन पर, मेरे प्राणों पर, मेरी चेतना पर मेरा कोई अधिकार नहीं है, इन सब पर आपका अधिकार है। आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं उसका पालन करूंगा।''

यम ने कहा–''तुम्हारे यहाँ आने का क्या प्रयोजन है, क्या लक्ष्य है? तुम तीन दिन से मेरे दरवाजे पर भूखे-प्यासे बैठे रहे हो, इसलिए तुम तीन वरदान मांग लो, मैं तुम्हें तीनों वरदान दूंगा।''

नचिकेता ने उत्तर दिया–''आपने पूछा है, मैं किस प्रयोजन से आया हूँ?—मेरा क्या उद्देश्य है?—मेरा क्या लक्ष्य है?.... तो मेरा लक्ष्य यह है, कि मैं उस विद्या को जानना चाहता हूँ, जिसके माध्यम से हम (मनुष्य) मृत्यु से परे हो सकें, जिससे मृत्यु हमारा कुछ बिगाड़े नहीं, मृत्यु हमें लेने के लिए आये ही नहीं।

– ''क्या कोई ऐसी विद्या है?''

– ''क्या कोई ऐसी क्रिया है, जिसके द्वारा हम मृत्यु को जीत सकें?''

– ''मैं आप पर विजय प्राप्त कर सकूं, ऐसी कोई स्थिति है?''

– ''ऐसा कौन सा चिंतन है? ऐसी कौन सी साधना है?''

नचिकेता ने कहा–''यदि आप मुझे वरदान देने के लिए संकल्पबद्ध हैं, तो पहला वरदान यह दीजिए, कि मेरे पिता को कभी क्रोध न आए, वे शांत और सहज भाव से रहें और दिव्यता से जीवन यापन करें, उनके जीवन में सुख और सौभाग्य हो।''

...बड़ा अद्‌भुत वरदान था, अपने लिए कुछ नहीं मांगा। उसने मांगा, कि मेरे पिता अक्रोधी हों, क्योंकि अक्रोध से ही जीवन की पूर्णता पाई जा सकती है। जो क्रोध कर लेता है, वह बीच में ही समाप्त हो जाता है। क्रोध मृत्यु का ही दूसरा रूप है।

यमराज ने कहा–''तथास्तु! तुमने वास्तव में ही एक उत्तम कार्य सम्पन्न किया है।''

यहाँ उपनिषद् एक बहुत मर्म की बात कहता है। जो तुम पर क्रोध करता है, उस पर भी तुम अक्रोध करो। पिता ने नचिकेता को यम को दे दिया, क्रोध किया, फिर भी नचिकेता के मन में उनके प्रति क्षमा का भाव था, यही तो जीवन का मर्म है। उपनिषद् की यही तो व्याख्या है, कि जो हमारा अहित सोचे, जो हमें गाली दे, जो हमें मारने के लिए तैयार हो जाए, उस पर भी हम अक्रोध करें, करुणा की वृष्टि करते रहें, दया करें, उसके लिए भी हम अच्छा ही सोचें... नचिकेता ने ऐसा ही किया।

यम ने कहा–''तुम दूसरा वरदान भी मांग लो।''

नचिकेता ने कहा–''यदि आप मुझे वरदान देना चाहते हैं, तो मुझे अग्नि विद्या दीजिए। जिस विद्या के द्वारा मैं अपने जीवन को अग्निमय बना सकूं, क्योंकि उस अग्निमय स्वरूप द्वारा ही मेरे जीवन की पूर्णता सम्भव है।''

यहाँ पर भी उपनिषदकार ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही है। हमारा शरीर इसलिए ऊष्ण
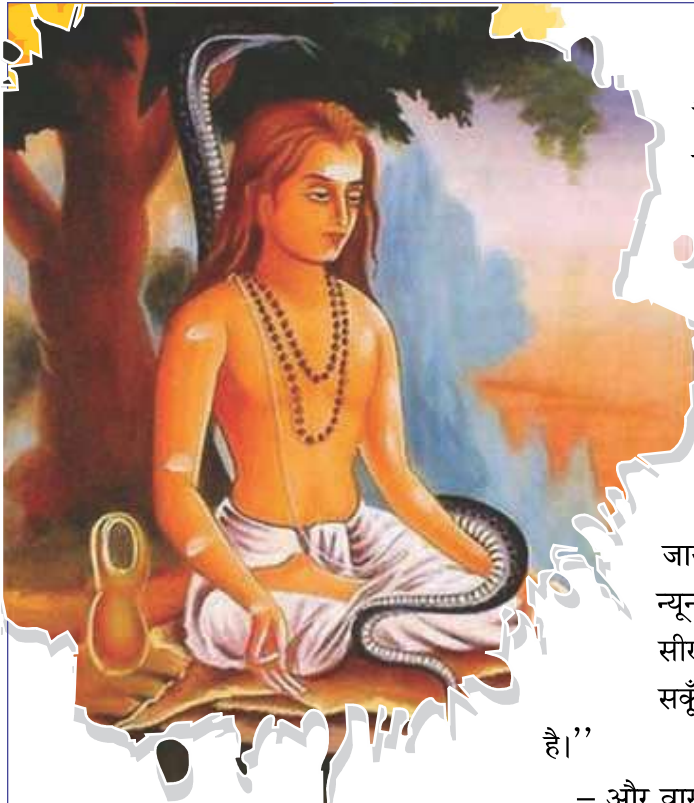
है, इसलिए स्वस्थ है, इसलिए जीवित है, कि वह अग्निमय है, अग्नि तत्व प्रधान है, और जिस समय अग्नि तत्व क्षीण होने लगता है, तब शरीर ठण्डा हो जाता है, शरीर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, जब तक शरीर में अग्नि है तब तक शरीर मृत्यु को प्राप्त हो नहीं सकता।

नचिकेता यहाँ एक बहुत मर्म की बात पूछ लेता है, वह कहता है–''मुझे वह अग्नि विद्या सिखाइए, जिसके द्वारा मैं निरन्तर अपने हृदय में, अपने शरीर में, अपने प्राणों में अग्नि को प्रज्वलित बनाए रखूं।''

नचिकेता ने कहा है, जिस अग्नि में मेरा क्रोध खत्म हो जाय, मेरा लोभ खत्म हो जाय, मेरा मोह खत्म हो जाय, मेरा अज्ञान खत्म हो जाय, मेरे जीवन की चिंताएं खत्म हो जायें, जिस अग्नि में जलकर मेरी सभी न्यूनताएँ भस्म हो जायं, मैं ऐसी अग्नि विद्या चाहता हूँ। मैं उस अग्नि विद्या को सीखना चाहता हूँ, जिसके द्वारा मैं तेजस्वी बन सकूं, उन मर्मों को स्पष्ट कर सकूँ, जिनके द्वारा पूरे संसार को एक ज्ञान, एक चेतना, एक श्रेष्ठता दी जा सकती है।''

– और वास्तव में ही अग्नि विद्या है, जिसके द्वारा निर्मित होता है–अत्यन्त शान्त, अत्यन्त सरल और ऐसा अद्वितीय व्यक्तित्व, जिसमें क्रोध नहीं हो, जिसमें छल नहीं हो, जिसमें पाप नहीं हो, जिसमें पाखण्ड नहीं हो, जिसमें व्यभिचार नहीं हो... और ऐसे ही तेजस्वी पुञ्ज में परिवर्तित होना जीवन की महानता है। महापुरुष बनने की यही तो परिभाषा है, छठी इंद्रिय जागरण का यही तो मार्ग है, इसी को तो देवत्व कहा जाता है, इसी को तो श्रेष्ठत्व कहा जाता है, इसी को तो ऋषित्व कहा जाता है।

नचिकेता ने दूसरा वरदान अत्यन्त महत्वपूर्ण मांगा, जिस अग्नि मंत्र के माध्यम से अन्दर की प्राणाग्नि को प्रज्वलित किया जा सकता है। यद्यपि कि मानव शरीर में जठराग्नि है, और जठराग्नि का तात्पर्य है–जो कुछ मैं भोजन करता हूँ, वह मैं पचा सकूँ, उसका रक्त बना सकूँ और उस रक्त से अपने पूरे शरीर को जीवित रख सकूं, यह तो जठराग्नि हुई... मगर प्राणों को जीवित बनाए रखने के लिए प्राणाग्नि की जरूरत है।

प्रत्येक के शरीर में प्राणाग्नि तो है, मगर वह बुझी हुई है, उमसें चेतना नहीं है, उसमें हलचल नहीं है। यह तो ठीक वैसा ही हुआ, जैसे कि हमारे घर में कोई वस्तु है, और हम उसका उपयोग जानते ही नहीं, यदि उपयोग नहीं जानते, तो उसका कोई प्रयोजन नहीं है। हमें यह भी तो पता नहीं है कि प्राणाग्नि को कैसे प्रज्वलित किया जाए और जब तक प्राणाग्नि प्रज्वलित नहीं होगी, तब तक साधना में सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होगी। जब तक सिद्धियाँ प्राप्त नहीं हो सकती हैं, तब तक व्यक्ति उस मृत्यु को नहीं जीत सकता। मृत्यु को जीतने के लिए सैकड़ों-हजारों वर्षों की आयु को प्राप्त करने के लिए पहली और अनिवार्य शर्त है, कि हम प्राणाग्नि को प्रज्वलित करें।

ॐ प्राणा: सतम् वै प्राण: त्वं पूर्वो हूं वदां तां पूर्व वद वदैं ह्रीं

ऋषि की वाणी वेद में स्पष्ट होती है—''अगर मेरे जीवन का सौभाग्य हो, तो मेरी प्राणाग्नि जो बुझी हुई है, प्रज्वलित हो जाय, उस प्राणाग्नि का प्रज्वलन करके मैं जीवन के उन रहस्यों को ढूंढ सकूं, जिनके माध्यम से जीवन की श्रेष्ठता प्राप्त हो सकती है। मैं वापिस यौवनवान बन सकूँ, चेतनावान बन सकूँ, मैं ऐसा बन सकूँ कि लोग मुझे देखें और एहसास कर सकें, कि वास्तव में पुरुषत्व क्या होता है, स्त्रीत्व क्या होता है? अपने आप में अद्वितीय सौन्दर्य प्राप्त कर सकूं–और यह सब दूसरों को सम्मोहित करने की कला प्राणाग्नि के माध्यम से ही सम्भव हो सकती है।''

जो वास्तव में ही अद्वितीय योगी और संन्यासी होते हैं, उनके चेहरे में एक विशेष प्रकार का प्रभाव होता है। उन्हें जो देखता है, वह सम्मोहित हो जाता है, मोहित हो जाता है, उस चेहरे को भूल नहीं पाता, आँखों

को भुला नहीं पाता, हर क्षण उनके मन में रहता है, कि जरूर ही उस व्यक्ति में ऐसा कुछ है, उसकी आवाज में जादू है... और यह आवाज में जादू चेहरे का आकर्षण प्राणाग्नि प्रज्वलित होने पर सम्भव है। लाखों-करोड़ों व्यक्तियों में से किसी एक की ही प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है, और वह प्रज्वलित हो सकती है—''गुरु चेतना के माध्यम से, गुरु ही उसे ज्ञान दे सकता है, क्योंकि इस अग्नि को प्रज्वलित करने की क्रिया केवल गुरु जानता है। वही जानता है, कि किन मंत्रों के माध्यम से, किस क्रिया के माध्यम से प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है।''

जब यह प्राणाग्नि प्रज्वलित होती है, तो स्वत: ही चेहरे पर एक चैतन्यता प्रकट हो जाती है। अपने-आप आँखों में एक लपक पैदा हो जाती है, एक चमक पैदा हो जाती है, एक तेजस्विता, एक प्रकाश-पुञ्ज पैदा हो जाता है।

यम ने कहा–''मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि तुम्हारी प्राणाग्नि प्रज्वलित हो और तुम मृत्यु से परे हो सको।''

यहाँ उपनिषद ने एक और गूढ़ बात कही, जिस पर विचार करना आवश्यक है। यम ने कहा—''मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, कि तेरी प्राणाग्नि प्रज्वलित हो।'' इसका तात्पर्य यह हुआ, कि प्राणाग्नि प्रज्वलित करने के लिए दो तरीके हैं—एक तरीका मुद्राओं, क्रियाओं और मंत्र के माध्यम से, दूसरा तरीका किसी अद्वितीय योगी के आशीर्वाद के माध्यम से भी। यदि गुरु चाहे.... जिसकी स्वयं की प्राणाग्नि प्रज्वलित है, जो अपने-आप में अतिविशिष्ट योगी हैं, जो सही अर्थों में गुरु हैं... तो वह आशीर्वाद देकर भी शिष्य की प्राणाग्नि प्रज्वलित कर सकता है, जैसा कि यम ने आशीर्वाद देकर नचिकेता की प्राणाग्नि प्रज्वलित की।

नचिकेता ने कोई मुद्रा नहीं सीखी, उसने किसी मंत्र का उच्चारण नहीं किया, मगर फिर भी उसकी प्राणाग्नि प्रज्वलित हुई, इसलिए क्योंकि यम ने उसको आशीर्वाद दिया... और आशीर्वाद देने का तात्पर्य है, कि मेरे पास जो प्राणाग्नि प्रज्वलित है, उसमें से ही कुछ भाग मैं तुम्हें देता हूँ, जिससे कि तुम्हारी प्राणाग्नि प्रज्वलित हो। जिस प्रकार से एक दीप से दूसरा दीप जल सकता है, ठीक उसी प्रकार से अगर शिष्य, गुरु के पास आ जाए, तो उसके ज्ञान का बुझा हुआ दिया भी जल सकता है, प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है–और दूसरी क्रिया मंत्र के माध्यम से भी, उन सौ बीजोद्भवों का, सौ क्रियाओं के माध्यम से उच्चारण करें, लोम गति से और विलोम गति से भी। इस प्रकार निरन्तर जप करने से भी प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है। यद्यपि यह रास्ता बड़ा है, लम्बा है, मगर फिर भी इस रास्ते पर चलकर कई योगियों, संन्यासियों और ऋषियों ने प्राणाग्नि प्रज्वलित की है... और कर सकते हैं।

– ''इन दोनों के अतिरिक्त एक विकल्प भी है, जहाँ गुरु के आशीर्वाद के माध्यम से, प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है, वहीं गुरु की निकटता प्राप्त कर भी प्राणाग्नि प्रज्वलित हो सकती है।''

– क्योंकि गुरु तो एक जलता हुआ दिया है, जो रोशनी बिखेर रहा है, और तुम उस दीपक की भांति हो, जिसमें तेल तो भरा हुआ है, मगर उसमें रोशनी नहीं है, यदि इन दोनों के बीच में एक सूत भर भी अन्तर रह गया, तब भी दिया नहीं जलेगा। दिया जलने के लिए यह जरूरी है, कि वह दिया उस दिये से मिल जाय... दोनों के एक-दूसरे से मिलने की क्रिया से दिया जलेगा। दिया जलने का मतलब है, **शिष्य** की प्राणाग्नि प्रज्वलित हो जाती है, वह अपने आप में एक अद्वितीय योगी बन अमृत्युवान हो जाता है, वह पूर्ण स्वस्थ रह सकता है, तन्दुरुस्त रह सकता है, दीर्घायु हो सकता है और मृत्यु से परे जा सकता है।

जहाँ मृत्यु नहीं, वहां पीड़ा भी नहीं है, परेशानी नहीं है, बाधाएं नहीं हैं, और जब हम मृत्यु से भयभीत नहीं हैं, तो फिर हमें किसी बात की चिन्ता भी नहीं हो सकती, क्योंकि पीड़ा, बीमारियां, कष्ट और वृद्धता मृत्यु के संकेत हैं, मृत्यु के आने की पहली थरथराहट हैं। जब रोग आ रहे हैं, तो समझ लेना चाहिए, कि अब मृत्यु पास आ रही है, वह पहली दस्तक है, जब मृत्यु के आने की स्थिति निर्मित होती है, तो वह सौ बार दरवाजे पर

ठकठक करती है, कभी तकलीफ के द्वारा, कभी बीमारी के द्वारा, कभी हाथ में दर्द है, तो कभी दांत गिर रहे हैं–ये सारी की सारी स्थितियाँ बार-बार दरवाजे पर ठोकती हुई, दरवाजे पर ठक-ठक करती हुई। जब ब्लड प्रेशर होता है, तो यह पहली आवाज होती है, कि मैं आ रही हूँ, जब आँखों की रोशनी कम होती है, तो वह दोबारा कहती है, कि अब मैं आ रही हूँ–यह अलग बात है, कि हम सुने नहीं, मौत तो लगातार आवाज देती रहती है।

–मगर जब प्राणाग्नि प्रज्वलित हो जाती है, तो उस प्राणाग्नि में यह बुढ़ापा स्वत: ही समाप्त हो जाता है, वह अपने-आप में जल जाता है, उस व्यक्ति को न पीड़ा रहती है, न बुढ़ापे का कष्ट रहता है, वह मृत्यु से परे हो जाता है–नचिकेता के साथ भी ऐसा ही हुआ।

यम ने कहा–''अब तू दीर्घायु होगा, मृत्यु तेरे अनुकूल रहेगी... तू चाहेगा, तो मृत्यु आयेगी, तू चाहेगा, तो मृत्यु नहीं आयेगी... मृत्यु नहीं आयेगी, तो फिर रोग भी नहीं आयेगा, जब मृत्यु नहीं आयेगी, तो फिर बुढ़ापा भी नहीं आयेगा।''

नचिकेता ने कहा–''आपने मुझे तीसरा वरदान मांगने को कहा, और मैं आपकी आज्ञा का पालन करते हुए तीसरा वरदान मांग रहा हूँ।''–''आप मुझे ब्रह्म विद्या का उपदेश दें। जिसके माध्यम से व्यक्ति पूर्ण ब्रह्ममय बन जाता है, पूर्ण ब्रह्माण्ड युक्त बन जाता है, और अहं ब्रह्मास्मि शब्द से स्वयं को सम्बोधित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।''

यम ने कहा–''तूने तीसरा वरदान बड़ा कठिन मांगा है। मैं तुझे कहता हूँ, कि तू इस तीसरे वरदान का मांगने की हठ छोड़ दे। लाखों गायें तुम्हें दे देता हूँ, मगर तू यह वरदान मत मांग।''

नचिकेता ने कहा–''जो मैंने मांगा है, मैं वही प्राप्त करना चाहता हूँ।''

यम फिर से कहते हैं–''मैं तुम्हे स्वर्ण का भण्डार देता हूँ।''

नचिकेता ने कहा–''मैं इस स्वर्ण ढेर को लेकर क्या करूंगा? वह तो समाप्त हो जायेगा, वह मेरे शरीर के साथ ही अपने-आप में व्यर्थ हो जायेगा, मैं तो उस ब्रह्म विद्या को जानना चाहता हूँ, जो अमृतत्व है, जो अमृत कुण्ड है, जो अपने-आप में सिद्धाश्रम है, पूर्णता है, श्रेष्ठता है।''

यम एक बार फिर उसको प्रलोभन देते हैं–''नचिकेता! तूं सुन्दर स्त्रियों को मांग ले, मैं तुझे असंख्य सुन्दर स्त्रियां देता हूँ, जिनका तू भोग कर सकता है, मगर इस विद्या को मत प्राप्त कर, यह वरदान मत मांग।''

पर नचिकेता कहता है—''जो चीज मुझे चाहिए, अगर वह ही प्राप्त नहीं हो, तो मैं हजारों-हजारों सुन्दर स्त्रियों को लेकर भी क्या कर लूँगा, उसका क्या प्रयोजन होगा?''

यहाँ उपनिषदकार एक नवीन गूढ़ रहस्य को स्पष्ट करता है, कि इस उच्चकोटि के ज्ञान, अहंब्रह्मस्मि के रहस्य सूत्र को प्रदान करने के पूर्व गुरु कई पासे फेंकता है, गुरु प्रलोभन देता है–यह विद्या तेरे किसी काम की नहीं है, तू इस विद्या को प्राप्त मत कर, मैं तुझे लक्ष्मी साधना दे देता हूँ, मैं तुझे तारा साधना दे रहा हूँ, मैं तुझे अप्सरा साधना दे रहा हूँ, उस अप्सरा साधना के माध्यम से तू जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकेगा, अप्सरा हर क्षण तेरे पास रहेगी, लक्ष्मी आबद्ध क्रिया दे रहा हूँ, जिसके माध्यम से लक्ष्मी चौबीस घंटे तेरे पास रहेगी और धन की वर्षा होती रहेगी।

गुरु भी टटोलता है–और गुरु को टटोलना भी चाहिए, यह जरूरी है गुरु के लिए। यदि गुरु ऐसा नहीं करे, तो एक अपात्र को यह विद्या मिल जायेगी। मगर जो योग्य शिष्य हैं, कर्मठ शिष्य हैं, वे इन प्रलोभनों में नहीं आते, उनका तो एक ही लक्ष्य होता है, एक ही उद्देश्य होता है, और वे मात्र अपने लक्ष्य

के विषय में ही सोचते हैं।

नचिकेता यदि चाहता, तो बीच में रुक जाता और प्रलोभनों में आ जाता। वह स्वर्ण ढेर लेकर शांत हो जाता, सुन्दर स्त्रियों को प्राप्त करके रुक जाता। गुरु के द्वारा प्रदत्त प्रलोभन से शिष्य यदि बीच में ठहर जाता है, तो समझ लेना चाहिए, कि यह शिष्य तो अपात्र है, अयोग्य है। यह शिष्य ब्रह्म विद्या प्राप्त करने का अभिलाषी नहीं है, ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने की इसमें ललक नहीं है, इसमें एक जीवट शक्ति नहीं है।

ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने का तात्पर्य है, कि व्यक्ति अपने-आप में कर्मठ हो, योग्य हो, साहसी हो, प्रलोभनों से परे हो... और यदि ब्रह्म विद्या को प्राप्त करने के बाद प्रलोभनों में घिर जाय, तो उससे घटिया शिष्य तो कोई बन ही नहीं सकता... ब्रह्म विद्या को जानने वाला शिष्य यदि उन स्त्रियों के चक्कर में पड़ जाय, तो बहुत बड़ा अहित हो जाएगा, इसीलिए शिष्य की परीक्षा लेना जरूरी होता है, उसको अन्य कोई तरीकों से चेतना देना जरूरी होता है।

गुरु तो एक पासा फेंकता है, एक चालाकी बरतता है, एक प्रलोभन देता है... और गुरु प्रलोभन देता ही है।

पर नचिकेता दृढ़ निश्चयी रहा और बोला–''अगर आप मुझे दें, तो ब्रह्म विद्या ही दें, क्योंकि मैं तो ब्रह्म विद्या ही प्राप्त करना चाहता हूँ।''

यम बहुत प्रसन्न होते हैं, और ब्रह्म विद्या देते हैं–

''सः ब्रह्म सः पूर्णं सः चिन्तयं सः अद्वितीयं सः सोहं सः पूर्वः सः चिन्त्यं''

''तू अपने आप में पूर्ण विरक्त बन, तू अपने आप में पूर्ण निस्पृह बन, इस गृहस्थ में रहता हुआ भी तू गृहस्थी मत बन, इस संसार में रहकर भी तू संसारी मत बन, जीवन में पूर्णता से ब्रह्मत्वमय बन। तू मेरे पास आया है, तूने मुझे गुरु बनाया है, मुझे अपने-आप को सौंपा है, मैं तुझे अपने आशीर्वाद के द्वारा ब्रह्म विद्या दे रहा हूँ।''

आशीर्वाद के द्वारा भी, मंत्र के द्वारा भी–शिष्य दोनों तरीकों से गुरु के द्वारा उस ब्रह्म विद्या को जान सकता है। गुरु यदि प्रसन्न हो जाते हैं, तो उसे आशीर्वाद देकर भी ब्रह्म विद्या में पूर्ण सिद्ध कर सकते हैं, ब्रह्ममय बना सकते हैं, पूर्ण ब्रह्मर्षि बना सकते हैं।

यम ने ऐसा ही किया, नचिकेता के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और उसे अपने वरदान द्वारा पूर्ण ब्रह्मर्षि बनाया, उसे मृत्यु से परे पहुँचने की कला सिखाई, उसे मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की विद्या सिखाई, उसे सिद्धाश्रम की प्राप्ति कराई।

जहाँ मृत्यु है ही नहीं, जहाँ आनन्द ही आनन्द है, जहाँ श्रेष्ठता है, जहाँ पूर्णता है, अपने-आप में परिपूर्णता है–उसी को तो सिद्धाश्रम कहते हैं। सिद्धाश्रम का तो तात्पर्य ही यह है, कि जहाँ मृत्यु नहीं है, जहाँ किसी प्रकार की वृद्धता नहीं है, जहाँ किसी प्रकार की कमी नहीं है, जो चीज चाहें, वह उसी क्षण प्राप्त हो जाय, हम अपने-आप में तेजस्वी पुष्ठज बन सकें, हमारे ललाट पर भाल पर एक अत्यन्त तेजस्विता और चैतन्यता आ सके, हम पूर्णरूप से ब्रह्मर्षि बन सकें, ब्रह्ममय बन सकें... और ब्रह्ममय बनना, सिद्धाश्रम में जाना श्रेष्ठ गुरु के द्वारा ही सम्भव है, श्रेष्ठ गुरु के द्वारा ही ब्रह्म विद्या को जानने की क्रिया सम्भव है।

जो शिष्य प्रलोभनों से परे हो जाता है, जो अपने-आप को इष्ट, अपने गुरु के चरणों में समर्पित कर देता है, जो अपनी देह को, अपने प्राणों को गुरु के चरणों में समर्पित करता हुआ इस विद्या को जानने का अभीप्सित बनता है, जो निश्चय कर लेता है, कि मुझे यह विद्या जाननी ही है, तो वह दोनों तरीकों से जान सकता है।

पहला तरीका है–उस मंत्र को सीख कर, जो ब्रह्म विद्या से सम्बन्धित है, ब्रह्म दीक्षा को प्राप्त करके, पूरे शरीर की चैतन्यता प्राप्त कर, उन क्रियाओं के माध्यम से, मुद्राओं के माध्यम से, उस मंत्र को निरन्तर जप करने

यह जीवन की श्रेष्ठतम विद्या है, अद्वितीय विद्या है। इस विद्या की तुलना इस विश्व में हो ही नहीं सकती। इसके द्वारा वह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है, सारे वेद, पुराण उसे कंठस्थ हो जाते हैं, वह जीवन में जिस वस्तु की कामना रखता है, वह वस्तु उसे प्राप्त हो जाती है, फिर वह अत्यन्त भोगी होते हुए भी योगी बना रहता है... इसीलिए तो श्रीकृष्ण को सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगेश्वर कहा गया....

फिर वह भोग में योग की कला को जान लेता है, फिर वह योग में भी भोग को देख लेता है, वह अपने-आप में निस्पृह होता है, जैसे कमल जल में रहते हुए भी निर्लिप्त रहता है, ठीक उसी प्रकार से वह संसार में निर्लिप्त रहता है... और फिर अहं ब्रह्मस्मि वाक्य को उद्घोषित करने का अधिकारी बन जाता है, क्योंकि वह ब्रह्म से साक्षात्कार कर, उससे एकाकार हो चुका है, उसने ब्रह्म को अपने अन्दर उतार लिया है, अपने-आप में रचा पचा लिया है।

– और दूसरा तरीका है, कि विद्या आशीर्वाद के व्दारा भी सम्भव है, अर्थात् गुरु के व्दारा आशीर्वाद प्राप्त करके भी वह पूर्ण ब्रह्मर्षि बन सकता है–और प्राप्त कर सकता है, जीवन का असली आनन्द, चैतन्यता, मस्ती, खुमारी और अमरत्व।

दोनों माध्यमों से पूर्णता सम्भव है। दो भिन्न मार्ग हैं, परन्तु एक ही सार तत्त्व दोनों को जोड़ता है, और वह यह है, कि दोनों क्रियाएं गुरु ही सम्पन्न कर सकते हैं–मंत्र का ज्ञान भी गुरु के मुख से प्राप्त हुआ है तो फलीभूत होता है... और आशीर्वाद भी गुरु ही दे सकते हैं, तभी गुरु की अनन्त महिमा को हर वेद, हर उपनिषद, हर योगी, हर ऋषि, हर संन्यासी ने एकमत हो स्वीकारा है....

गुरु ब्रह्मा गुरु र्विष्णुः गुरु र्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

पूज्यपाद सद्गुरूदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान' पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

नारायण मंत्र साधना विज्ञान

मासिक पत्रिका का वार्षिक मेम्बरशिप ऑफर

सिद्धि प्रदायक तारा यंत्र

'साधनकानां सुखं कर्त्रीं सर्व लोक भयंकरीम्'

अर्थात् भगवती तारा तीनों लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं, साधकों को सुख देने वाली और सर्व लोक भयंकारी हैं। तारा की साधना की श्रेष्ठता और अनिवार्यता का समर्थन वशिष्ठ, विश्वामित्र, रावण, गुरु गोरखनाथ व अनेक ऋषि-मुनियों ने एक स्वर में किया है। संकेत चन्द्रोदय में शंकराचार्य ने तारा साधना को ही जीवन का प्रमुख आधार बताया है। कुबेर भी भगवती तारा की साधना से ही अतुलनीय भण्डार को प्राप्त कर सका। तारा साधना अत्यंत ही प्राचीन विद्या है और महाविद्या साधना होने के बावजूद भी शीघ्र सिद्ध होने वाली है, इसी कारण साधकों को मध्य तारा यंत्र के प्रति आकर्षण विशेष रूप से रहता है।

वर्तमान समय में ऐश्वर्य और आर्थिक सुदृढ़ता ही सफलता का मापदण्ड है,

पुण्य कार्य करने के लिए भी धन की आवश्यकता है ही,
इसीलिये अर्थ को शास्त्रों में पुरुषार्थ कहा गया है।

साधकों के हितार्थ शुभ मुहूर्त में कुछ ऐसे यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा कराई गई है, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने घर में स्थापित कर कुछ दिनों में ही इसके प्रभाव को अनुभव कर सकता है, अपने जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य को साकार होते, आय के नये स्रोत देख सकता है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/-, Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

8890543002
0291 2432209, 0291 2432010, 0291 2433623, 0291 7960039

नारायण मंत्र साधना विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001

अष्ट लक्ष्मी जयंती
03.09.22

अष्ट लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग 03.09.22 से या किसी भी बुधवार से प्रारंभ किया जा सकता है।

इसमें नित्य 1 माला का जप 11 दिनों तक करना है, तो निश्चय ही साधक को धन, धान्य कुटुम्ब-सुख, जमीन-सुख, व्यापार वृद्धि, कीर्ति, सम्मान एवं भाग्योदय संभव होता है।

इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में ''ताम्र पत्र पर अंकित मंत्र सिद्ध अष्ट लक्ष्मी यंत्र'' स्थापित करना चाहिए तथा यंत्र एवं चित्र का पूजन कुंकुम, केसर, अबीर, गुलाल, मौली, चावल, पंचामृत, गंगाजल, सुपारी, इत्र, दूध के प्रसाद से सम्पन्न करना चाहिए।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद। ॐ श्रीं दिव्यानुभावे प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं उज्जवले प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं उज्जवल रूपे प्रसीद प्रसीद। ॐ ह्रीं श्रीं ज्योतिर्मयि प्रसीद। ॐ श्रीं ज्योतिरूपधरे प्रसीद प्रसीद। मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवन कुरु कुरु। ॐ अमृत कुम्भे प्रसीद प्रसीद। ॐ अमृतकुम्भ रूपे प्रसीद प्रसीद मम वांछित देहि देहि। ॐ ऋद्धि दे प्रसीद प्रसीद ॐ समृद्धि दे प्रसीद प्रसीद। ॐ महालक्ष्मी प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं लोकमात: प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं लोक जननि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं अमृत संजीवनी प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं शांत लहरि प्रसीद प्रसीद। श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ॐ श्रीं शांतप्रशांतलहरि प्रसीद प्रसीद। ॐ श्रीं ग्लौ श्रीं नम:। ॐ ह्रीं सर्वशत्रु दमनि सर्व शत्रुन् निवारय निवारय, विघ्नं छिन्धि छिन्धि, प्रसीद। धरणेन्द्रपद्मावति मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद।

इस मंत्र का जप कमल गट्टे की माला से सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री - 600/-

काली जयंती

प्रमुख महाविद्या साधना

19.08.22

सिद्धाश्रम पंचांग

महाकाली

प्रत्यक्ष दर्शन साधना

दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ, महाकाली कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फलदायक
एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक है,
जब जीवन के प्रबल पुण्योदय जाग्रत होते हैं, तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता महिषासुर मर्दिनी,
वाक्सिद्धि प्रदायक महाकाली की साधना में रत हो सकता है।

जो साधक इस साधना एवं सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, भोग और
मोक्ष दोनों में समान रूप से सम्पन्नता प्राप्त कर वह जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त कर लेता है।
काली जयंती इस साधना को सम्पन्न करने का श्रेष्ठतम मुहूर्त है, जो कि साधकों के लिए वरदान स्वरूप है।
योगीराज कालीदासानन्द द्वारा प्रस्तुत यह लेख पत्रिका पाठकों के लिए दीप स्तम्भ है।

कलियुग में काली साधना के समान अन्य कोई साधना नहीं कही जा सकती, दुर्भाग्यशील साधक ही अपने जीवन में ऐसी साधना सम्पन्न नहीं कर पाते।''—**महर्षि वशिष्ठ**

''यदि जीवन में अवसर मिल जाय तो प्रयत्न करके भी काली साधना सम्पन्न करनी चाहिए, यदि साधक ऐसा अवसर आने पर चूक जाता है तो उसके समान कोई दुर्भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता है।''—**गुरु गोरखनाथ**

''मैंने साधनाएं तो हजारों सिद्ध की हैं, परन्तु काली साधना के समान और कोई साधना नहीं। वचन सिद्धि एवं सफलता के लिए यह अद्वितीय साधना है।''—**त्रिजटा अघोरी**

''लाख काम छोड़कर के भी काली का अर्चन, पूजन और साधना करनी चाहिए, क्योंकि यह जीवन में पूर्णता प्रदान करने वाली साधना है।''—**योगीराज भवनिधि स्वामी**

हजारों-लाखों विचारों में से मैंने कुछ विचार यहाँ प्रस्तुत किये हैं इन विचारों से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह साधना जीवन के लिए कितनी अधिक मूल्यवान, सशक्त, प्राणवान और तेजस्वी है।

संसार में सैकड़ों हजारों साधनाएं हैं, परन्तु हमारे महर्षियों ने इन सभी साधनाओं में दस महाविद्याओं की साधना को प्रमुखता और महत्व दिया है, जो साधक अपने जीवन में जितनी ही ज्यादा महाविद्या साधनाएं सम्पन्न करता है, वह उतना ही श्रेष्ठ साधक बन सकता है, परन्तु बिना भाग्य के इस प्रकार की महत्वपूर्ण साधनाओं को सम्पन्न करने का अवसर नहीं मिलता।

दस महाविद्याओं में भी काली महाविद्या प्रमुख, महत्वपूर्ण और अद्वितीय कही गई है, क्योंकि यह त्रिवर्गात्मक महादेवियों—महालक्ष्मी, महासरस्वती, महाकाली में सर्वप्रमुख है, शास्त्रों के अनुसार मात्र काली की साधना से ही जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति और मनोवांछित फल प्राप्ति सम्भव होती है, इस सम्बन्ध में यदि हम साधनात्मक ग्रन्थों को टटोल कर देखें, तो लगभग सभी योगियों, संन्यासियों, विचारकों, साधकों और महर्षियों ने एक स्वर से काली साधना को प्रमुखता और महत्व प्रदान किया है। योगियों के उपरोक्त विचार इस बात के साक्षी हैं

महत्व

दस महाविद्याओं में प्रमुख और शीघ्र फलदायक होने के कारण पिछले हजारों वर्षों से हजारों-हजारों साधक इस साधना को सम्पन्न करते आए हैं, और उनके मन में यह तीव्र लालसा रहती है कि अवसर मिलने पर किसी प्रकार से काली साधना सम्पन्न कर ली जाय, इस साधना से अगणित लाभ है, फिर भी जिन साधकों ने काली साधना को सिद्ध किया है, उनके अनुसार निम्न तथ्य तो साधना सम्पन्न करते ही प्राप्त हो जाते हैं।

अथ कालीमन्वक्ष्ये सद्योवाक्सिद्धिपायकान्।
आरावितैर्य: सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुवि।।

1. अर्थात् काली साधना से तुरन्त वाक् सिद्धि (जो भी कहा जाय वह सिद्ध हो जाय) तथा इस लोक में समस्त मनोवांछित फल प्राप्त करने में साधक सक्षम हो जाता है।
2. इस साधना के सिद्ध होने पर व्यक्ति समस्त रोगों से मुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ, सबल एवं सक्षम होता है।
3. यह साधना जीवन के समस्त भोगों को दिलाने में समर्थ है, साथ ही काली साधना से मृत्यु के उपरांत पूर्ण मोक्ष प्राप्ति होती है।
4. शत्रुओं का मान मर्दन करने, उन पर विजय पाने, मुकदमे में सफलता और पूर्ण सुरक्षा के लिए इससे बढ़कर और कोई साधना नहीं।
5. इस साधना से दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या सिद्ध होती है, जिससे सिद्धाश्रम जाने का मार्ग प्रशस्त होता है।
6. इस साधना की सिद्धि से तुरन्त आर्थिक लाभ और प्रबल पुरुषार्थ प्राप्ति सम्भव होती है।
7. ''काली पुत्रो फलप्रद:'' के अनुसार काली साधना योग्य पुत्र देने व पुत्र की उन्नति, उसकी सुरक्षा और उसे पूर्ण आयु प्रदान करने के लिए श्रेष्ठ साधना कही गई है।

वस्तुत: काली साधना को संसार के श्रेष्ठ साधकों और विद्वानों ने अद्भुत और शीघ्र सिद्धि देने वाली साधना कहा है, इस साधना से साधक जीवन के सारे अभाव दूर कर अपने भाग्य को बनाता हुआ पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

समय

काली साधना हेतु सर्वश्रेष्ठ समय काली जयंती है। साधकों को चाहिए कि वे इस महत्वपूर्ण मुहूर्त पर इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न करें।

जो साधक अपने गृहस्थ जीवन में सभी प्रकार से उन्नति चाहते हैं, जो निष्काम भाव से काली की साधना सम्पन्न कर साक्षात् दर्शन करना चाहते हैं, जो अपने जीवन में भोग और मोक्ष दोनों का समान रूप से फल प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें इस समय का पूरा-पूरा लाभ उठाना चाहिए और विशेषकर इस अवसर पर तो अवश्य ही महाकाली साधना सम्पन्न करनी

चाहिए, जिस से कि वे अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता, श्रेष्ठता और अपने भाग्य को मनोनुकूल बना सके।

सरल साधना

यद्यपि महाकाली साधना महाविद्या साधना है, और महाशक्ति की आधारभूत महाविद्या है, फिर भी यह साधना अन्य किसी साधनाओं की अपेक्षा सुगम और सरल है, साथ ही साथ यह सौम्य साधना है, इसका कोई विपरीत प्रभाव या परिणाम प्राप्त नहीं होता।

सही अर्थों में देखा जाय तो महाकाली साधना सरल और गृहस्थों के करने के लिए ही है, यह मन्त्रात्मक साधना होने के कारण अनुकूल, शीघ्र फल देने वाली और श्रेष्ठ साधना है, इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, ऐसी साधना कोई भी गृहस्थ कर सकता है, योगी और संन्यासी कर सकता है, जो थोड़ा बहुत भी पढ़ा-लिखा है, अपने जीवन के अभावों को दूर करना चाहता है, उसके लिए यह स्वर्णिम अवसर है, कि वे इस काली जयंती पर महाकाली साधना सम्पन्न करे।

प्रत्यक्ष दर्शन साधना

सबसे बड़ी बात यह है, कि काली जयंती पर महाकाली साधना करने पर इसके प्रत्यक्ष दर्शन सम्भव होते हैं, आवश्यकता है पूर्ण भावपूर्ण हृदय से मां को पुकारने की। यदि साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ इस साधना को सम्पन्न करे। कई साधकों ने इस बात का अनुभव किया है, कि श्रद्धा और विश्वास के साथ यह साधना सम्पन्न होते-होते दर्शन या किसी न किसी प्रकार का अनुभव अवश्य होता है, मेरी राय में यह कलियुग में हम लोगों का सौभाग्य है, कि इस प्रकार की साधना हमारे बीच है, जिससे कि हम भगवती काली के प्रत्यक्ष दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर सकें।

शीघ्र प्रभाव

साधनात्मक दृष्टि से यह साधना यदि पूर्ण मनोनुकूल अवस्था में सम्पन्न की जाय तो इसके शुभ एवं शीघ्र प्रभाव प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं, इसके लिए मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त महाकाली यन्त्र और पूर्ण चैतन्य महाकाली चित्र सामने रखकर साधना करनी चाहिए, इसके अभाव में साधना पूर्ण सफलतादायक नहीं होती।

यदि साधना न की जाय और केवल मात्र घर में ही इस प्रकार का चैतन्य यन्त्र और चित्र स्थापित किया जाय और प्रतिदिन 51 बार महाकाली मंत्र का जप किया जाय, तो भी निश्चय ही उसी दिन से अनुकूल परिणाम प्राप्त होने लगते हैं, जिसका अनुभव साधक शीघ्र ही करने लगता है।

साधना विधि

साधक प्रात: स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अपने घर में किसी एकांत स्थान अथवा पूजा कक्ष में चैतन्य मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त महाकाली यंत्र एवं महाकाली चित्र स्थापित करें, साधक चाहे तो अकेला या अपनी पत्नी के साथ बैठकर पूजन कार्य कर सकता है, पूजन के लिए कोई जटिल विधि विधान नहीं है, पूर्ण भाव के साथ महाकाली यंत्र के सामने पुष्प व प्रसाद चढ़ाकर संकल्प करें, कि मैं समस्त कामनाओं की पूर्ति, प्रत्यक्ष दर्शन सिद्धि के लिए महाकाली साधना प्रारम्भ कर रहा हूँ।

सर्वप्रथम गणपति पूजन व गुरु ध्यान, गुरु मंत्र कर इस साधना में साधक प्रवृत्त हो सकता है।

साधनाकाल में ध्यान में रखने योग्य तथ्य

जो साधक या गृहस्थ महाकाली साधना सम्पन्न करना चाहें, उसे निम्न तथ्यों का पालन करना चाहिए, जिससे कि वह अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर सके–

1. महाकाली साधना किसी भी समय से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु महाकाली जयंती से यदि इसे प्रारम्भ किया जाये तो सिद्धि की सम्भावना शीघ्र बनती है।
2. इस साधना में कुल 1250 माला मंत्र जप किया जाता है।
3. यह साधना पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है, परन्तु यदि स्त्री साधनाकाल में रजस्वला हो जाय तो यह साधना उसी समय उसे बंद कर देनी चाहिए।
4. साधनाकाल में स्त्री संसर्ग वर्जित है, साधक शराब आदि न पिये, न जुआ खेले और न स्त्री-संग करे।
5. साधना प्रात: या रात्रि में की जा सकती है, यदि साधक चाहे तो प्रात:काल और रात्रिकाल दोनों ही समय का उपयोग कर सकता है।
6. साधनाकाल में रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना ज्यादा उचित माना गया है।
7. साधना में काले रंग का आसन प्रयोग करना चाहिए। साधक पूर्व की तरफ मुंह करके बैठे, सामने घी का दीपक लगा ले, अगरबत्ती लगाना अनिवार्य नहीं है।
8. साधक के सामने पूर्ण चैतन्य महाकाली यन्त्र और महाकाली चित्र स्थापित होना चाहिए, जो कि

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति एवं जनम-जनम की दरिद्रता मिटाने के लिए काली प्रयोग सर्वोत्तम साधना है।

मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

9. प्रथम दिन महाकाली देवी का पूजन कर उसका ध्यान कर मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए, पूजन में कोई जटिल विधि विधान नहीं है, मानसिक या पंचोपचार पूजा कर सकता है।
10. रात्रि को भूमि शयन करना चाहिए, खाट या पलंग का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
11. भोजन एक समय एक स्थान पर बैठकर करना चाहिए। पर शराब, मांस, मद्य, लहसुन, प्याज आदि का निषेध है।

अनुभव–साधक जब साधना में बैठता है, तो तीसरे ही दिन उसे घर के साधना कक्ष में सुगन्ध सी अनुभव होती है, यह सुगन्ध अपने आप में अवर्णनीय होती है, पांचवे दिन उसे कमर से बंधे हुए घुंघरुओं की सी आवाज सुनाई दे सकती है, और साधना समाप्ति तक उसे जगत जननी महाकाली के दर्शन हो जाते हैं, इसके लिए पवित्रता, अखण्ड श्रद्धा, विश्वास और विधि-विधान के साथ साधना आवश्यक है।

प्रयोग

प्रथम दिन स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर सामने शुद्ध घृत का दीपक लगाकर तथा महाकाली यन्त्र व चित्र को स्थापित कर उसकी पूजा करे, इसके पूर्व गणपति और गुरु पूजा आवश्यक है।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर हिन्दी में ही संकल्प लिया जा सकता है, कि मैं 11 दिन में 1250 माला मन्त्र जप अमुक कार्य के लिए कर रहा हूँ, आप मुझे शक्ति दें जिससे कि मैं अपनी साधना में सफलता प्राप्त कर सकूँ, ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल छोड़ देना चाहिए, इसके बाद नित्य संकल्प करने की जरूरत नहीं है।

फिर निम्नलिखित महाकाली ध्यान करे–

शवारूढ़ाम्महाभीमाङ्घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजाङ्खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।।1।।
मुण्डमालाधरान्देवीं लोलजिह्वान्दिगम्बराम्।
एवं सन्चिन्तयेकालीं श्मशानालयवासिनीम्।।2।।

ध्यान के बाद निम्नलिखित मन्त्र का जप प्रारम्भ करे, जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, यह मंत्र जप रुद्राक्ष माला से करना चाहिए।

मन्त्र

।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा।।

वस्तुतः यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय, महत्वपूर्ण, शीघ्र सिद्धिप्रद और साधक को मां काली के प्रत्यक्षदर्शन में एवं समस्त मनोकामना की पूर्ति में सहायक है।

समापन–वस्तुतः महाकाली साधना कलियुग में कल्पवृक्ष के समान शीघ्र फल देने वाली है, इसकी साधना सरल होने के साथ ही साथ प्रभावयुक्त है, इससे भी बड़ी बात यह है, कि इस प्रकार की साधना करने से साधक को किसी प्रकार की हानि नहीं होती अपितु उसे लाभ ही होता है। वस्तुतः यह हमारा सौभाग्य है, कि हमें इस प्रकार का सुयोग्य अवसर प्राप्त हुआ है, जबकि एक श्रेष्ठ साधना में संलग्न हो सकते हैं, हमें विश्वास है, कि आप निश्चय ही इस साधना के माध्यम से अपने उद्देश्य को पूर्ण सफलता से प्राप्त कर सकेंगे और मां महाकाली के प्रत्यक्ष दर्शन का अनुभव आपको प्राप्त होगा।साधना में प्राप्त अनुभव गुरु धाम जोधपुर के पते पर अवश्य भेजें।

साधना सामग्री–570/–

महाकाली का स्वरूप उग्र है, क्रोधोन्मत्त है, संहारकारी है। सामान्य व्यक्ति के लिए भयप्रद है किन्तु जो सामान्य व्यक्ति के भयप्रद है वही साधक के लिए अन्ततोगत्वा माँ का ही स्वरूप है....

महाकाली प्रयोग

(शत्रु बाधा शांति प्रयोग)

यह काली प्रयोग किसी भी अभीष्ट मनोकामना हेतु भी किया जा सकता है।

साधक स्नान कर काली जयंती के दिन प्रात: पूर्व दिशा की ओर मुंहकर बैठ जायें। काला आसन का उपयोग करें। अपने सामने प्राण प्रतिष्ठित महाकाली यंत्र, महाकाली का चित्र स्थापित करें। सामने शुद्ध घी का दीपक जलायें।

फिर पहले गणपति पूजन एवं गुरु पूजन कर 1 माला गुरु मंत्र का जप करें।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक अपनी इस मनोकामना के लिए यह 3 दिन का अनुष्ठान कर रहा हूँ। माँ काली मेरी मनोकामना पूर्ण करें। फिर हाथ में लिया जल छोड़ दें।

फिर महाकाली का ध्यान करें—

शवारूढ़ाम्महाभीमाङ्घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजाङ्खड्गमुण्डवराभयकरां शिवाम्।।1।।
मुण्डमालाधरान्देवीं लोलजिह्वान्दिगम्बराम्।
एवं सन्चिन्तयेकालीं श्मशानालयवासिनीम्।।2।।

ध्यान के उपरांत रुद्राक्ष माला से 21 माला निम्नलिखित मंत्र जप सम्पन्न करें।

मन्त्र

।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं स्वाहा।।

फिर 21 माला पूर्ण होने पर फिर से 1 माला गुरु मंत्र करें। इस प्रकार तीन दिनों तक करें। 3 दिनों के बाद यंत्र व माला को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें। वस्तुत: यह 3 दिन की साधना है साधक अपनी किसी बाधा-परेशानी, बीमारी या किसी मनोकामना के लिए इसे सम्पन्न कर सकता है। साधनाकाल में पीछे लिखे सभी नियमों का पालन करना चाहिए।

साधना सामग्री–570/–

नित्य लक्ष्मी प्रयोग

साधना सामग्री - कनकधारा यंत्र

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को नियमित रूप से सम्पन्न करना चाहिए। इसे किसी भी बुधवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।

इस साधना में अपने पूजा स्थान में कनक धारा यंत्र स्थापित कर प्रति दिन पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् नित्य प्रति का पूजन सम्पन्न किया जाता है फिर गणपति एवं गुरु पूजन के पश्चात् 108 बार नित्य इस मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए।

इस मंत्र के नियमित जप से नित्य प्रति की चिंताएं कम होती है तथा खर्च के अनुपात में आमदनी में वृद्धि होती है।

मन में हर समय प्रसन्नता बनी रहती है। इस मंत्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है -

मंत्र

॥ ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धनं चिन्ता दूर करोति स्वाहा ॥

साधना सामग्री : 300/-

श्रीरुद्राष्टकम्

यह रुद्राष्टकम् भगवान शिव को समर्पित एक प्रार्थना है, जिसकी रचना भगवान शिव की कृपा से गोस्वामी तुलसीदास ने की थी। जो भी इसका पाठ करेगा, उसे भगवान शिव की प्रसन्नता कृपा प्राप्त होगी। इसका एक पाठ प्रत्येक सोमवार को करना चाहिए। श्रावण मास के सोमवार को साधक इसका पाठ अवश्य करें।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजे हं।।1।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतो हं।।2।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा।।3।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।4।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखण्डं अजं भानुकोटिप्रकाशम्।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजे हं भवानीपतिं भावगम्यं।।5।।
कलातीत कल्याण कल्पांतकारी। सदासज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्द संदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।6।।
न यावद् उमानाथ पादारविंदं। भजंतीह लोके परे वा नराणां।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।7।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतो हं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं।
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।8।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शम्भुः प्रसीदति।।9।।

।। इति श्री गोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम्।।

श्रीरुद्राष्टम्

हे ईशान! मैं मुक्तिस्वरूप, समर्थ, सर्वव्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरूप, निज स्वरूप में स्थित, निर्गुण, निर्विकल्प, निरीह, अनन्त ज्ञानमय और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त प्रभु को प्रणाम करता हूँ।।1।।

जो निराकार हैं, ओंकाररूप आदिकारण हैं, तुरीय हैं, वाणी, बुद्धि और इन्द्रियों के पथ से परे हैं, कैलासनाथ हैं, विकराल और महाकाल के भी काल, कृपाल, गुणों के आकार और संसार से तारने वाले हैं, उन भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।।2।।

जो हिमालय के समान श्वेतवर्ण, गम्भीर और करोड़ों कामदेवों के समान कान्तिमान् शरीर वाले हैं, जिनके मस्तक पर मनोहर गंगाजी लहरा रही हैं, भालदेश में बाल-चन्द्रमा सुशोभित होते हैं और गले में सर्पों की माला शोभा देती है।।3।।

जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, जिनके नेत्र एवं भृकुटि सुन्दर और विशाल हैं, जिनका मुख प्रसन्न और कण्ठ नील है, जो बड़े ही दयालु हैं, जो बाघ के चर्म का वस्त्र और मुण्डों की माला पहनते हैं, उन सर्वाधीश्वर प्रियतम शिव का मैं भजन करता हूँ।।4।।

जो प्रचण्ड सर्वश्रेष्ठ, प्रगल्भ, परमेश्वर, पूर्ण, अजन्मा, कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान, त्रिभुवन के शूलनाशक और हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले हैं, उन भावगम्य भवानीपति का मैं भजन करता हूँ।।5।।

हे प्रभो! आप कलारहित, कल्याणकारी और कल्प का अन्त करने वाले हैं। आप सर्वदा सत्पुरुषों को आनन्द देते हैं, आपने त्रिपुरासुर का नाश किया था, आप मोह नाशक और ज्ञानानंदघन परमेश्वर हैं, कामदेव के शत्रु हैं, आप मुझ पर प्रसन्न हों, प्रसन्न हों।।6।।

मनुष्य जब तक उमाकान्त महादेवजी के चरणारविन्दों का भजन नहीं करते, उन्हें इहलोक या परलोक में कभी सुख तथा शान्ति की प्राप्ति नहीं होती और न उनका सन्ताप ही दूर होता है। हे समस्त भूतों के निवास स्थान भगवान् शिव! आप मुझ पर प्रसन्न हों।।7।।

हे प्रभो! हे शम्भो! इे ईश! मैं योग, जप और पूजा कुछ भी नहीं जानता, हे शम्भो! मैं सदा-सर्वदा आपको नमस्कार करता हूँ। जरा, जन्म और दुःख समूह से सन्तप्त होते हुए मुझ दुःखी की दुःख से आप रक्षा कीजिये।।8।।

जो मनुष्य भगवान् शंकर की तुष्टि के लिये ब्राह्मण द्वारा कहे हुए इस 'रुद्राष्टक' का भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं, उन पर शंकर जी प्रसन्न होते हैं।।9।।

।। इस प्रकार श्री गोस्वामी तुलसीदास रचित श्री रुद्राष्टक सम्पूर्ण हुआ।।

- उन्होंने प्रेम, त्याग और श्रद्धा जैसे दुरुह विषयों को समाज के सामने रखा
- जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को दिया, वह अपने आप में प्रहारात्मक है और अधर्म का नाश करने वाला है।
- कृष्ण ने अपने जीवन काल में शुद्धता, पवित्रता एवं सत्यता पर ही अधिक बल दिया
- समाज की झूठी मर्यादाओं को खडित करने का साहस कृष्ण के बाद कोई दूसरा पुरुष नहीं कर पाया।

कृष्ण के नाम से आज समस्त विश्व परिचित है

शायद ही कोई ऐसा व्यक्तित्व होगा जो कृष्ण से परिचित न हो

जन-मानस में जो कृष्ण की छवि है,
उससे उन्हें ईश्वर होने से अथवा उनमें 'ईश्वरत्व' होने से
इन्कार नहीं किया जा सकता,
क्योंकि इन कलाओं का आरम्भ ही
अपने-आप में ईश्वर होने की पहचान है,
फिर वे तो षोडश कला पूर्ण देव पुरुष हैं।

यहां 'हैं' शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है, क्योंकि दिव्य अवतारी पुरुष सदैव मृत्यु से परे होते हैं। वे आज भी जन-मानस में जीवित हैं ही।

जगद्गुरु श्रीकृष्ण

भिन्न-भिन्न स्थानों पर आज भी 'कृष्णलीला', 'श्रीमद्‌भागवत कथा' तथा 'रासलीला' जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत कृष्ण के जीवन पर तथा उनके कार्यों पर प्रकाश डाला जाता है।

किन्तु सत्य को न स्वीकार करने की तो जैसे परम्परा ही बन गई है, इसीलिए तो आज तक यह विश्व किसी 'महापुरुष' अथवा 'देव पुरुष' का सही ढंग से आंकलन ही नहीं कर पाया। जो समाज वर्तमान तक कृष्ण को नहीं समझ पाया, वह समाज उनकी उपस्थिति के समय उन्हें कितना जान पाया होगा, इसकी तो कल्पना ही की जा सकती है।

सुदामा जीवन पर्यन्त नहीं समझ पाये कि जिन्हें वे केवल मित्र ही समझते थे, वे कृष्ण एक दिव्य विभूति है और उनके माता-पिता भी हमेशा उन्हें अपने पुत्र की ही दृष्टि से देखते रहे, तथा दुर्योधन ने उन्हें हमेशा अपना शत्रु ही समझा। इसमें कृष्ण का दोष नहीं कहा जा सकता, क्योंकि कृष्ण ने तो अपना सम्पूर्ण जीवन पूर्णता के साथ ही जीया, कहीं वे 'माखन चोर' के रूप में प्रसिद्ध हुए तो कहीं, 'प्रेम' शब्द को सही रूप में प्रस्तुत करते हुए दिखाई दिए।

कृष्ण के जीवन में राजनीति, संगीत जैसे विषय भी पूर्णरूप से समाहित थे और जब उन्होंने अपने जीवन में अध्यात्म को उतारा, तो उतारते ही चले गए और षोडश कला पूर्ण होकर 'पुरुषोत्तम' कहलाए। जहां उन्होंने प्रेम, त्याग और श्रद्धा जैसे दुरूह विषयों को समाज के सामने रखा, वहीं जब समाज में झूठ, असत्य, व्यभिचार और पाखंड का बोलबाला बढ़ गया, तो उस समय वे एक वीर पुरुष की तरह सामने आए। महाभारत युद्ध के दौरान जिस प्रकार से कृष्ण ने युद्धनीति, रणनीति तथा कुशलता का प्रदर्शन किया, वह अपने-आप में आश्चर्यजनक ही था।

कुरुक्षेत्र युद्ध के मैदान में जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को प्रदान किया, वह अत्यन्त ही विशिष्ट तथा भारत की कुरीतियों पर कड़ा प्रहार करने वाला है। उन्होंने अर्जुन का मोह भंग करते हुए कहा-

अशोच्यानन्दशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्य भाषते।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डितः।।

'हे अर्जुन! तू कभी न शोक करने वाले व्यक्तियों के लिए शोक करता है, और अपने आप को विद्वान भी कहता है, परन्तु जो विद्वान होते हैं, वे जो जीवित हैं उनके लिए और जो जीवित नहीं हैं उनके लिए भी, शोक नहीं करते।' इस प्रकार जो ज्ञान कृष्ण ने अर्जुन को दिया, वह अपने आप में प्रहारात्मक है और अधर्म का नाश करने वाला है।

कृष्ण ने अपने जीवन काल में शुद्धता, पवित्रता एवं सत्यता पर ही अधिक बल दिया, अधर्म, व्यभिचार, असत्य के मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक जीव को उन्होंने वध करने योग्य ठहराया, फिर वह चाहे परिवार का सदस्य ही क्यों न हो, और सम्पूर्ण महाभारत एक प्रकार से पारिवारिक युद्ध ही तो था।

कृष्ण स्वयं अपने मामा कंस का वध कर, अपने नाना को कारागार से मुक्त करवा कर उन्हें पुनः मथुरा का राज्य प्रदान किया, और जब वे युवावस्था में आए तो शिशुपाल का वध किया, और निर्लिप्त भाव से रहते हुए कृष्ण ने धर्म की स्थापना कर सदैव सुकर्म को ही बढ़ावा दिया।

कृष्ण का यह स्वरूप समाज स्वीकार नहीं कर पाया, क्योंकि इससे उस समय के समाज के नियम, जो कि स्वार्थ को बढ़ावा देने वाले थे, उन पर कृष्ण का सीधा आघात था। समाज की झूठी मर्यादाओं को खंडित करने का साहस कृष्ण के बाद कोई दूसरा पुरुष नहीं कर पाया, क्योंकि जिस मार्ग पर कृष्ण ने चलना सिखाया, वह अत्यन्त कंटकाकीर्ण तथा पथरीला मार्ग है और उस पर चलने का साहस वर्तमान तक भी कोई नहीं कर पाया। इन्होंने अपने जीवन में सभी क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए वीरता को, कर्मठता को, सत्यता को

यह कृष्ण भक्तों के जीवन की सार्थकता होगी कि वे उनके पद-चिन्हों पर चलें, उन मार्गों पर चलें, जिन पर कृष्ण ने स्वयं चलकर अपने आप को सोलह कलापूर्ण बनाया और वह मार्ग है साधना का, तप का, संयम का, त्याग का.... और यह मार्ग पथरीला तथा कांटों से भरा अवश्य है, लेकिन जिस स्थान पर जाकर यह मार्ग पूर्ण होता है वह स्थान है 'सिद्धाश्रम'।

विशिष्ट स्थान प्रदान किया।

कृष्ण ज्ञानार्जन हेतु सांदीपन ऋषि के आश्रम में पहुंचे, तब उन्होंने अपना सर्वस्व समर्पण कर ज्ञानार्जित किया, गुरु सेवा की, साधनाएं की और साधना की बारीकियों व अध्यात्म के नये आयाम को जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। यह तो समय की विडम्बना और समाज की अपनी ही एक विचारशैली है, जो कृष्ण की उपस्थिति का सही मूल्यांकन न कर पाया।

कृष्ण के जाने के बाद ही भक्ति युग का प्रारम्भ हो गया और समाज ने समस्त ज्ञान चिन्तन को स्वार्थ की चादर में लपेट दिया। कृष्ण के रोचक प्रसंगों को सुना-सुना कर, उन्हें धन प्राप्ति का एक जरिया बना दिया।

भक्ति का तात्पर्य तो यह होना चाहिए कि भक्त अपने इष्ट के इतना निकट आ जाए, कि दोनों एकाकार हो जाएं, द्वैत भाव समाप्त होकर अद्वैत की स्थिति का निर्माण हो, जैसा कि मीरा ने किया, जैसा कि चैतन्य महाप्रभु ने किया। ये लोग निरन्तर कृष्ण की भक्ति भावना में निमग्न रहते हुए कृष्ण से एकाकार हो गये, उन में द्वैत न होकर अद्वैत का भाव प्रबल हो गया, किन्तु इनके बाद के काल में कोई दूसरा कृष्ण-भक्त, 'कृष्ण' नहीं बन सका, क्योंकि इस समाज में भक्ति के विकृत रूप को अपनाया। भक्ति की निश्छलता को कायरता में, उदासीनता में, कर्म हीनता तथा अकर्मण्यता में परिवर्तित कर दिया, जिसे प्राप्त कर समस्त विश्व अधर्म, असत्य और पाखंड के दलदल में धंसता चला गया।

आज विश्व में खाली भक्ति ही भक्ति के मात्र दिखावे की है अतः भक्ति की आड़ लेकर स्वार्थ सिद्धि की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है तो भक्ति रस में डूब कर कुछ कर दिखाने की समाज में गहराई तक बैठी असत्य तथा पाखंड युक्त परम्पराओं को तोड़ने की, कृष्ण ने जिन मार्गों को जीवन में पूर्णता प्राप्त करने की बात कही है, उन मार्गों को जीवन में अपनाने की, क्योंकि केवल जोर से जय-जयकार करने से, भक्ति का प्रदर्शन करने से अथवा बड़े-बड़े तिलक लगाकर भिक्षा मांगने से ही भक्ति सिद्ध नहीं होती, यह तो भक्ति की विकृत अवस्था है।

यह कृष्ण भक्तों के जीवन की सार्थकता होगी कि वे उनके पद-चिन्हों पर चलें, उन मार्गों पर चलें, जिन पर कृष्ण ने स्वयं चलकर अपने आप को सोलह कलापूर्ण बनाया और वह मार्ग है साधना का, तप का, संयम का, त्याग का.... और यह मार्ग पथरीला तथा कांटों से भरा अवश्य है, लेकिन जिस स्थान पर जाकर यह मार्ग पूर्ण होता है वह स्थान है 'सिद्धाश्रम'।

सिद्धाश्रम का अर्थ है जीवन की पूर्णता है, सिद्धाश्रम का अर्थ है ही षोडश कलाओं में पूर्ण होना, और सिद्धाश्रम ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है।

कृष्ण की प्रमुख इच्छाओं में से एक इच्छा यह थी, कि वे किसी प्रकार सिद्धाश्रम में प्रवेश पा सकें, और वे अपनी इस इच्छापूर्ति के लिए रुके नहीं, उन्होंने अथक प्रयास कर अपनी साधना के बल पर सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त किया....और आज वे सिद्धाश्रम में श्रेष्ठ और उच्चकोटि के योगी के रूप में विद्यमान हैं, जिन्हें विश्व **'जगद्गुरु'** के रूप में स्वीकार करता है। वे जगद्गुरु थे आज भी हैं और आने वो युग में भी रहेंगे, तभी तो उन्हें **'कृष्णं वन्दे जगद्गुरुं'** कहा गया।

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- शिष्य का तात्पर्य देह से नहीं है, शिष्य का तात्पर्य खड़े होकर हाथ जोड़ने से नहीं है, शिष्य का तात्पर्य कोई दीक्षा लेने से नहीं है। यह तो एक भाव है कि हम दीक्षा लेकर अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु चरणों में समर्पित करके गुरु से एकाकार हो जाएं, वहां तो हमारी शिष्यता प्रारंभ होती है।
- शिष्य का वास्तविक तात्पर्य है गुरु के अनुरूप बनना और आज्ञा पालन करना। . . .और एकमात्र आज्ञा पालन करना ही शिष्य का परम कर्त्तव्य है। यदि हमने तर्क वितर्क किया तो हम शिष्यता की भावभूमि से परे हट जाते हैं। शिष्य शब्द बना ही है आज्ञा पालन से, निरन्तर उनकी सेवा करने से। सेवा और आज्ञा पालन ये दो साधन हैं, जिनके माध्यम से शिष्य आगे की ओर अग्रसर होता हुआ पूर्णता प्राप्त कर सकता है। जो सेवा नहीं कर सकता, वह समर्पण भी नहीं कर सकता और जहां समर्पण नहीं है वहां शिष्यता भी नहीं है।
- शिष्य का लक्षण, शिष्य का चिंतन, शिष्य का विचार मधुर होना चाहिए हर क्षण गुरु की आज्ञा का पालन करें किसी भी तर्क या वितर्क में न फंसे। सेवा, समर्पण और श्रद्धा से ही तुम लोहे से कुन्दन बन सकते हो।
- शिष्य को चाहिए कि गुरु जो भी मंत्र दे, उसे पूर्ण भक्तिभाव से ग्रहण करें, कभी भी मन में गुरु या मंत्र के प्रति कुर्तक या अश्रद्धा न लावें।
- गुरु तो हर क्षण ही शिष्य को अपने समकक्ष बनाने का प्रयास करते हैं, और इसी कारण उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिष्य के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिष्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिंतन दुर्भाग्यपूर्ण होता है।
- निरंतर शिष्य को गुरु चरणों का ही ध्यान करते रहना चाहिए और नियमित रूप से गुरु मंत्र का जप करना चाहिए।

जो शिष्य अपने अहम, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।
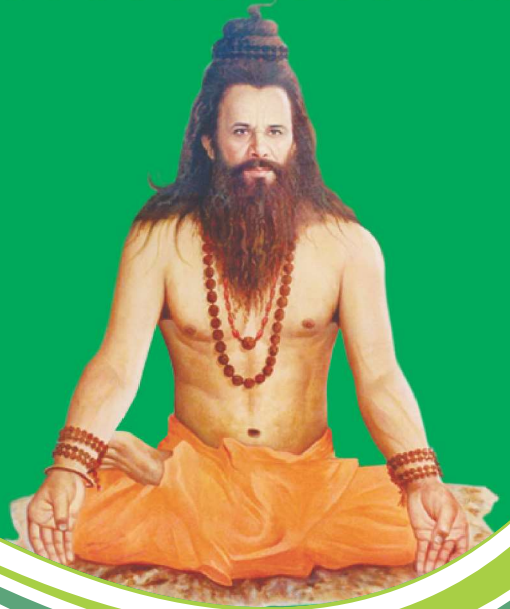
गुरु वाणी

- मर्दानगी तो इस बात में है कि गृहस्थ में रहें, संसार में रहें, तकलीफ देखें, बेचैनी देखें और जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त करें। उसी को श्रेष्ठता कह सकते हैं और जीवन ऐसा ही होना चाहिए।
- एकांत में बैठने से जरूरी नहीं कि ध्यान लगे ही और संसार से भागने पर जरूरी नहीं कि पूर्णता प्राप्त हो ही जाए अतः आवश्यकता है संयम और धैर्य की।
- मानव जीवन का लौकिक चिंतन, विचार और कार्य क्षेत्र यह संसार है। पूर्णता तो इस पूरे मार्ग को पार करके ही वहीं पहुंचने पर मिलती है जहां मनुष्य ब्रह्म से अलग हुआ है। उस ब्रह्म से अलग होने के बाद वह कर्म करता हुआ, धर्म, अर्थ और काम - इन तीनों चिन्तनों का विचार करता हुआ, जब मोक्ष का भी चिंतन करता है, तब वह पुनः ब्रह्म में लीन हो जाता है।
- जो सब कुछ दे दे, जो सब कुछ पूर्ण कर दे, जो शिष्य को एक कण से आकाश बना दे, जो एक मामूली से वाष्प को बादल बना दे, गंगोत्री बना दे, वह गुरु है।
- और शिष्य वह है जिसमें एक तड़फ हो, एक बैचेनी होनी चाहिये, वह अपने आपको कितना भी काबू करे, मगर हर क्षण उसके मन में एक भावना, एक चिंतन विचार बना रहे कि मुझे अपने जीवन में वह प्राप्त करना ही है, जो मेरा लक्ष्य है। क्योंकि मैं पगडण्डी के प्रारंभ से शुरू हुआ हूँ और मुझे पगडण्डी के अंत तक पहुंचना है और पगडण्डी के अंत तक पहुंचने में ही मेरे जीवन की पूर्णता है। ऐसा चिंतन शिष्य का हो सकता है।
- जब तक वह अपने इष्ट से गुरु से साक्षात नहीं कर लेता, तब तक उसके अन्दर विरह की एक आग धधकती रहती है, और उसका इलाज फिर किसी वैद्य के पास नहीं होता, उसका इलाज तो इष्ट के पास ही होता है, प्रिय के पास ही होता है, कि जब वे आयेंगे तब मैं उनमें अपने आपको समाहित कर दूँगा, कर दूँगी। जब प्रियतमा का यह भाव साधक में आ जाता है, तब उसमें कोमलता आ जाती है। आँख बन्द करें और प्रिय का एहसास ही न हो, तो फिर प्रेम ही कैसा हुआ?

श्री गणेश बहुला चौथ

15.08.22 या किसी भी चतुर्थी से

लक्ष्मी और विनायक की पूजा-अर्चना प्रत्येक शुभ अवसर के आरम्भ में ही की जाती रही है

और इसी शब्द से बना है श्रीगणेश
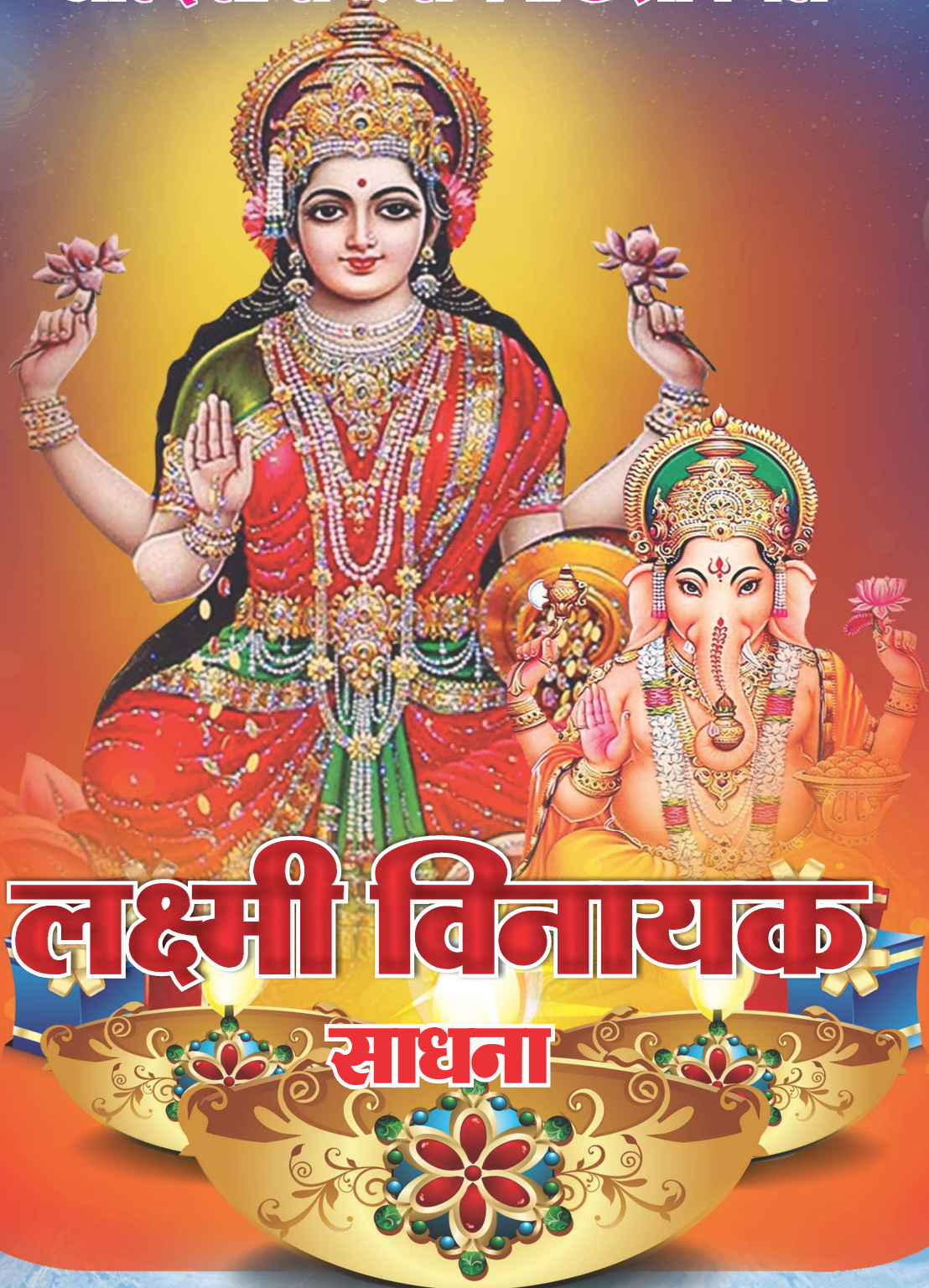
लक्ष्मी विनायक साधना

श्री गणेश का सामान्यतः अर्थ यही बन गया है
कि किसी कार्य की नींव रखी जाय, उसको शुरू किया जाय।

परन्तु इस धारणा के पीछे छिपा मूल चिन्तन यह विलुप्त हो गया है कि श्री गणेश का तात्पर्य उस श्री अर्थात् लक्ष्मी और गणेश की साधना से है,
जिसे 'श्री गणेश साधना' या 'लक्ष्मी विनायक साधना' कहा जाता है।
कालान्तर में साधना तो विलुप्त हो गई परन्तु परम्परागत रूप में लक्ष्मी गणेश की पूजा अभी भी हिन्दू परिवारों में प्रचलित है ही।

लक्ष्मी विनायक साधना के लाभ

1. लक्ष्मी के यों तो अनेकों रूप हैं, और अलग-अलग स्वरूपों की साधना से अलग लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। परन्तु यहाँ लक्ष्मी के जिस स्वरूप की साधना की बात हो रही है, वह 'अर्थ लक्ष्मी' है। और अर्थ ही आज के युग में एक प्रधान शक्ति है। यदि अर्थ है, तो अन्य समस्त साधन इस धन बल के आधार पर प्राप्त किये जा सकते हैं। इस साधना द्वारा अर्थाभाव जैसी समस्या या अर्थ संकट से निवृत्ति मिल जाती है।
2. **इस साधना के पश्चात् साधक जिस कार्य में हाथ डालता है, उसे लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। व्यापारियों के लिए इस साधना का विशेष महत्व है, टेण्डर भरते समय या व्यापार, क्रय-विक्रय सम्बन्धी कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेते समय जिस भी पक्ष में निर्णय वह लेता है, उसे लाभ ही लाभ मिलता है, हानि के आसार नहीं होते हैं।**
3. इस साधना के द्वारा साधक विवेकवान बन जाता है। भगवान गणेश का विशाल मस्तक उनके विपुल ज्ञान का परिचायक है, उनके बड़े कान इस बात के प्रतीक हैं कि व्यक्ति को बोलना कम पर सुनना अधिक चाहिए। इस साधना से साधक का मन और कर्ण शक्ति सबल होते हैं।
4. भगवान गणेश की जो सूंड है, वह लम्बी नाक है। लम्बी नाक अर्थात् सम्मान का प्रतीक है। यह सर्वविदित है, कि नाक कट जाने का अर्थ है-घोर अपमान होना। इस साधना द्वारा साधक के अन्दर धीरता, गम्भीरता और

भगवान गणेश की जो सूंड है, वह लम्बी नाक है। लम्बी नाक अर्थात् सम्मान का प्रतीक है। यह सर्वविदित है, कि नाक कट जाने का अर्थ है-घोर अपमान होना। इस साधना द्वारा साधक के अन्दर धीरता, गम्भीरता और उदात्त व्यक्तित्व के गुण जाग्रत होते हैं। गणेश जी को लम्बोदर कहा गया है।

उदात्त व्यक्तित्व के गुण जाग्रत होते हैं। गणेश जी को लम्बोदर कहा गया है। लम्बा उदर गम्भीरता का परिचायक है। छोटा पेट मतलब जिसके पेट में बात पचती न हो, ऐसी मूर्खतापूर्ण वाचाल प्रवृत्ति के कारण कई लोग उपहास के पात्र बन जाते हैं और समाज में सम्मान नहीं प्राप्त कर पाते। ज्ञानी पुरुष धीर, गम्भीर, मितभाषी होते हैं, हर बात को मुख से अनायास ही नहीं उगल देते। इस साधना द्वारा व्यक्ति लम्बोदर की ही भांति प्रबुद्ध हो जाता है। इस साधना द्वारा व्यक्ति को समाज और परिवार में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त होता है। लोग उसके गुणों की प्रशंसा करते हैं। बिना सम्मानित हुए जीवन के सभी ऐश्वर्य भी व्यर्थ हैं।

5. कैसा भी कार्य हो, चाहे वह ईश्वर प्राप्ति हो या दैनिक जीवन से सम्बन्धित कोई कार्य, उसके सफलीभूत होने में यदि सन्देह आ गया तो सफलता की सम्भावना यों ही क्षीण हो जाती है –**'संशयात्मा विनश्यति'**।
   इस सन्देह, तर्क, कुतर्क से साधक की शक्ति क्षीण हो जाती है। गणपति का वाहन मूषक (चूहा) इसी तर्क का प्रतीक है, मूषक की आदत है अच्छी वस्तुओं को कुतर-कुतर कर काट डालना, परन्तु गणपति उसे अपने ज्ञान भार से दबाए हुए उस पर नियंत्रण बनाए रखते हैं, उस पर हावी रहते हैं। इस साधना द्वारा साधक के सभी सन्देह कुतर्क समाप्त होते हैं, और उसे सद्गुरु की कृपा प्राप्त होती है क्योंकि संशय के समाप्त होने के बाद ही साधनाओं में सफलता की स्थिति बनती है।
6. यदि आप बेरोजगार हैं, आपके बार-बार आवेदन करने पर भी आपको रोजगार के, या आय के उचित स्रोत नहीं मिल पा रहे हैं, तो यह साधना की जा सकती है। इस साधना को प्रारम्भ करते समय अपनी मनोकामना गुरु चित्र के समक्ष बोलनी चाहिए। यदि आपकी सफलता में कोई विघ्न है तो वह स्वतः समाप्त हो जाती है।
7. प्रमुख रूप से यह लक्ष्मी विनायक साधना किसी विशेष कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए की जाती है। यदि आप अपने किसी मनोवांछित लक्ष्य की ओर शीघ्रता से गतिशील होना चाहते हैं, तो यह साधना श्रेष्ठ है, मूलतः यह 'सर्व कार्य सिद्धि साधना' ही है।

लक्ष्मी विनायक साधना विधि

यह 7 दिन की साधना है, जिसे किसी भी चतुर्थी से प्रारम्भ किया जा सकता है

प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध पीली धोती धारण करें, ऊपर से गुरु पीताम्बर ओढ़ लें। इसके बाद सामने गुरु चित्र को स्थापित कर उसे पानी का छींटा देकर पोंछ लें। धूप, कुंकुम, अक्षत, पुष्पादि से गुरु चित्र का संक्षिप्त पूजन करें, फिर दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव का ध्यान करें–

गुरु ध्यान–

गुरु रूपमेवं, गुरुर्ब्रह्म रूपं, विष्णुञ्च रूद्रं देवं वदाम्यं।
गुरुर्वै गुरुर्वै परम पूज्यरूपं, गुरुर्वै सदाहं प्रणम्यं नमामि।।
त्वं नाथ पूर्णं त्वं देव पूर्णं, आत्मा च पूर्णं ज्ञानं च पूर्णं,
अहं त्वां प्रपन्नं प्रपद्ये सदाहं, शरण्यं शरण्यं गुरुर्वै शरण्यं।।

चित्र के सामने एक थाली में हल्दी, कुंकुम और अक्षत से एक बड़ा स्वस्तिक बनाएं। उस पर **'लक्ष्मी विनायक यंत्र'** का स्थापन करें। यंत्र के मध्य में **'सिद्धेश्वरी लक्ष्मी फल'** स्थापित करें। धूप, दीप आदि जला लें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

विनियोग–

अस्य श्रीलक्ष्मी विनायक मंत्रस्य अन्तर्यामी ऋषिः गायत्री छन्दः लक्ष्मी विनायको देवता श्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः आत्मनो भीष्ट जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास–

दाएं हाथ से शरीर के निर्दिष्ट अंगों को स्पर्श करें–

ॐ अन्तर्यामिऋषये नमः (सिर)
गायत्री छन्दसे नमः (मुख)
लक्ष्मीविनायक देवतायै नमः (हृदय)
श्रीं बीजाय नमः (गुह्य स्थान)
स्वाहा शक्तये नमः (दोनों पैर)

षडंगन्यास–

निम्न मंत्र बोलते हुए विभिन्न अंगों को स्पर्श करें, जिससे उनमें साधना हेतु आवश्यक ऊर्जा स्थापित हो सके–

ॐ श्रीं गां हृदयाय नमः (हृदय)
ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा (सिर)
ॐ श्रीं गूं शिखायै वषट् (शिखा)
ॐ श्रीं गैं कवचाय हुं (दाएं हाथ से बाएं कन्धे एवं बाएं हाथ से दाएं कन्धे को स्पर्श करें)
ॐ श्रीं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)
ॐ श्रीं गः अस्त्राय फट् (दाहिने हाथ को सिर पर तीन बार घुमा कर तीन बार ताली बजाएं)

लक्ष्मी विनायक ध्यान–

लक्ष्मी विनायक के स्वरूप का ध्यान करते हुए निम्न श्लोक का उच्चारण करें तथा यंत्र पर एक पुष्प चढ़ाएं–

दन्ता भये चक्र दरौ दधानं, कराग्रगस्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।
धृताब्जया लिंगितमब्धिपुत्र्या लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे।।

भावार्थ–

दाहिने हाथ में दन्त एवं शंख तथा बाएं हाथ में अभय एवं चक्र धारण किये हुए भगवान गणेश तथा एक हाथ में कमल तथा दूसरे हाथ में सुवर्ण निर्मित घट लिए हुए महालक्ष्मी की मैं वन्दना करता हूं।

यंत्र पूजन–

गणपति के निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र पर आठ दिशाओं में हल्दी से क्रमशः आठ बिन्दियां लगाएं–

ॐ वक्रतुण्डाय नमः। ॐ एकदंष्ट्राय नमः।
ॐ महोदराय नमः। ॐ गजास्याय नमः।
ॐ लम्बोदराय नमः। ॐ विकटाय नमः।
ॐ विघ्नराजाय नमः। ॐ विनायकाय नमः।

इसके बाद कुंकुम से उसी प्रकार आठ दिशाओं में यंत्र पर आठ बिन्दियां लगाते हुए लक्ष्मी की पूजा करें–

ॐ लोहिताक्ष्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः।
ॐ पुष्टयै नमः। ॐ दिव्यायै नमः।
ॐ नीललोहितायै नमः। ॐ वारुण्यै नमः।
ॐ अमोघायै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।

इसके बाद **'वैनायकी दिव्योत्तमा माला'** से निम्न मंत्र की 5 माला जप करें–

लक्ष्मी विनायक मंत्र

।। ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरदे सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।।

11 दिन की इस साधना के बाद यंत्र व माला को जल में विसर्जित करें।

न्यौछावर– 500/–

19.08.22

कृष्ण जन्माष्टमी

भक्ति, शक्ति, बुद्धि, पराक्रम
तथा नीति के संगम हैं

योगेश्वर
श्रीकृष्ण

और

कृष्ण जन्माष्टमी

तो साक्षात् सिद्धि पर्व है

जिसने कृष्ण-भक्ति सिद्धि सम्पन्न की

उसने तो सब कुछ प्राप्त कर लिया

जब घोर बल-दर्पित अतिशय अत्याचारी असुररूप दुष्ट राजाओं के तथा अनाचार-दुराचार-परायण प्राणियों के विषम भार से आक्रान्त दु:खिनी वसुंधरा ने गोरूप धारण करके करुण क्रन्दन करते हुए ब्रह्माजी के पास जाकर अपनी दु:खगाथा सुनायी।

तब ब्रह्माजी ने पृथ्वी को साथ लेकर भगवान् शंकर और अन्यान्य देवताओं को भी साथ लिया और वे क्षीरसागर के तट पर गये। वहाँ उन्होंने पुरुषसूक्त के द्वारा भगवान् का स्तवन किया। इसके कुछ देर बाद ब्रह्माजी ध्यानमग्न हो गये और उन समाधिस्थित ब्रह्माजी को क्षीराब्धिशायी भगवान् की दैववाणी सुनायी दी। ब्रह्माजी ने उसे सुनकर देवताओं से कहा–''हम लोगों की प्रार्थना के पूर्व ही भगवान् वसुंधरा की विपत्ति को जान चुके हैं। वे ईश्वरों के भी ईश्वर (ईश्वरेश्वर:) अपनी काल शक्ति के द्वारा धरणी का भार उतारने के लिये शीघ्र ही स्वयं प्रकट होंगे जब तक वे पृथ्वी पर लीला करें, तब तक तुम लोग भी यदुकुल में जन्म लेकर उनकी लीला में सहयोग प्रदान करो। ऐसा कहकर ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये और समय आने पर भगवान श्रीकृष्ण का प्राकट्य हुआ।

आज का यह दिन परम धन्य है। इसी दिन इसी भारतवर्ष में मथुरा के कंस-कारागृह के कृष्ण-तम-धन निभृत कक्ष में घनश्याम श्रीकृष्ण-अनिर्वचनीय-अचिन्त्य-अनन्त-ऐश्वर्य-सौन्दर्य-माधुर्य-परिपूर्ण, अनन्त-अद्भुत-शक्ति-सामर्थ्य-स्रोत, सहज अजन्मा-अविनाशी, सच्चिदानन्द-स्वेच्छा-विग्रह, स्वयं भगवान् का महान् मङ्गलमय, महान् महिमामय और मधुरिमामय प्राकट्य हुआ था।

उस समय से लेकर आज तक पांच हजार वर्ष बीतने के बाद भी भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप जितना पहले सार्थक था आज भी उतना ही सार्थक है, और आगे भी रहेगा, उनके स्वरूप की व्याख्या, गुणों की व्याख्या, उनकी क्रियाएँ कुछ पंक्तियों में समेटी ही नहीं जा सकतीं, कृष्ण का चरित्र ऐसा नहीं था, कि हर व्यक्ति उन्हें अपने से अलग समझ कर एक आदर्श मान कर देखे, अपितु कृष्ण का जीवन चरित्र बालपन से लगाकर, निर्वाण तक हर कदम रस से, योग से, माया से, जीवन सम्पूर्ण ओत-प्रोत था।

कृष्ण की भक्ति के सम्बन्ध में, जीवन चरित्र के सम्बन्ध में, उनकी लीलाओं के सम्बन्ध में जितने भी ग्रन्थ एवं रचनाएं लिखी गई हैं, उतनी किसी अन्य के सम्बन्ध में नहीं हैं, क्योंकि कृष्ण तो लोक-लोक से जुड़े थे, जिससे हर साधक एक आत्मीयता का, एक प्रेम सम्बन्ध का अनुभव कर सकता है।

कृष्ण और माया

आप कहीं भी, किसी महात्मा के पास प्रवचन सुनने जायेंगे तो यही सुनने को मिलेगा, कि जगत माया स्वरूप है, मिथ्या है, इस जगत को छोड़ कर संन्यास धारण कर लो, तभी पूर्ण शुद्धि, शान्ति प्राप्त हो सकेगी, कोई इनसे यह तो पूछे, कि आप कृष्ण को भगवान स्वरूप मानते हैं, पूजा अर्चना करते हैं, उन्हें साक्षात् ब्रह्म कहते हैं, उन साक्षात् भगवान कृष्ण ने तो कभी जीवन में कर्म की राह नहीं छोड़ी उन्होंने जीवन को पूरे आनन्द, वैभव के साथ जिया, उनके जीवन का उदाहरण, हर घटना, प्रेरणादायक है, इसीलिए कृष्ण को योगेश्वर श्रीकृष्ण कहा गया है।

सद्गुरुदेव ने भी अपने प्रवचन में कहा है कि सबसे बड़ा योगी तो गृहस्थ होता है, जो इतने बन्धनों को संभालते हुए भी जीवन यात्रा करता है, और फिर साधना एवं प्रभु का ध्यान करता है, जिसने अपने जीवन में कृष्ण को समझ लिया, गीता का ज्ञान अपने जीवन में उतार लिया, तो समझ लीजिये कि वह योगी बन गया।

गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि–

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयी भूतिर्, ध्रुवा नीतिर्मतिमम।।

–गीता 18/78

तात्पर्य यह है कि जहाँ अर्जुन है, वहाँ कृष्ण है, जहाँ कर्म स्वरूप अर्जुन है, वही योगस्वरूप कृष्ण हैं, वहीं विजय, श्रेष्ठता, श्री एवं नीति है।

कृष्ण केवल भक्ति स्वरूप ही नहीं है, उनके तो जीवन, कर्म, उनके उपदेश, जो गीता में समाहित हैं, के साथ-साथ नीति-अनीति, आशा-आकांक्षा, मर्यादा-आचरण, प्रत्येक पक्ष को पूर्ण रूप से समझ कर अपने भीतर उतारने का साधन है। कृष्ण की नीति, आदर्श एवं मर्यादा का चरम रूप न हो कर व्यावहारिकता से परिपूर्ण होकर ही दुष्टों के साथ दुष्टता का व्यवहार तथा सज्जनों के साथ श्रेष्ठता का व्यवहार, मित्र और शत्रु की पहिचान, किस नीति से किस प्रकार कार्य निकाला जाय, यह सब आज भी व्यावहारिक रूप में खरे हैं।

कृष्ण का जन्म अन्धकारपूर्ण अर्द्धरात्रि में हुआ, जो कि इस बात को स्पष्ट करता है, कि घना अंधेरा हो तो दिव्य प्रकाश उत्पन्न होगा, कष्ट और पीड़ा की भी सीमा होती है, कृष्ण का जन्म आशा का संदेश लेकर उपस्थित होता है, और यह रात्रि अपने आपमें एक अत्यन्त शास्त्रोक्त, सिद्ध तांत्रिक तथा मांत्रिक सिद्धि मुहूर्त भी है।

कृष्ण जन्माष्टमी केवल 12 बजे तक जागकर आरती करने का दिवस नहीं है, यह दिवस तो विशेष साधना का दिवस है, यह दु:ख रूपी अन्धकार को समाप्त कर सुख का दिव्य प्रकाश प्राप्त करने की रात्रि है।

'गौतमीय तन्त्र', 'शारदा तिलक' तथा 'क्रम दीपिका',

भगवान् श्रीकृष्ण अपने इस स्वरूप तथा इसकी लीलाओं के जानने-समझने का फल बतलाते हुए कहते हैं—

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।। (४/९)

'अर्जुन! मेरे इस दिव्य जन्म और कर्म को जो मनुष्य तत्त्व से, यथार्थरूप से जान लेता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को नहीं प्राप्त होता, (वह जन्म-मरण से छूटकर) मुझको ही प्राप्त होता है।

कृष्ण साधना के सम्बन्ध में अत्यन्त उत्तम ग्रन्थ हैं, और गौतमीय तन्त्र में लिखा है, विधि-विधान सहित कृष्णभक्ति, साधना सम्पन्न करने में भोग एवं ऐश्वर्य की पूर्ण प्राप्ति होती है।

कृष्ण जन्माष्टमी को तीन प्रयोग विशेष रूप से सम्पन्न किये जा सकते हैं, ये तीन प्रयोग काम्य प्रयोग हैं–1. इच्छा पूर्ति प्रयोग, 2. वशीकरण सिद्धि प्रयोग, 3. संतान गोपाल प्रयोग।

कई साधक इस रात्रि को ये तीनों प्रयोग सम्पन्न करते हैं, और कई अपने कार्य विशेष की पूर्ति हेतु विशेष एक प्रयोग सम्पन्न करते हैं, लेकिन इतनी बात निश्चित है, कि श्री कृष्ण साधना हेतु किया गया कोई भी कर्म निष्फल नहीं जाता है।

आगे साधकों हेतु प्रत्येक प्रयोग अलग-अलग स्पष्ट किया जा रहा है, स्वयं निर्णय लेते हुए कृष्ण जन्माष्टमी के इस महान सिद्ध मुहूर्त को साधना कर्म अवश्य सम्पन्न करें–

1. इच्छा पूर्ति कृष्ण प्रयोग

इस साधना हेतु साधक रात्रि का प्रथम प्रहर बीत जाने के पश्चात् साधना क्रम प्रारम्भ कर अर्द्धरात्रि के साथ पूर्ण कर मन्त्र जप सम्पन्न करें, इस साधना हेतु 'इच्छा पूर्ति यन्त्र', 'दो गोविन्द कुण्डल', तथा 'आठ शक्ति विग्रह' आवश्यक है।

अपने सामने सर्वप्रथम एक बाजोट पर पुष्प ही पुष्प बिछा दें और उन पुष्पों के बीचों-बीच इच्छा पूर्ति यन्त्र स्थापित करें, तथा इस यंत्र का पूजन केवल चन्दन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने भगवान कृष्ण का एक सुन्दर चित्र फ्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र के तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचामृत हो, जिसमें घी, दूध, दही, शक्कर तथा गंगाजल हो, इसके अतिरिक्त अन्य नैवेद्य भी अर्पित कर सकते हैं, इच्छा पूर्ति यन्त्र के दोनों ओर गोविन्द कुण्डल स्थापित करें, तथा कुण्डल पर केसर का टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़ कर कृष्ण का ध्यान करें, कृष्ण का ध्यान कर, इनके शक्ति स्वरूप आठ शक्ति विग्रह स्थापित करें, ये आठ शक्तियाँ-लक्ष्मी, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पुष्टि हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ लक्ष्म्यै नमः पूर्वदले ॐ सरस्वत्यै नमः आग्नेयदले
ॐ रत्यै नमः दक्षिणदले ॐ प्रीत्यै नमः नैऋत्यदले
ॐ कीर्त्यै नमः पश्चिमदले ॐ कान्त्यै नमः वायव्यदले
ॐ तुष्ट्यै नमः उत्तरदले ॐ पुष्ट्यै नमः ईशानदले

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छापूर्ति मन्त्र का जप प्रारम्भ किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों हाथों में एक पुष्प अथवा पुष्प की पंखुड़ी लें, और इच्छा पूर्ति मन्त्र का उच्चारण करते हुए उसे अर्पित कर दें।

इच्छा पूर्ति मन्त्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं कृष्णायै गोविन्दायै स्वाहा।।

इस प्रकार 108 बार यह मन्त्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह तर्पण प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पहले से जला कर रखे हुए दीप, अगरबत्ती तथा धूप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद ग्रहण करें।

इस प्रकार साधक एक महीने तक प्रतिदिन 108 बार इस मन्त्र का जप सम्पन्न करे तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

साधना सामग्री 550/-

2. वशीकरण सिद्धि : केशव प्रयोग

कृष्ण तो वशीकरण के साक्षात् स्वरूप है, इनकी ही साधना वशीकरण साधना में सर्वोत्तम कही गयी है, कृष्ण जन्माष्टमी के दिन सायंकाल यह पूजन सम्पन्न किया जाता है, सर्वप्रथम अपने सामने एक कांसे की थाली में 'क्लीं यन्त्र' स्थापित करें, साधक अथवा साधिका सुन्दर वस्त्र धारण करें, सुगन्धित द्रव्यों का, इत्र आदि का प्रयोग करें, वातावरण अत्यन्त प्रसन्नतामय एवं सुगन्धित होना चाहिए, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर यन्त्र को एक थाली में स्थापित कर केसर से पूजा कर एक पुष्प माला यन्त्र को चढ़ायें तथा दूसरी पुष्पमाला स्वयं पहनें।

अब सर्वप्रथम आठ महीषियों का पूजन आठ चावल की ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित कर सम्पन्न करें, कृष्ण की ये आठ महीषियाँ हैं–

रुक्मिणी, सत्यभामा, नग्नजित, कालिन्दी, मित्रविन्दा, लक्ष्मणा, जांबवन्ती एवं सुशीला।

अब 'क्ली यन्त्र' का पूजन सम्पन्न करें, यंत्र पर सिन्दूर से आठ बिन्दियाँ लगायें। इसके अतिरिक्त इस पूजन में पुष्प, मौली, सुपारी, चन्दन तथा काले अंजन का भी प्रयोग है, इसे भी मन्त्र जप के साथ-साथ क्लीं यन्त्र को अर्पित करना चाहिए, यह पूजन पूर्ण होने के पश्चात् साधक मन्त्र जप

सम्पन्न करें, अर्पित करने वाली सामग्री चढ़ाने के बाद चावल के दाने चढ़ाता रहे। यह मंत्र जप **वशीकरण माला** से करना चाहिए।

मन्त्र

।। क्लीं हृषीकेशाय नमः।।

इस मन्त्र की **ग्यारह माला जप** सम्पन्न करना है।

'गौतमीय तन्त्र' में लिखा है कि पूजन में चढ़ाई गई सामग्री को चूर्ण बना कर यदि एक चुटकी मात्रा में जिसे दिया जाय तो वह साधक के अनुकूल हो जाता है।

साधना सामग्री- 500/-

3. संतान गोपाल प्रयोग

यह साधना प्रयोग इसी रात्रि को पति-पत्नी दोनों साथ में बैठ कर पूर्ण पूजन सम्पन्न करें, अपने सामने दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं, थाली में मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'संतान गोपाल यन्त्र'** स्थापित कर उसका पूर्ण विधि से पूजन सामग्री का प्रयोग करते हुए पूजन करें तथा घी, शहद तथा शक्कर, तिल में मिला कर चढ़ाएं, पति-पत्नी दोनों पूर्ण श्रद्धा भक्ति से अपनी कामना पूर्ति की प्रार्थना करें, अपने हाथ में जल ले कर सर्वप्रथम निम्न संकल्प लें–

अस्य श्री सन्तान गोपाल मन्त्रस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्श्छन्दः सुतप्रदः कृष्णो देवता ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

तत्पश्चात् भगवान् कृष्ण का ध्यान कर अपनी इच्छा पूर्ति की प्रार्थना कर **'गोपाल माला'** से निम्न मन्त्र की **पांच माला** मन्त्र जप सम्पन्न करें।

सन्तान गोपाल मन्त्र

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वमहं शरणं गतः।।

मन्त्र जप पूर्ण हो जाने के पश्चात् कृष्ण आरती सम्पन्न कर भगवान् को भोग लगायें एवं नैवेद्य को प्रसाद स्वरूप में सभी को बांट कर स्वयं भी प्रसाद ग्रहण करें एवं इस यन्त्र को दूसरे दिन प्रातः स्नान कर अपने शयन कक्ष में स्थापित कर दें, तो साधक को निश्चय ही सफलता प्राप्त होती है। **यह प्रयोग संतान सप्तमी 03.09.22 को भी सम्पन्न किया जा सकता है।**

कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व ऐसा सिद्ध पर्व है, जो हर बाधा से पूर्ण मुक्ति दिला सकता है, इस पर्व के महत्व को समझते हुए इसका पूर्ण लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

साधना सामग्री- 500/-

आरती कुञ्जबिहारी की

आरती कुञ्जबिहारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की
गले में वैजंतीमाला,
बजावै मुरली मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला,
नंदके आनँद नँदलाला
गगन सम अंग कान्तिकाली,
राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक,
कस्तूरी-तिलक, चन्द्र सी झलक,
ललितछबि, श्यामा प्यारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......

कनकमय मोर मुकुट बिलसै,
देवता, दरसन कों तरसैं,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग,
मधुर मिरदंग, ग्वालनी संग,
अतुल रति गोपकुमारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......

जहाँ ते प्रगट भई गंगा,
कलुष कलि हारिणी श्री गंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी शिव सीस, जटाके बीच,
हरै अघ-कीच,
चरण छबि श्री बनवारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही बृंदाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चांदनी चन्द,
कटत भव-फन्द,
टेर सुनु दीन-भिखारी की।
श्री गिरधर कृष्णमुरारी की, आरती कुंज बिहारी की......

पारस या श्रीकृष्ण नाम

हमें चाहिए क्या.....????

'श्रीकृष्ण नाम' या 'पारस पत्थर'.... अति रोचक, शिक्षाप्रद, प्रेरणादायक कथा...

एक ब्राह्मण निर्धनता के कारण बहुत दु:खी था। जहां कहीं भी वह सहायता मांगने जाता, सब जगह उसे तिरस्कार मिलता। वह ब्राह्मण शास्त्रों को जानने वाला व स्वाभिमानी था।

उसने संकल्प किया कि जिस थोड़े से धन व स्वर्ण के कारण धनी लोग उसका तिरस्कार करते हैं, वह उस स्वर्ण को मूल्यहीन कर देगा। वह अपने आप से पारस प्राप्त करेगा और सोने की ढेरियां लगा देगा।

लेकिन उसने सोचा कि 'पारस' मिलेगा कहां ? ढूँढने से तो वह मिलने से रहा। कौन देगा उसे 'पारस'? देवता तो स्वयं लक्ष्मी के दास हैं, वे उसे क्या पारस देंगे?'

ब्राह्मण ने भगवान औघड़दानी शिव की शरण में जाने का निश्चय किया, जो विश्व को विभूति देकर स्वयं भस्मांगराग लगाते हैं। वे कपाली ही कृपा करें तो पारस प्राप्त हो सकता है।

ब्राह्मण ने निरन्तर भगवान शिव का रुद्रार्चन, पंचाक्षर मंत्र का जप और कठिन व्रत करना शुरू कर दिया।

आखिर भगवान आशुतोष कब तक संतुष्ट नहीं होते। ब्राह्मण की बारह वर्ष की तपस्या सफल हुई। भगवान शिव ने स्वप्न में दर्शन देकर कहा–''तुम वृन्दावन में श्री सनातन गोस्वामी के पास जाओ। उनके पास पारस है और वे तुम्हें अवश्य दे देंगे।'

'श्री सनातन गोस्वामी के पास पारस है और वे उस महान रत्न को मुझे दे देंगे। भगवान शंकर ने कहा है तो वे अवश्य दे देंगे।'–ऐसा सोचते हुए ब्राह्मण वृन्दावन की ओर चला जा रहा था। खुशी के मारे यात्रा की थकान व नींद उससे कोसों दूर चली गयी थी।

वृन्दावन पहुंचने पर उसने लोगों से श्री सनातन गोस्वामी का पता पूछा, लोगों ने वृक्ष के नीचे बैठे अत्यन्त कृशकाय (दुर्बल), कौपीनधारी, गुदड़ी रखने वाले वृद्ध को श्री सनातन गोस्वामी बतलाया।

चैतन्य महाप्रभुजी के शिष्य सनातन गोस्वामी वृन्दावन में वृक्ष के नीचे रहते थे, भिक्षा मांगकर जो भी मिल जाता, खाते, फटी लंगोटी पहनते और गुदड़ी व कमंडल साथ में रखते थे।

आठ प्रहर में केवल चार घड़ी सोते और शेष समय 'श्रीकृष्ण नाम' का कीर्तन करते थे।

एक समय वे विद्या, पद, ऐश्वर्य और मान में लिप्त थे, राज्य के कर्ता–धर्ता थे, किन्तु 'श्रीकृष्ण कृपा' से श्रीकृष्ण प्रेम की मादकता से ऐसे दीन बन गये कि परम वैरागी बनकर वृन्दावन से ही गोलोक पधार गए। ब्राह्मण ने मन में सोचा–'यह कंगाल सनातन गोस्वामी हैं, ऐसे व्यक्ति के पास पारस होने की आशा कैसे की जा सकती है, लेकिन इतनी दूर से आया हूँ तो पूछ ही लेता हूँ, पूछने में क्या जाता है?'

ब्राह्मण ने जब श्री सनातन गोस्वामी से पारस के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा–'इस समय तो मेरे पास नहीं है, मैं उसका क्या करता?'

क्योंकि – श्री सनातन गोस्वामी ने बताया कि एक दिन मैं यमुना स्नान को जा रहा था तो रास्ते में पारस पत्थर

पैर से टकरा गया। मैंने उसे वहीं यमुनाजी की रेत में गाड़ दिया जिससे किसी दिन यमुना स्नान से लौटते समय वह मुझे छू न जाए। क्योंकि उसे छूकर तो पुन: स्नान करना पड़ता है। तुम्हें चाहिए तो तुम उसे वहां से निकाल लो।'

'कंचन, कामिनी भगवान की विस्मृति कराने वाले हैं, इसलिये सच्चे संत पारस के छू जाने पर भर को अपवित्र मानते हैं'

श्री सनातन गोस्वामी ने जहां पारस गड़ा हुआ था, उस स्थान का पता ब्राह्मण को बतला दिया। रेत हटाने पर ब्राह्मण को पारस मिल गया।

पारस की परीक्षा पास करने के लिए ब्राह्मण लोहे का एक टुकड़ा अपने साथ लाया था। जैसे ही ब्राह्मण ने लोहे को पारस से स्पर्श किया वह स्वर्ण हो गया।

पारस सही मिला है, इससे अत्यन्त प्रसन्न होकर ब्राह्मण अपने गांव की ओर वापस चल दिया।

लेकिन तभी ब्राह्मण के मन में एक प्रश्न कौंधा....'उस संत के पास तो वह पारस था फिर भी उसने इसे अपने पास नहीं रखा, बल्कि यह कहा कि अगर यह छू भी जाए तो उन्हें स्नान करना पड़ता है। अवश्य ही उनके पास पारस से भी अधिक कोई मूल्यवान वस्तु है। 'श्रीकृष्ण नाम' है कल्पतरु।

ब्राह्मण लौटकर श्री सनातन गोस्वामी के पास आया और बोला–'अवश्य ही आपके पास पारस से भी अधिक मूल्यवान वस्तु है जिसके कारण आपने उसे त्याग दिया।'

ब्राह्मण को देखकर हंसते हुए श्री सनातन गोस्वामी ने कहा–'पारस से बढ़कर श्रीकृष्ण नाम रूपी कल्पवृक्ष मेरे पास है।'

पारस से तो केवल सोना ही मिलता है किन्तु 'श्रीकृष्ण नाम' सब कुछ देने वाला कल्पवृक्ष है, उससे आप जो चाहेंगे, वह प्राप्त होगा। ऐसा कोई कार्य नहीं जो भगवान के नाम का आश्रय लेने पर न हो। मुक्ति चाहोगे, मुक्ति मिलेगी; परमानन्द चाहोगे, परमानन्द मिलेगा;, व्रजरस चाहोगे व्रजरस मिलेगा।

श्रीकृष्ण का एक नाम सब पापों का नाश करता है, भक्ति का उदय करता है। भवसागर से पार करता है और अंत में श्रीकृष्ण की प्राप्ति करा देता है। एक 'कृष्ण' नाम से इतना धन मिलता है। यह सुनकर ब्राह्मण ने सनातन गोस्वामी जी से विनती की–'मुझे आप वही श्रीकृष्ण नाम रूपी पारस प्रदान करने की कृपा करें।'

श्री सनातन गोस्वामी ने कहा–''उसकी प्राप्ति से पहले आपको इस पारस को यमुना में फेंकना पड़ेगा।'

ब्राह्मण ने 'यह गया पारस' कहते हुए पूरी शक्ति से पारस को यमुना में दूर फेंक दिया।

भगवान शिव की दीर्घकालीन तपस्या व संत के दर्शन से ब्राह्मण के मन व चित्त निर्मल हो गए थे। उसका धन का मोह समाप्त हो गया और वह भगवान की कृपा का पात्र बन गया।

श्री सनातन गोस्वामी ने उसे 'श्रीकृष्ण नाम' की दीक्षा दी–वह 'श्रीकृष्ण नाम' जिसकी कृपा के एक कण से करोड़ों पारस बन जाते हैं। नाम रूपी पारस से तो सारा शरीर ही कंचन का हो जाता है।

श्री कृष्ण वचन....(कथन)

'जो मेरे नामों का निरंतर गान करके मेरे समीप प्रेम से रो उठता है, अपने आप को मुझे शरणागत कर देता है.... उनका मैं खरीदा हुआ गुलाम हूँ; जिसने एक बार श्रीकृष्ण नाम का स्वाद ले लिया उसे फिर अन्य सारे स्वाद रसहीन लगने लगते हैं।

भवसागर से डूबते हुए प्राणी के लिए वह नौका है। मोक्ष चाहने वाले के लिए वह सच्चा मित्र है, मनुष्य को परमात्मा से मिलाने वाला सच्चा गुरु है, अंत:करण की मलिन वासनाओं के नाश के लिए दिव्य औषधि है। यह मनुष्य को 'शुक' से 'शुकदेव' बना देता है।

अब फैसला आपको करना है कि .... चाहिए क्या?

पारस पत्थर या कृष्ण नाम

जय जय श्री राधे

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष - सप्ताह का प्रारम्भ श्रेष्ठ है। जमीन-जायदाद के कार्य में धन लाभ होगा। रुके हुये रुपये प्राप्त होंगे। भाग्योन्नति का अवसर है। प्यार में निराशा मिलेगी। अपनी गलत आदतों को कण्ट्रोल करें अन्यथा मान-प्रतिष्ठा खराब होगी। चलते-फिरते किसी से टकराहट हो सकती है, घर में मांगलिक कार्य होगा। कोई महत्वपूर्ण वस्तु खो सकती है। शत्रु बाधा पहुंचाने की कोशिश करेंगे। माह मध्य में सोचे अनुसार कार्य नहीं होंगे। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। रुके हुये कार्य इस समय पूरे होंगे परिश्रम का लाभ मिलेगा। आमदनी बढ़ेगी। जीवनसाथी से अनबन हो सकती है पारिवारिक जीवन तनाव पूर्ण रहेगा। शत्रुओं को पूरी तरह से जवाब दे सकेंगे। डरे बगैर मुकाबला करेंगे। आप इस माह **हनुमान दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30

वृष - प्रारम्भ के सप्ताह में परेशानियां आयेगी। कोई भी कार्य सोच-विचार कर करें। सोचे अनुसार कार्य नहीं होंगे। विरोधियों को जवाब देने में सक्षम रहेंगे। घर में कोई मांगलिक कार्य होगा। रुके रुपये प्राप्त होंगे। उच्च अधिकारियों का सहयोग मिलेगा। दूसरे सप्ताह में शत्रुओं से सावधान रहें। किसी के बहकावे में कोई गलत कार्य न करें। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। विद्यार्थियों के लिए अच्छा समय है। प्यार में सफलता मिलेगी। कोई महत्वपूर्ण समाचार मिल सकता है। संतान पक्ष से सहयोग मिलेगा। नौकरी भी मिल सकती है। व्यापार में उन्नति के आसार हैं। पुरानी बीमारी गम्भीर हो सकती है, मानसिक चिंताएं परेशान करेंगी। कार्य बीच में अटक जायेंगे। फिजूल खर्ची से बचें। गलत सोहबत नुकसान पहुंचायेगी। **कायाकल्प दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 12, 13, 14, 21, 22, 23, 31

मिथुन - माह का प्रारम्भ विजय दिलायेगा। उन्नति के अवसर हैं। परिवार में सदस्यों में सहयोग की भावना रहेगी। किसी भी कार्य को सोच-विचार कर स्टार्ट करें अन्यथा हानि हो सकती है। व्यापार में वृद्धि एवं आय के स्रोत बढ़ेंगे। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। कोर्ट केस में अनुकूलता मिलेगी। स्वास्थ्य थोड़ा खराब हो सकता है। अचानक कोई अशुभ समाचार मिलेगा। अपने ही हानि पहुंचाने की कोशिश करेंगे, विवादों से दूर रहें। सच्चाई का पथ कठिनाई भरा रहेगा। दृढ़ निश्चय से सफलता मिलेगी। आकस्मिक धनप्राप्ति के योग हैं। फालतू के खर्चों पर नियंत्रण रखें। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय है। किसी व्यक्ति से मुलाकात जीवन बदल देगी। वाहन ध्यानपूर्वक चलायें, किसी से उलझें नहीं एवं विश्वास सोच-समझकर कर करें। **सम्मोहन दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 14, 15, 16, 24, 25, 26

कर्क - प्रारम्भ शुभ घटना से होगा। सूझबूझ से परेशानियां हल कर सकेंगे। व्यापार के कार्य में सतर्कता रखें। सरकारी कर्मचारी को लाभ की सम्भावना है। धैर्य और साहस बनाये रखें। पति-पत्नी के मतभेद समाप्त होंगे। विद्यार्थियों के लिए उत्तम समय है। ऐसे व्यक्ति से मुलाकात होगी जो आपको प्रेरणा देगी। कोई भी गलत कार्य न करें। प्रेमी-प्रेमिका का प्यार सफल होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय अनुकूल नहीं है। आप महत्वपूर्ण कार्य स्वयं करना पसन्द करेंगे। धन आगमन से खर्च अधिक होगा। महत्वपूर्ण कागजात पर किसी के दबाव में हस्ताक्षर न करें। संतान पक्ष आपके कहे अनुसार कार्य करेगा। भाग्योन्नति के अवसर हैं। आपके कार्य से उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। पहाड़ों पर यात्रा हो सकती है। **भाग्योदय दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

सिंह - प्रारम्भ शुभ घटना से होगा। सपने पूरे होते दिखाई देंगे। मित्रों का सहयोग मिलेगा। विदेश यात्रा के योग हैं। नया वाहन इस समय न खरीदें। जल्दी पैसे कमाने के चक्कर में न पड़ें। सेहत अच्छी नहीं रहेगी। अचानक कोई मुसीबत घेर लेगी। कोई टेंशन भी हो सकती है व्यापार में नुकसान की सम्भावना है। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। किसी अच्छे व्यक्ति से मुलाकात होगी, जिसके सकारात्मक विचार प्रेरणा देंगे। प्रोपर्टी डीलर के कार्य में लाभ होगा। तीसरे सप्ताह में संभल कर निर्णय लें। सम्मान की प्राप्ति होगी। माह के अन्त में व्यापार के सिलसिले में की गई यात्रा लाभदायक होगी। मनोकामना पूर्ण होगी। परिवार में खुशी का माहौल रहेगा, पुराने मामले निपट जायेंगे। आप **सर्व मनोकामना पूर्ति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30

कन्या - सप्ताह का प्रारम्भ किसी प्रतिकूल घटना से होगा, चिंतित रहेंगे। किसी भी महत्वपूर्ण कागजात पर बिना पढ़े हस्ताक्षर न करें। दूसरों के वाद-विवाद में न पड़ें। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में रुचि रखेगा। नौकरीपेशा लोग उच्च अधिकारी से न उलझें। शत्रु व्यापार में हानि पहुंचाने की चेष्टा करेंगे। अचानक किसी मुसीबत में फंस सकते हैं। जमीन-जायदाद का बंटवारा खुशीपूर्वक हो जोयगा। भाइयों के मतभेद दूर होंगे। व्यापार के सिलसिले में की गई यात्रा लाभ देगी। अचानक

कोई अशुभ समाचार मानसिक तनाव पैदा करेगा। लापरवाही न करें अन्यथा नुकसान होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। अच्छे व शुभ समाचानर सुनने को मिलेंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दूसरों के भरोसे महत्वपूर्ण कार्य न छोड़े। आप **गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 12, 13, 14, 21, 22, 23, 31

तुला - प्रारम्भ शुभप्रद होगा। आप मेहनत एवं कर्मठता से विकास कर सकेंगे। शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे। कोई छोटी बात विवाद को बढ़ा देगी। यात्रा सफलतादायक रहेगी। यह समय आपके लिए मन की एकाग्रता एवं यौगिक क्रियाओं के लिए शुभ है। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। कार्यों में उचित परिणाम मिलेंगे। जल्दी रुपया कमाने के चक्कर में न पड़ें। पारिवारिक जीवन में तनाव हो सकता है। माह के मध्य में लिये फैसले आप के पक्ष में रहेंगे। किसी अपने का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। मित्रगण इस समय सहयोग नहीं करेंगे। जोखिमभरे कार्यों से दूर रहें। आखिरी सप्ताह में जीवन सन्तुष्टिपूर्ण रहेगा। परिवार में सहयोग रहेगा। नौकरीपेशा के हालात संतोषप्रद नहीं होंगे। छोटी-छोटी बातों पर वाद-विवाद हो सकता है। आप **कुण्डलिनी जागरण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 14, 15, 16, 24, 25, 26

वृश्चिक - माह का प्रारम्भ उत्साहपूर्ण रहेगा। कठिन परिश्रम से मंजिल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। कोर्ट केस का निपटारा पक्ष में रहेगा। अविवाहितों के रिश्ते की बात चलेगी। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, विदेश यात्रा का योग। पुत्र आपके नाम को रोशन करेगा। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर मिलेंगे। कोई नया कार्य सोच-समझकर शुरू करें। किसी के बहकावे में न आयें। गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति रहेगी। वाणी में संयम बरतें। बुद्धि-विवेक से हर क्षेत्र में सफलता पा सकेंगे। अचानक लाभ की स्थिति बनेगी। शत्रु वर्ग परास्त रहेगा। अन्तिम सप्ताह में शत्रुओं से सावधान रहें। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। शुभ-चिंतकों की सलाह पर विचार कर आगे बढें। स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें। **सर्व कार्य सिद्धि दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

धनु - प्रारम्भ में अच्छे परिणाम मिलेंगे। प्रयास सफल होंगे। शत्रु वर्ग को परास्त कर सकेंगे। प्रोपर्टी के कार्य में लाभ होगा। चलते-फिरते किसी से टकराहट होने पर संयम से कार्य लें। कोई छुपा राज खुल सकता है। किसी और के कारनामे आप को भुगतने पड़ सकते हैं। किसी के बहकावे में कोई गलत कदम न उठायें। विद्यार्थी वर्ग पढ़ाई में दिलचस्पी रखेगा। अपनो से मतभेद हो सकते हैं। स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। माह के मध्य में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। सरकारी नौकरी का मौका मिलेगा। गलत सोहबत से दूरी बनाकर रखें, फिजूलखर्ची से दूर रहें। मानसिक टेंशन में रहेंगे। प्रतिष्ठा पर आंच आ सकती है। आखिरी सप्ताह में व्यापार में उन्नति सम्भव है। यात्रा से लाभ होगा। आप **व्यापार वृद्धि दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 10, 11, 12, 19, 20, 21, 29, 30

मकर - माह के प्रारम्भ में प्रसन्नचित्त रहेंगे। लेकिन अचानक कहीं से मुसीबत घेर लेगी। समय पक्ष में नहीं होने से परेशानियां बढ़ेंगी। आर्थिक तंगी भी रहेगी। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। धीरे-धीरे सुधार होगा। नये व्यापार को प्रारम्भ करने में सफलता मिलेगी। जमीन-जायदाद के मामले सुलझेंगे। कम्प्यूटर के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्यार में सफलता मिलेगी। माह के मध्य में दुविधा की स्थिति हो सकती है। कोई पुरानी बीमारी उभर सकती है। परिवार से सहयोग नही मिलेगा। आय के स्रोत खुलेंगे। परिश्रम से सफलता मिलेगी। रुके रुपये प्राप्त होंगे, दूसरों का हित करेंगे। संतान पक्ष से चिंता रहेगी। घर में टेंशन हो सकती है। किसी बात पर परेशानी आ सकती है। माह का अंत सतर्क रहने का है। लम्बी दूरी की यात्रा सम्भव है। आप **विघ्ननाशक गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 4, 5, 6, 12, 13, 14, 21, 22, 23, 31

कुम्भ - सप्ताह का प्रारम्भ शुभ है। नवीन वस्तुओं की खरीददारी होगी। सभी कार्य समय पर पूरा कर सकेंगे। कामयाबी मिलेगी। तत्पश्चात् के समय में कोई घटना परेशान करेगी। जमीन-जायदाद के मामलों की दिक्कतें दूर होगी। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रुओं से सावधान रहने की जरूरत है। कार्यों में बाधायें महसूस करेंगे। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। गृहस्थ जीवन में अनबन हो सकती है। जल्दबाजी में लिया गया कोई निर्णय गलत साबित हो सकता है। तीसरे सप्ताह में जीवन में वैराग्य जैसी स्थिति महसूस करेंगे। ज्ञान वृद्धि की ओर अग्रसर होंगे। आखिरी सप्ताह में आय के साधनों में वृद्धि होगी। अटके रुपयों की प्राप्ति होगी। विद्यार्थियों के लिए सफलतादायक समय है। कर्मचारी वर्ग का ऑफिस में छोटी-सी बात पर वाद-विवाद हो सकता है। क्रोध पर नियंत्रण रखें। वाहन चलाते समय सावधानी रखें। **हनुमान दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 6, 7, 8, 14, 15, 16, 24, 25, 26,

मीन - माह का प्रारम्भ सामान्य है। जमीन के सौदे में लाभ होगा, नये मित्र बनेंगे। कोई व्यक्ति आपको हानि पहुंचाने की चेष्टा करेगा। सतर्क रहें। नशीले पदार्थों से दूर रहें। व्यापार में आर्थिक उन्नति होगी। सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। पति-पत्नी में प्यार की भावना बढ़ेगी। अत्यधिक विश्वासी कोई मित्र धोखा दे सकता है, जिससे क्षति उठानी पड़ेगी। लम्बी दूरी की यात्रा हो सकती है। किसी सज्जन पुरुष से मुलाकात प्रेरणादायक रहेगी। तीसरे सप्ताह में कोई भी कार्य सोच-समझकर करें। इस समय लाभ के साथ हानि भी हो सकती है। दूसरों के विवादों से दूर रहें। खर्च पर नियंत्रण रखें। अविवाहितों के लिए नये रिश्ते आयेंगे। शेयर आदि में लाभ होगा। आखिरी तारीख पर कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। आलस्य से दूर रहें। आप **माँ दुर्गा दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 8, 9, 10, 17, 18, 26, 27, 28

सर्वार्थ सिद्धि योग	-	अगस्त-3, 20, 22, 25
अमृत सिद्धि योग	-	अगस्त-20, 22, 25
रवि योग	-	अगस्त-4, 7, 8, 18, 30, 31
गुरु पुष्य योग	-	अगस्त-25 (प्रातः 6.18 से शाम 4.15 तक)

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

02.08.22	मंगलवार	नाग पंचमी
08.08.22	सोमवार	पवित्रा एकादशी
11.08.22	गुरुवार	रक्षा बंधन
14.08.22	रविवार	कज्जली तृतीया
15.08.22	सोमवार	गणेश बहुला चतुर्थी
19.08.22	शुक्रवार	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
30.08.22	मंगलवार	हरितालिका तृतीया
31.08.22	बुधवार	सिद्धि विनायक व्रत

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (अगस्त-7, 14, 21, 28)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (अगस्त-1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (अगस्त-2, 9, 16, 23, 30)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (अगस्त-3, 10, 17, 24, 31)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (अगस्त-4, 11, 18, 25)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (अगस्त-5, 12, 19, 26)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (अगस्त-6, 13, 20, 27)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त-22

11. आज भगवान नारायण का पूजन करें, भोग लगायें।
12. आज गायत्री मंत्र का 1 माला जप करके जाएं।
13. पूजन के बाद सरसों का तेल कुछ दक्षिणा के साथ दान करें।
14. भगवान सूर्य को अर्घ्य प्रदान करें।
15. भगवान गणेश को लड्डुओं का भोग लगायें।
16. आज ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः का 21 बार जप करके जाएं।
17. महालक्ष्मी जी की आरती करके जाएं।
18. किसी भी देवी मन्दिर में लाल पुष्प चढ़ायें।
19. आज कृष्ण जन्माष्टमी पर प्रातः भगवान कृष्ण का पूजन करें।
20. निम्न मंत्र का 5 मिनट जप करें-ॐ शं शनैश्चराय नमः।
21. आज सद्गुरुदेव जन्मदिवस पर 16 माला गुरु मंत्र करें।
22. आज एकादशी पर किसी असहाय को अन्न दान करें।
23. आज गौमाता का पूजन करें, उसे रोटी खिलायें।
24. निम्न मंत्र का 1 माला जप करके जाएं-ॐ महालक्ष्म्यै नमः।
25. आज पीपल के पेड़ में जल अर्पित करें।
26. मां दुर्गा का मंत्र ॐ दुं दुर्गाय नमः का 21 बार जप करके जाएं।
27. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय का 21 बार जप करके जाएं।
28. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
29. प्रातः शिवलिंग पर अभिषेक करें।
30. आज शिव गौरी (सौभाग्य प्राप्ति हेतु) की पूजा करें।
31. आज गणपति मंत्र-ॐ गं गणपतये नमः का 21 बार उच्चारण करके जाएं।

सितम्बर-22

1. प्रातः पूजन के बाद 'ॐ' का 11 बार दीर्घ उच्चारण करें।
2. आज भगवान सूर्य को अर्घ्य दें फिर उसकी तीन प्रदक्षिणा करके उनसे समस्त रोग निवारण की प्रार्थना करें।
3. आज परिवार में सुख शांति हेतु शिव गौरी की पूजा करें।
4. प्रातःकालीन उच्चरित वेद ध्वनि का श्रवण करके जाएं।
5. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय की 1 माला मंत्र जपकरके जाएं।
6. हनुमान बाहु (न्यौछावर 90/-) धारण करें, बाधाएं समाप्त होंगी।
7. तुलसी के वृक्ष के पास दीपक जलायें।
8. आज धूमावती गुटिका (न्यौ. 150) धारण करें, घर की बाधाएं समाप्त होंगी।
9. आज अनंत चतुर्दशी है। प्रातः ॐ अनन्ताय नमः का 1 माला जप करें।
10. किसी असहाय को भोजन करायें।

शनैश्चरी अमावस्या -27.08.22

रोग नाशार्थ राहू प्रयोग

नौ ग्रहों में राहू एक मात्र ऐसा ग्रह है, जो मानव जीवन के समस्त रोगों को शान्त एवं समाप्त करने में सक्षम है, चाहे वह रोग किसी भी वजह से हुआ हो,

चाहे किसी भी प्रकार की ग्रह बाधा हो, और चाहे दैविक अथवा भौतिक किसी भी प्रकार का रोग हो, राहु प्रयोग से वह रोग समाप्त हो सकता है।

इस प्रयोग को रोगी स्वयं कर सकता है, या घर का कोई सदस्य किसी अन्य के लिए भी यह प्रयोग कर सकता है, दिखने में भले ही यह प्रयोग सामान्य प्रतीत हो, पर पत्रिका पाठकों के लिए यह प्रयोग वरदानस्वरूप है, और इस प्रयोग से वह किसी भी प्रकार के रोग का शमन कर सकता है।

बुखार, हार्ट अटैक, ब्लड प्रेसर, डायबिटीज, मोटापा, आँखों की रोशनी कम होना, पेशाब से सम्बन्धित रोग, गर्भाशय से सम्बन्धित रोग आदि सभी प्रकार के रोगों का उपाय इस राहू प्रयोग से प्राप्त किया जा सकता है।

और यह स्पष्ट है, कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से आने वाली विपत्ति, बाधाएं और बीमारियां पहले से ही समाप्त हो जाती हैं, एक प्रकार से देखा जाय तो यह आने वाले अशुभ समय को नियंत्रण में लेने का प्रयोग है। इससे बाल रक्षा तो होती ही है, यदि बालक बीमार हो या कमजोर हो या उसे किसी प्रकार की तकलीफ हो, तो उसके लिए भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना प्रयोग

**इस साधना प्रयोग में 'राहु महायंत्र' की आवश्यकता होती है,
जो कि रोग शमनार्थ प्रयोग से सिद्ध होना चाहिए, इसके अलावा 'राहू माला' की आवश्यकता होती है।**

प्रयोग करते समय यदि साधक स्वयं के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे, तो खुद का नाम उच्चारण करे या किसी अन्य के लिए या परिवार के किसी सदस्य के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करे तो उसका नाम का उच्चारण करे।

इस प्रयोग में तीन माला मंत्र जप आवश्यक है, इसके अलावा यदि तेल का दीपक लगाया जाय तो उचित है, अन्यथा कोई विशेष आवश्यकता नहीं होती। साधक सबसे पहले हाथ में जल लेकर संकल्प करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक नाम का साधक अमुक व्यक्ति के लिए अमुक प्रकार के रोग को समाप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ।

- फिर हाथ में काले तिल और एक पीला पुष्प लेकर रोगी पर सात बार घुमायें और सामने वह सामग्री किसी पात्र में रख दें, इसके बाद निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जप करें।
- इसके बाद पुनः वह सामग्री रोगी पर सात बार घुमायें और बाद में उसे जहाँ तीन रास्ते मिलते हों, वहाँ फिकवा दें, या गड़वा दें।
- इसके बाद अर्थात् मंत्र जप पूरा होने पर रोगी को चाहिए कि वह साधक के पैर छूकर प्रणाम करे और साधक आशीर्वाद स्वरूप उसकी पीठ या सिर पर थपकी दे।
- **इस प्रकार प्रयोग समाप्त होता है, परन्तु जिस दिन यह प्रयोग सम्पन्न होता है, उसी दिन से रोगी को आराम मिलना प्रारम्भ हो जाता है, यदि साधक उचित समझे तो उसी रोगी पर यह प्रयोग तीन-चार बार भी कर सकता है, पर एक दिन में एक बार ही प्रयोग करना चाहिए।**
- इस प्रयोग को **27.08.22** को किया जा सकता है, परन्तु रविवार, मंगलवार, शुक्रवार और शनिवार चार दिन ही प्रयोग करना चाहिए। सोम, बुध, गुरुवार को किसी भी रोगी पर यह प्रयोग सम्पन्न नहीं किया जा सकता। यह राहू यंत्र जीवनभर उपयोगी रहता है।

राहू महामंत्र

।। ॐ क्लीं क्लीं रोग नाशार्थ राहवे क्लीं क्लीं फट् ।।

उपरोक्त मंत्र की तीन माला ही फेरनी पर्याप्त है, जब प्रयोग सम्पन्न हो जाय
तब यह माला और महायंत्र घर में कहीं पर भी किसी भी स्थान पर रख सकते हैं।

और अगली बार फिर इस माला और इस महायंत्र का प्रयोग किया जा सकता है।

वस्तुतः यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस प्रयोग को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है। तथा दिन या रात्रि को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए आसन, दिशा आदि की कोई व्यवस्था नहीं है, साधक किसी भी प्रकार के आसन पर और किसी भी दिशा की ओर मुंह कर बैठ सकता है।

पाठकों एवं साधकों के लिए यह प्रयोग वरदान स्वरूप है और उन्हें इस प्रयोग को आजमाना चाहिए, मुझे विश्वास है कि निश्चय ही वे साधक अपने प्रत्येक उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे

साधना सामग्री-500/-

अनन्त चतुर्दशी - 09.09.22
॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥
यह गुरु मंत्र भी है और नारायण मंत्र भी है नारायण अर्थात् भगवान विष्णु जो जगत् के पालक हैं,
जो पुरुष तत्व को प्रकट करते हैं जिनके साथ प्रकृति लक्ष्मी सहचरी रहती है
अनन्त चतुर्दशी पर प्रत्येक पुरुष अवश्य करें
नारायणाक्षी साधना
श्रीकृष्ण की आज्ञा से युधिष्ठिर ने भी अनन्त विष्णु की साधना वनवास काल
में सम्पन्न की जिसके प्रभाव से पाण्डव महाभारत युद्ध में विजयी हुए और
अन्याय को पराजित कर न्याय धर्म का राज्य स्थापित कर सके,
यही साधना का प्रभाव है

पर आज का वातावरण इतना विषैला है, कि व्यक्ति अगर पवित्र, निर्मल जीवन जीना भी चाहे, तो यह प्रायः असम्भव ही है... क्योंकि आज भोग और विलास का आकर्षण अति प्रबल है, खान-पान में पवित्रता नहीं, यहां तक कि वायु, जो श्वास क्रिया के लिए उपयोगी है, वह भी दूषित है... ऐसी विपरीत परिस्थितियों में व्यक्ति बेशक, चाहता तो बहुत कुछ है, पर अंततः हार मान लेता है और झुंझला उठता है.... जीवन में निराश हो जाता है और थक हार कर बैठ जाता है....

निश्चित ही इसमें उसका कोई दोष नहीं, क्योंकि ऐसी स्थिति में कोई कर ही क्या सकता है? पर फिर से हमारा साहित्य, इतिहास इस बात का गवाह है, कि जिस व्यक्ति के अंदर अटूट विश्वास, जीवन शक्ति और दृढ़ निश्चय हो, उसके साथ वही साधनात्मक शक्ति प्राप्त कर ले, तो फिर कोई भी इस संसार में उसकी उन्नति को रोक नहीं सकता...

ऐसी ही एक अद्वितीय साधना **'नारायणाक्षी प्रयोग'**; जिसे सम्पन्न करने से व्यक्ति सहज ही अपनी सभी कमियों को मूल से ही नष्ट कर, सभी प्रकार से श्रेष्ठता प्राप्त कर सकता है। कमियां व्यक्ति के जीवन में अनेक हैं - दरिद्रता, रोग, शत्रु भय, मुकदमे आदि; अवगुण भी जीवन में अनेक हैं-काम, क्रोध, मोह, लोभ, प्रमाद आदि; इनको इस मन से पूर्ण रूप से समाप्त कर व्यक्ति अपना पुनः निर्माण कर सकता है, और धन, ऐश्वर्य, शत्रु-दमन, रोगमुक्ति की स्थिति प्राप्त कर, एक निर्मल एवं पवित्र जीवन की ओर अग्रसर हो सकता है...

...और अगर व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर लेता है, तो फिर कोई विपरीत परिस्थिति उसके लिए बाधा नहीं बन सकती। वह उन सब से अछूता रहता हुआ निरन्तर अपने मार्ग पर गतिशील रहता है, जो प्राचीनकाल से ही अत्यधिक सम्माननीय रही है -

अनन्त चतुर्दशी वास्तव में भगवान विष्णु का प्रिय पर्व है..... उन भगवान नारायण का, जिनके सो जाने पर समस्त प्रकृति एवं ब्रह्माण्ड में प्रलय की स्थिति बन जाती है और जब वे पुनः जाग जाते हैं, तो उनके आदेश से ब्रह्मा नवीन सृष्टि का निर्माण करते हैं....
जिस प्रकार से सृष्टि का विनाश एवं निर्माण होता ही रहता है, उसी प्रकार मानव जीवन में भी यह क्रिया निरन्तर गतिशील रहती है... विभिन्न इच्छाएं, गुण, दोष उभरते रहते हैं, तो साथ ही साथ नष्ट भी होते रहते हैं.... पर विचारवान एवं ज्ञानवान व्यक्ति वही है, जो अपने जीवन के सभी कुसंस्कारों, अवगुणों एवं कमियों को नष्ट करता हुआ, अपने जीवन में शुभ लक्षणों एवं स्थितियों का निर्माण करे.... कुछ ऐसा करे, जिससे वह सामान्य स्तर से, एकदम से छलांग लगाता हुआ अद्वितीयता की श्रेणी में जाकर खड़ा हो जाए.... जहां पर फिर वह कभी प्रकार के पाशों से मुक्त हो, एक दिव्य पथ का पथिक बन कर जीवन को सार्थक बना सके।

प्रह्लाद 'नारायणाक्षी प्रयोग' को सम्पन्न करके तीनों लोकों के स्वामी बन सके...पांडवों ने भी प्रयोग को सम्पन्न किया, जो महाभारत दुर्धुर्ष महासंग्राम में विजयश्री प्राप्त करने में सहयोगी बने और बार-बार कठिनाइयों का सामना करते हुए भी वे लाभ प्राप्त कर सके...

तिब्बत के लामा औलम्म के अनुसार यह प्रयोग अपने आप में ही सर्वश्रेष्ठ है, और जो कोई भी इसको जीवन में एक बार सम्पन्न कर लेता है, उसे फिर जीवन में कुछ और करने की आवश्यकता नहीं रहती है।

ऐसे कितने ही उदाहरण हैं, जब इस साधना को सम्पन्न कर व्यक्ति अपने जीवन का अभीष्ट प्राप्त कर सका।

'नारायणाक्षी' का अर्थ है नारायण का नेत्र, और विष्णु के बारे में कहा गया है-

सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपाद्।
स भूमि (गू) सर्वतस्पृत्वात्यष्ठिद्दशांगुलम्।।

जो व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न कर लेता है वह स्वयं नारायण के समान चेतनावान, क्षमतावान हो जाता है। उसकी सभी इन्द्रियां पूर्णतः जाग्रत हो जाती हैं और हर क्षण गतिशील रहती हैं, जिसके फलस्वरूप वह आसानी से किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित कर लेता है।

इस साधना को सम्पन्न करने से निम्न स्थितियां व्यक्ति के जीवन में आ जाती है–

1. **घर में लक्ष्मी का चिर निवास रहता है, क्योंकि जहां नारायण हैं, वहां लक्ष्मी होती ही हैं और इस प्रकार से किसी प्रकार की कमी, कठिनाई उसके जीवन में नहीं आ पाती, और वह आनन्द का जीवन जीता है।**
2. उसके सभी शत्रु समाप्त हो जाते हैं। अगर कोई मुकदमा चल रहा हो, तो उसका निर्णय उसके पक्ष में हो जाता है।
3. व्यक्ति रोगी हो, तो भयंकर रोग कुछ ही दिनों में अंदर जड़-मूल से नष्ट हो जाता है और व्यक्ति प्रसन्नचित्त हो, स्वस्थ जीवन जीने लगता है।
4. उसके अंदर के सभी विकार, कुत्सित भावनाएं नष्ट हो जाती हैं और उसका मन पूर्णतः निर्मल हो जाता है। इस प्रकार से वह चाहे किसी भी वातावरण में रहे, उससे अछूता रहता हुआ एक दिव्य पथ की ओर अग्रसर होने लग जाता है। सीधे शब्दों में, जहां वह भौतिकता में श्रेष्ठता प्राप्त करता है, तो वहीं अध्यात्म की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेता है।
5. **उस व्यक्ति में सम्मोहन व्याप्त हो जाता है, उससे मिलने वाला हर व्यक्ति उसकी ओर स्वतः ही आकृष्ट हो जाता है।**
6. आने वाले समय के बारे में उसे पहले ही ज्ञान हो जाता है, जिससे वह फिर उसी के अनुसार कार्य करता है 'नारायणाक्षी' का अर्थ ही है, कि दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाना।
7. इसके अलावा भी इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों ही पक्षों में सफलतायुक्त होता है और उसे सहज ही यश, मान, प्रतिष्ठा, प्रेम आदि प्राप्त होता है।

साधना विधान

- यह साधना अनन्त चतुर्दशी (09.09.22) को सम्पन्न करें या फिर किसी भी गुरुवार को सम्पन्न करें।
- यह साधना रात्रिकालीन है। इसके लिए साधक को 'नारायणाक्षी दिव्य यंत्र', 'लोचन' एवं 'नारायणाक्षी माल्य' की आवश्यकता होती है।
- सर्वप्रथम साधक स्नान कर रात्रि में दस बजे स्वच्छ श्वेत वस्त्र धारण कर, उत्तर दिशा क ओर मुंह करके बैठें।
- अपने सामने बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर कुंकुम से आंख की आकृति बना कर, उस पर 'नारायणाक्षी यंत्र' स्थापित कर उसका विधिवत् पंचोपचार पूजन करें। इसके पश्चात् नारायण-ध्यान करें–

ध्यान–

करुणापरायणपदं श्रुति शास्त्रसारं,
ध्यायामि सत्यार्थ परं प्रसन्नं।
तं चिन्तयामि सततं भवरोग वैद्यम्,
नमोऽस्तु नारायण देव देवम्।।

- उसके बाद यंत्र पर 'लोचन' अर्पित कर साधना में सफलता के लिए प्रार्थना करें। अगर कोई विशेष मनोकामना हो तो उसका उच्चरण करें।
- इसके पश्चात् 'नारायणाक्षी माल्य' से निम्न मंत्र का 21 माला जप करें–

मंत्र

।। ॐ ह्रीं नमो नारायण अनन्ताय श्रीं ॐ नमः।।

- यह एक दिवसीय साधना है। साधना के उपरान्त यंत्र, माला तथा गुटिका को किसी विष्णु मंदिर अथवा जलाशय में अर्पित करें। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है।

साधना सामग्री - 570/-

शास्त्रों में पूर्ण धन और ऐश्वर्य की देवी को भुवनेश्वरी माना है

यही एक महाविद्या है जो आकस्मिक धन प्रदान करने में समर्थ।

श्री भुवनेश्वरी खड्ग माला सिद्धि

शाक्त प्रमोद के अनुसार जो साधक जीवन में एक बार भुवनेश्वरी सिद्ध कर लेता है, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रहती ही नहीं।

इस सिद्धि दिवस के अवसर पर पूर्ण श्रद्धा भाव से निम्न प्रयोग सम्पन्न करने से साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और भुवनेश्वरी के प्रत्यक्ष दर्शन भी हो सकते हैं।

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

इस पूरी साधना में 'भुवनेश्वरी खड्ग माला' का विशेष महत्व है। इस माला को ही इस साधना में सिद्ध किया जाता है और माला धारण करने पर हर क्षण भुवनेश्वरी साधक के साथ रहती हुई उसकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण करती है।

इसको सिद्ध करने पर अन्य समस्त प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं, इसलिए प्रयत्न करके भी साधक को भुवनेश्वरी जयंती दिवस के अवसर पर यह गोपनीय और दुर्लभ प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

सबसे पहले साधक सिद्धि दिवस की रात्रि को स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर सफेद आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें। सामने पात्र में **भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला** रख दें, यह माला जीवन की दुर्लभ और महत्वपूर्ण माला कही जाती है, जिसे 108 महादेवियों के मंत्र से सिद्ध किया जाता है, इसका प्रत्येक मनका अपने आप में महत्वपूर्ण होता है।

माला को स्थापन करने के बाद **'ॐ भुवनेश्वर्यै नमः'** का 108 बार उच्चारण कर प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक करें और फिर उस पर पुष्प अर्पित करें और फिर निम्न प्रकार से विनियोग करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी-खड्ग-माला-मन्त्रस्य श्रीप्रकाशात्मक ऋषिः, गायत्री छन्दः श्रीभुवनेश्वरी देवता, हं बीजं, ई शक्तिः रं कीलकं, श्री भुवनेश्वरी-पराम्बा-प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद साधक बताये हुए अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करते हुए ऋष्यादि न्यास करें।

ऋष्यादि न्यास

श्री प्रकाशात्मा-ऋषये नमः शिरसि, गायत्री-छन्दसे नमः मुखे, श्रीभुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि, हं वीजाय नमः गुह्ये, इ शक्तये नमः पादयोः, रं कीलकाय नमः नाभौ, श्रीभुवनेश्वरी-पराम्बा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

और फिर पूर्ण मनोयोग पूर्वक अपने हाथों में पुष्प लेकर इस माला को पुष्प समर्पित करते हुए निम्न ध्यान सम्पन्न करें।

ध्यान

स्मरेद् रवीन्द्वग्नि-विलोचना तां,
सत्-पुस्तकां जाप्य-वटीं दधानाम्।
सिंहासनां माध्यम-यन्त्र-संस्थां,
श्रीतत्त्व-विद्या पराम्बा भजामि।।
य एनां सचिन्तयेन्मन्त्री सर्व-कामार्थ सिद्धिदाम्।
तस्य हस्ते सदैवास्ति, सर्व-सिद्धिर्न संशयः।।
तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्त-स्थितेत वै।
अष्टादश-महाद्वीपे सम्राट् भोक्ता भविष्यति।।

सिद्धि प्रयोग

इसके बाद सामने पात्र में जो **भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला** रखी हुई है, उसके सामने निम्न दुर्लभ बीज मंत्र का उच्चारण करते हुए, एक-एक पुष्प समर्पित करें। इसी प्रकार निम्न बीज मंत्र का इसी रात्रि को 108 बार पाठ करें और प्रत्येक पाठ की समाप्ति पर एक पुष्प खड्ग माला को समर्पित करें। इस प्रकार 108 बार पाठ कर 108 पुष्प समर्पित करें।

शास्त्रों में कहा गया है कि भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला पर 108 गुलाब के पुष्प समर्पित करें पर यदि किसी कारणवश गुलाब के पुष्प प्राप्य न हों तो अन्य किसी भी प्रकार के पुष्प का प्रयोग किया जा सकता है।

भुवनेश्वरी शक्ति खड्ग माला बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं भुवनेश्वरी-हृदय-देवि शिरोदेवि शिखा-देवि कमल-देवि नेत्र-देव्यस्त्र-देवि कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये श्रीभुवनेश्वरि दिव्यौध गुरू-रूपिणि सिद्धौघ-गुरू-रूपिणि मानवौधगुरू-रूपिणि श्री गुरू-रूपिणि परम-गुरू-रूपिणि परात्पर-गुरू-रूपिणी परमेष्ठि-गुरू-रूपिणि अमृत भैरव- सहित-श्रीभुवनेवरि हृदय-शक्ति शिरः शक्ति शिखा-शक्ति कवच-शक्ति नेत्र-शक्त्यस्त्र-हल्लेखे गगने रक्ते करालिके महोच्छूष्मे सर्वानन्दमय-चक्र-स्वामिनी!

गायत्री-सहित-ब्रह्म-मयि सावित्री-सहित-विष्णुमयि सरस्वती-सहित- रूद्र-मयि लक्ष्मी-सहित-कुबेर-मयि रति सहित-काम-मयि पुष्टि-सहित- विघ्न-राज-मयि शङ्ख-निधि-सहित-वसुधा-मयि पद्म-निधि-सहित- वसुमति-मयि गायत्र्यादि-सह- श्री भुवनेश्वरि ह्रां हृदय-देवि ह्रीं शिरो-देवि ह्रैं कवच-देवि ह्रौं नेत्र-देवि ह्र अस्त्र-देवि सर्व सिद्धिप्रद-चक्र -स्वामिनि !

अनङ्ग-कुसुमे अनङ्ग-कुसुमातुरे अनङ्ग-मदने अनङ्ग मदनातुरे भुवन-पाले गगन वेगे शशि-रेखे अनङ्ग वेगे सर्व-रोग-हर चक्र-स्वामिनि !

कराले विकराले उमे सरस्वति श्रीदुर्गे उषे लक्ष्मि श्रुति स्मृति धृति श्रद्धे मेधे रति कान्ति आर्ये सर्व संक्षोभण-चक्र-स्वामिनि !

ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराही इन्द्राणि चामुण्डे महा-लक्ष्म्यनङ्ग-रूपेऽनङ्ग-कुसुमे मदनातुरे भुवने-वेगे भुवन पालिके सर्व- शिशि-रेऽनङ्ग मदनेऽनङ्ग मेखले सर्वाशा- परिपूरक- चक्र-स्वामिनि !

इन्द्र मय्यग्नि-मयि यम-मयि निऋति-मयि वरूण-मयि वायु-मयि सोम-मयि-ईशान-मयि ब्रह्म-मयि वज्रमयि दण्ड-मयि खड्ग-मयि पाश-मय्यंकुश-मयि गदा-मयि त्रिशूल-मयि पद्म-मयि चक्र-मयि वर-मय्यंकुश-मयि पाश मय्यभय-मयि बटुक-मयि योगिनि-मयि क्षेत्रपाल-मयि-गण-पति मय्यष्ट-वसु-मयि द्वादशादित्य-मय्ये-कादशरुद्र-मयि सर्व-भूत-मय्यमृतेश्वर- सहित- भुवनेश्वरि त्र्यैलोक्य -मोहन-चक्र-स्वामिनि नमस्ते नमस्ते नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ।।

जब 108 बार पाठ हो जाये तो पूर्ण श्रद्धा के साथ उस माला को अपने गले में धारण कर लें। धारण करते ही पूरे कमरे में एक अनिवर्चनीय प्रकाश सा अनुभव होगा और ऐसा लगेगा कि जैसे शरीर स्थित सभी चक्र जागृत हो गये हों, साथ ही साथ साधक को विविध दृश्य अनुभव होने लगेंगे, जीवन में साधक को यह शक्ति माला धारण किये रहना चाहिये, इसे धारण करने पर व्यक्ति की कीर्ति चारों ओर फैलती है और उसे समस्त कार्यों में निश्चय ही सिद्धि प्राप्त होती है, ऐसे साधक के घर में धन की की कोई नहीं रहती।

खड्ग माला-600/-

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है

योग तो अपनी शक्तियों को एकाग्र कर उनका उचित संचालन है

लम्बी आयु के साथ

रोग से शरीर को बचायें उचित आहार-व्यवहार हो देह और मन की प्रवृत्तियां निर्मल हो

और इन सबका एक ही उपाय

योगासन शरीर और मन दोनों के सौन्दर्य का विकास करते हैं। व्यायाम से केवल शरीर के विशेष अंगों का ही विकास होता है और अभ्यास व्यतिक्रम से इसका विपरीत प्रभाव भी पड़ता है। आसन धीरे-धीरे, कम से कम शक्ति का उपयोग करते हुए किये जाते हैं और उनमें एकाग्रता का पालन किया जाता है। व्यायाम जल्दी-जल्दी झटके के साथ बार-बार किये जाते है, जिससे शक्ति का अधिक उपयोग होता है। इसमें बल और स्वास्थ्य की वृद्धि होती है, पर चित्त सात्विकता की ओर उन्मुख न होकर संसार की ओर प्रवृत्त होता है।

वस्तुतः योग एक संस्कृत शब्द है,
जिसका भाव यह है कि आप खुद को जैसा समझते हैं,
उससे आप सर्वथा भिन्न हैं और जो आप हैं,
उससे संयुक्त करने वाली साधना का नाम योग है

सारे विश्व में भारत ही योग-दर्शन का ध्रुव केन्द्र है, भारत ही भगवान कृष्ण, जो योगेश्वर की उपाधि से विभूषित हैं, का जन्म स्थल है, वे तीनों कालों के ज्ञाता थे, योग की सारी विधियां उन्हें मालूम थीं। महाभारत युद्ध के समय शिविरों में लोगों के लिए, जो चिकित्सा केन्द्र थे, जिनमें औषधि तथा जो शल्य चिकित्सा आदि की व्यवस्था थी, वह स्वास्थ्य को दृष्टि में रखते हुए योग की सिद्धि एवं संग्रह ही था, प्रयुक्त औषधियां अचूक थीं। ऐसे ही हिस्ट्रीकल प्रूफ के रूप में 'च्यवन ऋषि' का नाम लिया जा सकता है, जिनकी औषधि में जर्जर शरीर को भी यौवनवान बना देने की क्षमता थी।

हमारे पूर्वजों को भौतिक प्राप्तियों का अभाव नहीं था, वे पूर्ण थे; क्योंकि वे योगी व साधक थे, उनके विचार शुद्ध व जीवन का दृष्टिकोण सकारात्मक था, शुभ भावना से परिपूर्ण होने के कारण वे नकारात्मक दृष्टि से काफी दूर थे; वे दूरदर्शी थे, उनका चिन्तन कल्याण कारक था।

भौतिकता की इस चकाचौंध में सारा विश्व रंग-बिरंगी वस्तुओं के प्रकाश में है, इस चक्रव्यूह से निकलना उसके वश की बात नहीं, परिस्थितियां डरावनी हैं, योग युक्त रहकर ही परिस्थितियों पर काबू पाया सकता है। यहां पर वही व्यक्ति सफल होगा, जिसको अपने योगेश्वर (गुरु) में विश्वास एवं निश्चय होगा।

मनुष्य को चिन्ता एवं भय ये दोनों बातें बहुत ही परेशान व तंग करती रहती है, लोग ज्यादातर बीमार इसी से होते हैं। यह संसार दुःखधाम है, इसे सुखधाम बनाना आपका अपना काम है। जिस प्रकार संसार के अन्य कामों को हमें सीखने की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार यह भी सीखना पड़ता है।

हमको दुनिया के हर काम को सीखने के लिए गुरु की आवश्यकता पड़ती है, गुरु योगेश्वर हैं , जो हमें योग एवं ज्ञान के साथ-साथ जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। योग एक आध्यात्मिक शक्ति भी है, **जिसके द्वारा आत्मदर्शन, परमात्मदर्शन, विश्वदर्शन की जो स्थिति बनती है उससे कायाकल्प हो जाता है।**

विज्ञान जगत की जितनी भी चमत्कारिक शक्तियां हैं, उससे लाखों गुना ज्यादा प्रभावक अध्यात्म जगत में योग की चमत्कारिक शक्ति है। योग के द्वारा अपने जीवन की कालिख को मिटाया जा सकता है, बीमारियों से मुक्ति पायी जा सकती है, परन्तु मृत्यु एक अटल सत्य है, जिसने जन्म लिया है, उसकी मृत्यु होना भी निश्चित है। जीवन उसी व्यक्ति का सार्थक है जिसे जीने की कला मालूम है।
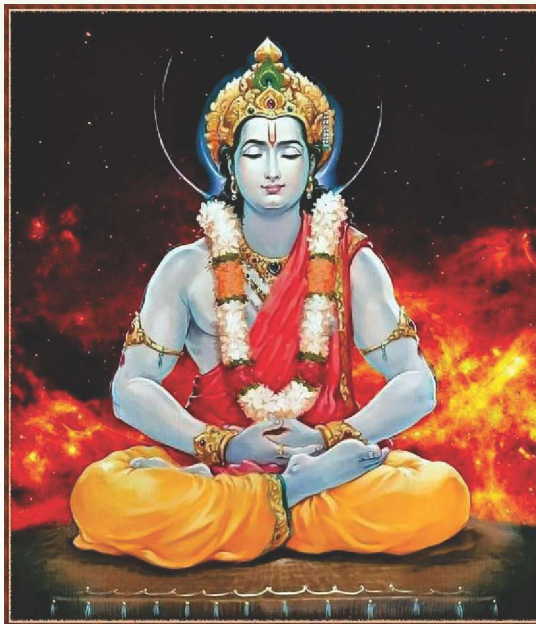
जीवन का अर्थ है - स्फूर्ति, उमंग, उत्साह। जीवन को लम्बी आयु तक ले जाने में हमारी खुद की मुख्य भूमिका होती है। आज आधुनिक जीवन में व्यक्ति व्यस्त है, स्वास्थ्य की ओर से लापरवाह हो गया है, उसे फुर्सत ही नहीं है, कि वह स्वास्थ्य की कद्र करे, क्योंकि हमारा जीवन आज अर्थ में लिपट गया है। व्यक्ति का सारा समय जैसे-तैसे अर्थ कमाने में ही समाप्त हो जाता है, उसे अपनी व्यस्त दिनचर्या में शांति पूर्वक बैठकर अपने बारे में विचार करने का समय ही नहीं है, उसके सिर पर चिन्ता का बोझ लदा ही रहता है, जिन्दगी उलझन एवं परेशानियों से भी भरी हुई रहती है, फलतः स्वास्थ्य का स्तर गिर जाता है और एक व्यक्ति जीते-जागते मुर्दे की भांति अपने शरीर के बोझ को ढोता रहता है।

आज व्यक्ति रोग-शोक व दुःख से व्यथित है। रोग दो प्रकार का होता है-

1. शारीरिक, 2. मानसिक।

जब रोग होता है, तो उससे दुःख होता है, दुःख के भी कई प्रकार हैं, जैसे शारीरिक दुःख, यह शरीर को दुःख पहुंचाता है, यह जन्म-जात है, मूल में अर्थात् जन्म से ही लंगड़े, लूले, अंधे वगैरह। चिड़चिड़ापन, चिन्ता, क्रोध, डर से मानसिक दुःख है। मानसिक रोग शारीरिक रोग से ज्यादा दुःखदायी है। इसके अतिरिक्त एक दुःख 'आकस्मिक दुःख' भी है , जिसका सामना व्यक्ति को करना पड़ता है, जैसे - प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, महामारी, भूकम्प, एक्सीडेंट इत्यादि। व्यक्ति के शरीर के अन्दर दो ताकते हैं, कन्सट्रक्टिव (निर्माण) और दूसरा डिस्ट्रक्टिव (विनाश - सत्यानाश)।

कुण्डलिनी जागरण से भी रोगों पर काबू पाना सहज होता है, क्योंकि कुण्डलिनी जागरण में प्रथम 'योग' का आधार लेना होता है।

योग, शरीर के अन्दर जो चेतना शक्ति है, उसे जाग्रत करने का सहज व्यायाम है। योग को साधना भी कहा जाता है। योग से स्वर्ग की प्राप्ति भी की जा सकती है। योग के माध्यम से बहुत सारे जीर्ण एवं कठिन रोगों को भी समाप्त किया जा सकता है। यह प्राकृतिक है इसमें सर्व प्राकृतिक गुणकारी तत्व समाहित हैं।

योग का मार्ग मेहनत का है। मार्ग एक है, बताने वाला भी एक है, जिसे सद्गुरु कहा जाता है। सद्गुरु के साथ चलने वाले

अनेक हैं। परन्तु मार्ग से भटकाने वाले अनेक हैं। इसलिये खुद का विश्वास जरूरी है, और सद्गुरु हैं तभी मंजिल की प्राप्ति होगी।

कई लोग किसी कार्य को करने में सफलता नहीं मिलने पर निराश व उदास हो जाते हैं और अपनी हार मान लेते हैं और प्रयास, जिसे पुरुषार्थ कहा जाता है, उसे भूल जाते हैं, यही बात असफलता का कारण बनती है। **मनुष्य जीवन सम्पन्नता से भरा हुआ है, मात्र उस सम्पन्नता को योग के द्वारा उभारना है।** योग चित्त वृत्ति को शुद्ध करने की महत्वपूर्ण साधना है। यदि इस अमूल्य हीरे जैसे जीवन की कद्र है, तो योग पद्धति को अपनाकर हम जीवन में नवीन उपलब्धियों को प्राप्त कर सम्पन्नता को हासिल कर लेंगे।

योग के माध्यम से व्यक्ति देवी-देवताओं से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। योग की साधना ब्रह्मचर्य पर टिकी हुई है, योग से शक्तियां प्राप्त होती हैं, जिससे योगी का मन और शरीर पवित्र होता जाता है। योग से हमारे व्यवहार में मृदुपन, स्वभाव में निर्मलता आती है तथा कर्मेन्द्रियां शीतल एवं शांत रहती हैं, मन, वाणी में निष्कपटता एवं वृत्ति में निश्छलता आती है।

योग साधना के लिए घर-बार छोड़कर जंगल या पहाड़ में जाना नहीं पड़ता, यह कार्य घर बैठे गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए किया जा सकता है। हम अपने कारोबार व्यापार, नौकरी आदि के कार्य करते हुए एवं अपने परिवार तथा समाज में रहते हुए योग कर सकते हैं।

योग स्त्री व पुरुष दोनों के लिए सुलभ एवं सहज है, क्योंकि स्त्री अपनी नियति के अनुसार चलेगी और पुरुष अपनी नियति के अनुसार चलेगा। यह बात नहीं है कि योग पुरुष ही करें और स्त्री नहीं, वह दोनों पर समान रूप से लागू होता है।

स्त्री व पुरुष तो एक कर्म-बन्धन में आते हैं, जो नेकी व बदी कर्मों के अनुसार अच्छे-बुरे हैं। मनुष्य को बुरे कर्मों से बचना चाहिये, परन्तु कर्मों से बचना कोई आसान

आर्य-महर्षियों ने मानव-कल्याण के लिए ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, मंत्रयोग, राजयोग, हठयोग आदि अनेक मार्ग बताये। हठयोग सभी योगों का सहयोगी है, इसके चार अंग हैं - आसन, प्राणायाम, मुद्रा और नादानुसंधान। आसन ही प्रथम अंग है। इसके अनेक प्रकार हैं। आसनों के अभ्यास से नाड़ी समूह में मृदुता आती है तथा इसकी सहनशीलता में वृद्धि होती है। मन एकाग्र होता है और प्राणतत्व का ऊर्ध्व नमन होता है। इससे शरीर के अनेक रोगों की निवृत्ति होती है और रोग दूर होने से शरर स्वाभाविक रूप से नैसर्गिक सौन्दर्य से परिपूर्ण होता है।

काम नहीं है, क्योंकि हमारा यह जो शरीर है, पांच तत्वों से बना हुआ है हर एक तत्व हमें अपने गुण व अवगुण की ओर आकर्षित करता है, जिसका नतीजा यह होता है, कि हम कर्मों के चक्र में फंस जाते हैं और हमारे इस स्थूल शरीर को इस स्थूल संसार के कारोबार, व्यवहार, धर्मान्तरण आदि कर्म करने ही पड़ते हैं। जो कर्म हम बार-बार करते हैं, वही कर्म-बंधन का कारण होता है, इसे ही संस्कार कहते हैं।

ये संस्कार इतने गहरे हो जाते हैं, कि पुनर्जन्म में उसके साथ ही जाते हैं और प्रारब्ध के रूप में उस कर्म को भोगना पड़ता है, हमारे वर्तमान और भविष्य एक दूसरे से ऐसे गुथे हुए हैं, जिसे अलग नहीं किया जा सकता। प्रश्न उठता है, उसे कौन सा कर्म करना चाहिए?

शादी होती है, स्त्री-पुरुष एक सूत्र में बंधते हैं। अब यहां 'काम' को प्राथमिकता प्राप्त है। काम वास्तव में आगे बढ़ने एवं ऊंचा उठने में मदद और आकर्षण पैदा करता है और यही इस संसार की आकर्षण शक्ति है। काम और कामवासना में भेद है। कामवासना में व्यक्ति का पतन होता है, आज के वैज्ञानिक कामवासना को भले ही शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानते हों, यह भी ठीक है, परन्तु योग की दृष्टि से यह आवश्यकतानुसार ही आवश्यक है।

योग का विधान संयम-नियम के अंतर्गत है। जैन धर्म में संयम-नियम के बारे में भी उल्लेख किया गया है, उसका अभिप्राय योग एवं ब्रह्मचर्य से ही सम्बन्धित है, ताकि बुरे कर्मों का त्याग हो सके, क्योंकि बीमारी बुरे कर्मों के कारण होती है।

पतंजलि ऋषि ने भी योग शास्त्र में इसका वर्णन किया है, जो कि हमारे दैनिक जीवन के लिए लाभप्रद है। सामान्य गृहस्थ के लिए भी उपयोगी है - ताकि वे अपनी शक्तियों एवं क्षमताओं का सदुपयोग कर श्रेष्ठ कार्य-सम्पादन कर सकें। पर स्त्री की ओर बुरे भाव से देखना निम्न श्रेणी का काम है, इससे शील भंग होता है। यही नियम स्त्री पर भी लागू होता है।

भोग से रोग होता है और योग से

व्यक्ति निरोगी होता है, योग हमारे जीवन में प्रकाश का काम करता है। जीवन को रसमय एवं सुखमय बनाता है। इससे जीवन संयमित बनता है और संयमित जीवन रोगों को मिटाने में सहायता करता है।

सामान्य व्यक्ति अपने देह तत्व अर्थात् पंच तत्व के अन्तर्गत जन्म लेता है और उसी में मर जाता है। इस स्थूल शरीर से परे सूक्ष्म अशरीर अर्थात् आत्म स्वरूप में अनुभूति करने का जो सुखद आनन्द प्राप्त होने की स्थिति से वंचित रह जाता है, वह भी योग से ही संभव होता है। योगी को तो भूत-भविष्य-वर्तमान तीनों कालों की बातें मालूम हो जाती हैं, उसे वह किताब की तरह पढ़ लेता है। योग व्यक्ति के 'स्व' की साधना है, योग की प्रत्येक साधना में हमारा शरीर ही आधार है। योग के माध्यम से हम अपने को कहीं भी स्थापित कर सकते हैं, हम जो चाहे प्राप्त कर सकते हैं, स्वास्थ्य, धन, यश, मान, बड़ाई इत्यादि। आध्यात्मिक स्थिति में स्थित होने से सब कुछ सकारात्मक हो जाता है, नकारात्मक तो तब होती है, जब अहं भाव (ईगो) आता है; दुःख तो तब होता है, जब हम अपनी स्थिति को सार्थक नहीं बना पाते हैं या साधनाओं में सिद्धियां प्राप्त नहीं कर पाते हैं, ऐसी स्थिति में योग कारगर सिद्ध होता है।

आज के संसार में हम अपने को बुद्धिमान समझते हैं। मनुष्य चन्द्रमा तक पहुंच चुका, वह वहां भी प्लॉट खरीदना चाहता है, परन्तु अशांत ही है, उसका मन बेलगाम घोड़े की तरह दौड़ रहा है। अशांति के कारण शारीरिक व्याधियां भी अपनी जड़ें जमाती हैं, कई बीमारियां तो लाख दवा करने पर भी नहीं मिटती हैं।

यदि कोई बीमारी इलाज एवं दवाई से नहीं ठीक होती है; तो वह योग विधि एवं कुछ आसनों को अपनाने से ठीक होने लगती हैं, ऐसा प्रायः देखा गया है।

योग आप का मददगार है और संयम का रास्ता दिखाता है। योग से काम पर विजय पायी जा सकती है, योग से बुद्धि का विकास होता है, योग चिड़चिड़ापन एवं क्रोध को समाप्त करने में रामबाण दवा है।

योग से चरित्र का निर्माण होता है, इसके द्वारा हम अपने चरित्र में सुधार कर सकते हैं और साथ ही हमारा समाज जो अवनति की ओर जा रहा है, उसका उत्थान किया जा सकता है।

योग से अनेक व्यसनों पर भी काबू पाया जा सकता है। योग से जीवन में पूर्णता भी प्राप्त की जा सकती है।

योग समृद्धिशाली बनने का एक विज्ञान है, जिससे व्यक्ति ऊंचाई के शिखर पर पहुंच जाता है।

श्वानोऽपि घुर्घरायते

माँ आनन्दमयी सिद्धाश्रम की योग्य साधिका थी, उनका सिद्धाश्रम से निरंतर सम्पर्क बना रहता था, परंतु ऊपर से वे इतनी अधिक सरल और सात्विक दिखाई देती थी, कि अनुमान ही नहीं होता था, कि ये उच्चकोटि की तपस्विनी है।

जीवन के अंतिम दिनों में समाज के कुत्सित लोगों ने उनकी बहुत अधिक आलोचना की, अखबारों में अंटसंट छापा और उनके चरित्र हनन की पूरी-पूरी कोशिश की।

एक परिचित स्वामी जी ने एक दिन उनसे पूछ ही लिया - माँ ये लोग आपकी झूठी आलोचनाएं निरंतर करते रहते हैं, आप इन्हें जवाब क्यों नहीं देती?

माँ ने उत्तर दिया - यहाँ से गंगा का तट एक मील दूर है, और रास्ता गलियों से होकर जाता है, मैं गंगा तट की ओर बढ़ रही हूँ और प्रत्येक घर से कुत्ते निरंतर भौंकते जा रहे हैं, अब इसके दो विकल्प है या तो मैं प्रत्येक घर में जाकर कुत्तों को समझाऊँ कि तुम भौंको मत और इस प्रकार एक-एक घर में जाकर समझाने का प्रयत्न करूँ या फिर मैं उन कुत्तों के भौंकने की बिना परवाह किये गंगा तट की ओर निरंतर बढ़ती रहूँ।

और मैंने दूसरा रास्ता ही स्वीकार किया है, क्योंकि कुत्तों को समझाने-बुझाने, प्रवचन देने और घी गुड़ खिलाने से भी कोई अंतर नहीं आयेगा वे तो बराबर भौकते ही रहेंगे, फिर उनके भौंकने पर ध्यान क्यों दूँ? जिनके पास कोई काम नहीं है वे कुत्तों की वाणी सुन सकते है, उस पर विचार कर सकते हैं।

- मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका से

आयुर्वेद सुधा

सहजन

नाम : संस्कृत–शोभाञ्जन, शिग्रु, शुभाञ्जना, कृष्णबीज इत्यादि। हिन्दी–सहजना, सैजना, मुङ्गना। बंगला–सेजना, सजिना। गुजराती—–सरगवो, मीठो सरगवो, सेगटो। मराठी—–शेवगा। पंजाब—–सेजना। लेटिन–मोलिङ्गा ओलिफेरा। देश के अलग-अलग जगहों पर सुरजना, सैजन और सहजन बन जाता है। सहजन या सुजना एक बहुत उपयोगी पेड़ है। इसे सेंजन और मुनगा आदि नामों से भी जाना जाता है।

वर्णन : सहजने के वृक्ष, बाग, वन और जंगल में पैदा होते हैं। इसका वृक्ष 10-15 फीट ऊंचा होता है। इसकी छाल कोमल और भूरे रंग की होती है। इसके पत्ते आकार में इमली के पत्तों की तरह परन्तु लम्बाई-चौड़ाई में उनसे कुछ बड़े होते हैं। इसकी फलियाँ दस इंच या इससे भी ज्यादा लम्बी और लटकती हुई लगती हैं।

फिलीपीन्स, मैक्सिको, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में भी सहजन का उपयोग बहुत अधिक किया जाता है। दक्षिण भारत में व्यंजनों में इसका उपयोग खूब किया जाता है। सहजन का वृक्ष किसी भी तरह की भूमि पर पनप सकता है और यह बहुत कम देख-रेख की मांग करता है। इसके फूल, फली और टहनियों को अनेक प्रकार से उपयोग में लिया जा सकता है।

गुण-दोष और प्रभाव : आयुर्वेदिक मत से सहजना चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निदीपक, रुचिकारक, रूखा, कड़वा, दाह पैदा करने वाला, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक, हृदय को हितकारी, पित्त को कुपित करने वाला, नेत्रों को हितकारी होता है।

इसकी जड़ की छाल, तीक्ष्ण, गर्म, मधुर, कुछ कड़वी, पाचक, आँतों के लिये संकोचक, कामोद्दीपक, विषनाशक, कृमिनाशक और भूख बढ़ाने वाली होती है। वह हृदय रोग, नेत्र रोग, कफ, वात, त्रिदोषजन्य ज्वर, सूजन, अग्निमांद्य, अर्बुद व्रण, कर्णशूल और जबान की हकलाहट में लाभ पहुँचाती है। इसके पत्ते स्वादिष्ट, शीतल, नेत्रों को हितकारी, वेदना को दूर करने वाले, कामोद्दीपक और कृमिनाशक होते हैं। ये नेत्ररोग, वात और पित्तविकार में लाभ पहुँचाते हैं।

भोजन के रूप में यह अत्यंत पौष्टिकता प्रदान करती है और इसमें औषधीय गुण भी हैं। हाल ही में शोध समुदाय का ध्यान इसकी ओर आकर्षित हुआ है क्योंकि इसमें पानी को शुद्ध करने के गुण भी मौजूद हैं। सहजन के बीज से तेल निकाला जाता है और छाल पत्ती, गोंद, जड़ आदि से आयुर्वेदिक दवाएं तैयार की जाती हैं। **सहजन में कार्बोहाइड्रट, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्निशियम, विटामीन 'ए', 'सी' और 'बी' काम्प्लैक्स प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। सहजन में दूध की तुलना में 4 गुना कैल्शियम और दुगना प्रोटीन पाया जाता है।** प्राकृतिक गुणों से भरपूर सहजन इतने औषधीय गुणों से भरपूर है कि इसकी फली के अचार और चटनी कई बीमारियों से मुक्ति दिलाने में सहायक हैं। दक्षिण भारत में इसे सांबर में डाला जाता है, वही उत्तर भारत में यह साल में एक बार ही फली देता है। सर्दियां जाने के बाद इसके फूलों की भी सब्जी बना कर खाई जाती है। फिर इसकी नर्म फलियों की सब्जी बनाई जाती है।

1. **सहजन के फूल उदर रोगों व कफ रोगों में, इसकी फली वात व उदर शूल में, पत्ती नेत्र रोग, मोच, शियाटिका, गठिया आदि में उपयोगी है।**
2. **सहजन की जड़ दमा, जलोधर, पथरी, प्लीहा रोग आदि के लिए उपयोगी है तथा छाल का उपयोग शियाटिका, गठिया, यकृत आदि रोगों के लिए श्रेयस्कर है।**
3. **सहजन के विभिन्न अंगों के रस को मधुर, वातघ्न, रुचिकारक, वेदनाशक, पाचक आदि गुणों के रूप में जाना जाता है।**
4. **सहजन की छाल के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से वात व कफ रोग शांत हो जाते हैं। इसकी पत्ती का काढ़ा बनाकर पीने से गठिया, शियाटिका, पक्षाघात, वायु विकार में शीघ्र लाभ पहुंचाता है। शियाटिका के तीव्र वेग में इसकी जड़ का**

काढ़ा तीव्र गति से चमत्कारी प्रभाव दिखाता है।

5. सहजन की पत्ती की लुगदी बनाकर सरसों के तेल में डालकर आंच पर पकाएं तथा मोच के स्थान पर लगाने से शीघ्र ही लाभ मिलने लगता है।
6. सहजन को वायु विकारों का शमन करने वाला बताया गया है।
7. सहजन के ताजे पत्तों का रस कान में डालने से दर्द ठीक हो जाता है।
8. सहजन की जड़ की छाल का काढा सेंधा नमक और हींग डालकर पीने से पित्ताशय की पथरी में लाभ होता है।
9. सहजन के पत्तों का रस बच्चों के पेट के कीड़े निकालता है और उलटी-दस्त भी रोकता है।
10. सहजन फली का रस सुबह-शाम पीने से उच्च रक्त-चाप में लाभ होता है।
11. सहजन की पत्तियों के रस के सेवन से शरीर सुडौल हो जाता है।
12. सहजन की छाल के काढ़े से कुल्ला करने पर दांतों के कीड़े नष्ट होते हैं और दर्द में आराम मिलता है।
13. सहजन के कोमल पत्तों का साग खाने से कब्ज दूर होती है।
14. सहजन की जड़ के काढ़े को सेंधा नमक और हींग के साथ पीने से मिर्गी के दौरों में लाभ होता है।
15. सहजन की पत्तियों को पीसकर लगाने से घाव और सूजन ठीक होते हैं।
16. सहजन के गोंद को जोड़ों के दर्द में उपयोग किया जाता है। अदरक के रस में सहजन की जड़ का रस मिलाकर पीने से दमे में बहुत लाभ होता है।
17. अगर सर्दी की वजह से नाक-कान बंद हो चुके हैं तो आप सहजन को पानी में उबाल कर उस पानी की भाप लें। इससे जकड़न कम होगी।
18. सहजन में कैल्शियम की मात्रा अधिक होती है, जिससे हड्डियाँ मजबूत बनती हैं।
19. सहजन में विटामिन 'ए' होता है जो कि पुराने समय से ही सौंदर्य के लिये प्रयोग किया जाता रहा है। इसे हरी सब्जी के रूप में खाने से बुढापा दूर रहता है। इससे आँखों की रोशनी भी अच्छी होती है।
20. सहजन का सूप पीने से शरीर का रक्त साफ होता है। पिंपल जैसी समस्याएं तभी सही होंगी जब खून अंदर से साफ होगा।
21. सहजन की पत्ती को सुखाकर उसकी चटनी खाने से कई बीमारियों जैसे रक्त अल्पता तथा आँख की बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं। उसमें आयरन, फास्फोरस, कैल्शियम प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।
22. सहजन के बीजों का तेल शिशुओं की मालिश के लिए प्रयोग किया जाता है। त्वचा साफ करने के लिए सहजन के बीजों का सत्व कॉस्मेटिक उद्योगों में बेहद लोकप्रिय है। सत्व के जरिए त्वचा की गहराई में छिपे विषैले तत्व बाहर निकाले जा सकते हैं।
23. सहजन के बीजों का पेस्ट त्वचा के रंग और टोन को साफ रखने में मदद करता है। मृत त्वचा के पुनर्जीवन के लिए इससे बेहतर कोई रसायन नहीं है। धूम्रपान के धुएँ और भारी धातुओं के विषैले प्रभावों को दूर करने में सहजन के बीजों के सत्व का प्रयोग सफल साबित हुआ है।

27. ज्वर के अंदर सहजना का प्रयोग उत्तम होता है। इससे रोगी को सर्वांगीण लाभ होता है। पसीना होता है, पेशाब होता है और मज्जा तंतु तथा हृदय को उत्तेजना मिलती है।

25. मज्जा तन्तु सम्बन्धी रोग जैसे गठिया, लकवा, अर्दित, सन्धिवात इत्यादि रोगों में इसकी छाल का स्वरस बहुत लाभ पहुँचाता है। इसके पत्तों की तरकारी से दस्त साफ होता है।

26. इसकी जड़ की छाल का क्वाथ हींग और नमक के साथ सूजन, मूत्रकृच्छ और पीबदार घावों को दूर करने के लिये दिया जाता है।

27. इसकी ताजी जड़ उत्तेजक, शांतिदायक, अग्निवर्द्धक और मूत्रल होती है। इसके फलों में भी उत्तेजक तत्त्व रहते हैं।

(प्रयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

Santan Prapti Mangala Sadhana

Santan Saptami - 03.09.22

Any Wednesday or Full Moon Day

Boon For the Childless

An amazing and unfailing Sadhana that surely blesses one with a child

Married life without children a like life in a desert. Without the delightful cries of children, their pranks, their jingling laughter everything appears so dull and purposeless. Ask a couple who have been married for the past several years and have not yet been visited by the stork and they shall tell you how colourless life can be without children.

One reason for the absence of children could be the afflication of planet Mars in the horoscope of the husband or the wife or both. A malefic Yoga arising due to the afflication of Mars could not only make married life unhappy due to frequent quareels between the couple, but could also deny one children.

The Indian world of Sadhanas is full of rituals that could help one overcome various problems of life. One such Sadhana is the *Santan Prapti Mangala Sadhana* that if tried with full faith and devotion could produce the desired result.

Many childless couples were gifted this Sadhana by revered **Sadgurudev Dr. Narayan Dutt** Shrimali and in not one case did it fail to bless the couple with a child.

Married couples who wish to have children could try this wonderful Sadhana.

This Sadhana should be tried on a *Wednesday or Purnima (Full moon day).* Earlymorning try this Sadhana between 4 am and 6 am. Have a bath. Wear yellow clothes. Sit on a yellow mat facing North. The wife should sit on the right side of the husband. She should not tie her hair and should let it remain loose. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it place a steel plate. In the plate place a **Mangal Yantra.**On the Yantra put a betel nut.

Then chant one round of Guru Mantra and ask the Guru to bless you with success in the Sadhana.

Make a mixture of milk, water, curd, ghee and sugar, The husband should then chant one round of the following Mantra with rock crystal rosary while the wife should pour the mixture on the Yantra and betel nut in a steady stream. By the time the one round is complete the betel nut should get fully immersed in the mixture.

Om Bhoumeshwaraay Vam Purneshwaraay Namah.

After this the wife should sit on the left side of the husband. Place a ***Santaan Prapti Yantra*** in another steel plate. Offer vermilion, rice grains and flowers on it. Light a ghee lamp. Then chant three rounds of this Mantra with *two yellow Hakeek rosaries.*

Om Purnendu Purneshwaraayei Yogaadhibal-prakataayei Putra Pradaatavyei Namah.

The husband and wife shall have one yellow Hakeek rosary each. The wife shall chant the Mantra with the husband and thus total six rounds shall be chanted. After Sadhana chant one round of Guru Mantra.

The next day drop all Sadhana articles in a river or pond except the yellow Hakeek rosaries. The husband and wife should wear their respective rosary daily for one or two hours and then keep it in the place of worship. They should wear it thus for one month and then drop the rosaries in a river or pond.

Without doubt this is a very powerful Sadhana whose results cannot fail to manifest provided it is tried with full faith and concentration.

Sadhana Articles-750

Radha Sadhana

Rasha Ashtmi - 03.09.22

Any Ashtami or eighth day of the bright fortnight of lunar month

The Source of true Love!

Radha was the epitome of the true love, for her love for Lord Krishna was total and unblemished. She did not even worry about what the world had to say and devoted herself fully to Lord Krishna. Performing her Sadhana means getting linked to a source of divine love and understanding the meaning of real love.

So deep was the love of Radha for Lord Krishna that the great Sadhaks and saints who have worshipped them over the ages believe that Radha and Krishna are synonymous and they are but one soul with two physical forms. It is only due to the worldly game which they had to play that they appeared to be two different identities.

Radha is also worshipped as a unique symbol of love and devotion - love and devotion which were so deep that her entire life became devoted to Lord Krishna. For her life meant doing everything for her Lord. She breathed, ate, drank and enjoyed nothing but the name of her lover Lord Krishna. So amazing was her devotion that once when Uddava, a friend of Krishna, paid a visit to Radha's house and stayed overnight he was in for a big surprise. In the middle of the night he was woken up by the soft chanting of ***Krishna, Krishna, Krishna...***

He thought that pershaps Radha was praying to the Lord. But when it went on for two hours he finally got up to see. As he entered Radha's room he saw her comfortably lying on her bed with a smile on her lips. But she was not chanting the name of Krishna from her lips. Rather the sound was pouring out from each pore of her physical form. Uddhva was overwhelmed by the depth of her love and touched her holy feet.

It is said that if one worships RAdha or tries her Sadhana then one gets linked to the divine love of Lord Krishna. This is the easiest way to win over the love and affection of the Lord. Also this amazing Sadhana is a boon for lovers who seek to make their feelings everlasting. It also endows one with a unique divine radiance that can help one win over the heart of one's lover or beloved. It can also help lovers, who face opposition from the society or elders, take their love to the state of culmination in form of marriage. For this Sadhana one needs as ***Adhyashakti Yantra*** and ***two Priyaa-Priya Mudrikas*** (special rings).

This is a truly amazing Sadhana which should be tried on **any eighth day of the bright of fortnight of the lunar month**. The two lovers can sit together in the Sadhana or one could try it on behalf of both. in the morning at 4 am have a bath and wear beautiful clothes. Make a mark with vermilion on the forehead. Sit on a white mat facing North. Cover a wooden seat with white cloth. On it spread rose petals. On the rose petals place a Adhyashakti Yantra. Light a ghee lamp and fragrant incense. Wear the Priyaa-Priya Mudrika in any finger of the right hand if you are a man and left if you are a woman. If one of the lovers is not present then place his or her ring on the Yantra.

First chant one round of Guru Mantra. Then for fifteen minutes concentrate your gaze on the Adhyashakti Yantra and feel the love of Radha and Lord krishna enter your form. In your mind form a picture of **Lord Krishna** and **Radha** and concentrate your thoughts on them. After fifteen minutes keep looking at the Yantra and for half an hour chant this Mantra.

Om Premaayei Premadaayei Namah Shreem Om.

After this chant one more round of Guru Mantra. If your lover or beloved was not able to perform the Sadhana with you give his or her ring to him or her when you next meet. After the Sadhana, day long keep chanting the Mantra in your mind. You can do it even when you are moving about, eating, resting or working. The next day drop the Yantra in a river or pond and keep wearing the ring lifelong.

Sadhana Articles-540/-
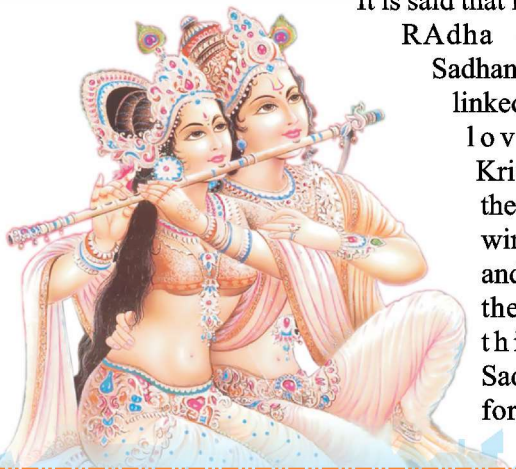
7 अगस्त 2022

सर्वत्र जीवन उन्नति प्रदायक

भगवती भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : उत्सव महेश्वरी समाज, जनोपयोगी भवन, अल्फ़ा सिनेमा वाली रोड, विद्याधर नगर थाने के सामने, जयपुर (राजस्थान)

आयोजक मण्डल–रघु शर्मा-9351508118, कैलाश चन्द्र सैनी-99284 02426, सत्यनारायण शर्मा-9352010718, पूरणमल सैनी-7737588044, अनिल शर्मा-9414467062, महावीर टेलर-93140 76003, सुरेश चौधरी-9829087426, दामोदर शर्मा-9828866969, गोपाल कुमावत-9982204583, शंकर सिंह नरूका-8058496254, धनुषधारी उपाध्याय -9829189384, दीनदयाल सैन-9636654386, राजेन्द्र टेलर-81044 81607, डॉ. दीपक टेलर-8233573490, कल्याण सहाय शर्मा, रामलाल चौधरी-9351889052, सुभाष पारीख-9161874006, सौरभ शर्मा-9461973963, महेश चौधरी-9414922770, ब्रजमोहन शर्मा-99292 20055, राजेन्द्र पारीख-9829620621, सुनाराम सैनी-9314074515, किशन सैनी-9351307189, बाबुलाल शर्मा-9950704254, ओमप्रकाश कुमावत-9351414123, चन्द्रप्रकाश सैनी-7737683920, मदनलाल सैनी-9314801912, भगवान सहाय शर्मा-9314930879, नाथुलाल चौधरी-9828182098, कजोड़मल सैनी-8875555955, जितेन्द्र सैन-9950254357, मांगीलाल-9828284321, पुखराज प्रजापति-87699 63427, डॉ. धीरेन्द्र सिंह सोलंकी-93522 40065, हरिसिंह चौधरी-9829034361, एडवोकेट मीनाक्षी पारीख-8696089300, शंकरलाल सैनी-9785810909, रत्न गुप्ता-96368 86554, रामावतार प्रजापत-9403070988, नितेश अग्रवाल-89478 32871, चन्द्रसिंह ओला-9001482203, बजरंग लाल गावड़िया-9929677699, गुमान सिंह (गुढ़ा गौड़जी)-9928267353, धर्मेन्द्र शर्मा-9694659167, राजेन्द्र यादव-8385947615, बनवारी कुमावत-9351437497, कैलाश चन्द्र सैनी-9414055123, सूरज गोस्वामी-9571632326, कैलाशचन्द्र प्रजापति-9352516599, जगदीश चौधरी-9694333339, हुकमचन्द्र शर्मा-9314873617, मोहनलाल शर्मा-9214000778, सुरेश शर्मा-95874 51923, गंगापुर सिटी–ओमप्रकाश शर्मा-8890606832, तरुण, पवनकुमार सैन, मोहनलाल सैनी, सरोज सैनी, लक्ष्मीनारायण स्वामी, रामसिंह, रिया अग्रवाल, रामवतार सैनी, रमेशचन्द्र कुमावत, राजेन्द्र कुमावत, श्रवण कुमार शर्मा, संजय शर्मा, बाबुलाल सैनी, बाबुलाल कुमावत, चित्तौड़गढ़–राजेन्द्र वैष्णव, भगत कुमार वैष्णव, गोपाल वैष्णव, अजमेर–सुशीला देवी, उदयपुर–बंशीलाल मैनारिया, लक्ष्मण माली, परम शिवम शर्मा, चम्पालाल लुहार, नानालाल माली, लोगरमल माली, रमेश वैष्णव, राकेश अग्रवाल, शंकर लाल रावत, रतन लाल सेनी, पुष्कर–रतन, सिद्धाश्रम साधक परिवार महुआ–शिवराम मीणा, दिलीप कुमार सैन, मंगलचंद सैनी, आलोक, अरुण श्रीवास्तव, पवनसिंह चौहान, भिवाड़ी–रमेश राठौर, विनोद जैन, राजा सैन (भरतपुर), रामरतन शर्मा, जीतू मीणा, राजेश गोयल, गजानन्द प्रजापत, सरिता शर्मा, मुरारी लाल शर्मा, रमेश्वर यादव, रेखा यादव, रामबाबु सैनी, विनोद सैनी, आशीष व्यास, ताराचन्द्र (कविता जांगिड़), नन्दकिशोर भाटिया, सज्जन सिंह, विजय शास्त्री (नारनोल), नन्द किशोर शर्मा, जितेन्द्र सोनी, दिनेश सोनी, रामप्रकाश शर्मा, प्रेमप्रकाश शर्मा, कृष्णकान्त शर्मा, विजय शर्मा, पुरुषोत्तम शर्मा, अपर्णा गुप्ता (कुण्डगांव), उम्मेद शर्मा (खण्डार), विमलेश शर्मा (खण्डार), गौरव शर्मा, दीनदयाल शर्मा (करणपुर), सुरेश सोनी, मुकेश सोनी, सुरेश जोशी, रामस्वरूप मीणा, गजानन्द शर्मा, रजनीकान्त शर्मा, रामावतार प्रजापत-9403070988, नितेश अग्रवाल-8947832871, चन्द्रसिंह ओला-9001482203, बजरंग लाल गावडीया-9929677699, गुमान सिंह (गुढ़ा गौड़ जी)-9928267353, कृष्ण कुमार-9828206898 मनकेश मीणा, नेमी चन्द सैन (रोड नं. 17), कुलदीप जोशी, मुकेश-सुमन (कोटा), प्रमोद जी व्यास (कोटा), मुकेश सारस्वत (भीलवाड़ा), कृष्ण कुमार (गुड्डा गौड जी), भागवत सोनी

15 अगस्त 2022

गुरु साधना शिविर

शिविर स्थल :

जिजाऊ गार्डन, दाताळा रोड, चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

आयोजक मण्डल-चन्द्रपुर-वासुदेव ठाकरे-9764662006, पंकज घाटे-7620862677, वतन कोकास-9422114621, विलास खांडरे-9922775530, सुनिल आखाडे-9421717359, अजय वांढरे- 94231 17876, प्रविण नागरकर-9766019983, पवन कांडलकर-9860331210, विजय जैस्वाल-9421724202, अशोक जानवे, अजय कुरानकर, राहुल सोनटक्के, नरेश गिरी, नरेश सोनकुसरे, कुलदीप ढोके, अरुण रहांगडाले, अजय डारलींगे, श्रीकांत बावणे, शरद मडावी, संजय वरभे, पंकज नागरकर, पुंडलिक निंदेकर, सुनिल मांउवकर, सचिन डोंगरे, सौ. जिजाबाई, प्रविण डफाडे, वामण श्रिरसागर, ओम वैद्य, दिगांबर कुरानकर, राम सोनकर, राजेंद्र वैद्य, राजु नागरकर, बल्लारपुर-साई विलास बासनकर, वडसा-डॉ. रूपेश सक्सेना, कुरखेडा-मनीष शर्मा, ब्रह्मपूरी-प्रा. केळझरकर, हेमंत माळवे, नागपुर-किशोर वैद्य-9371710599, छत्रपालसिंग गौर, आकाश गुप्ता, गुलाबसिंह बेस, गणेश भोयर, भंडारा-देवेन्द्र काटेखाये-7744946669, नरेंद्र काटेखाये, तिलकचंद कापगते, चंद्रकांत खंडाईत, वर्धा-चंद्रकान्त दोड-83790808067, शिवा गव्हाणे, आकाश बुरले, धीरज वाघाडे, हरीश अनावडे, राजेश बावणे, अनिकेत उरकुडे, अर्पित कोतटकार, गडचिरोली-दल्लुराज उईके-9422615423, नेताजी कुणघाळकर, उत्तम पिंपरे, पतिराम मडावी, अरविंद पेद्दीवार, विजय कुमार राम, सिकंदर दुर्योधन, बालाघाट-नरेन्द्र बोम्परे-9406751186, सुरेश रावते, संतोष परिहार, अखिलेश श्रीवास्तव, कृष्णकुमार ठाकरे, यवतमाळ-श्रीकांत चौधरी-9822728916, विनोद कापसे-9421852897, देवांशु दीपक येण्डे, सचिन इंगळे, नंदकिशोर भागवत, कैलाश शेबे, राजेश मैदमवार, विनायक निवल, अकोला-राजेश सोनोणे-9823033719, रविंद्र अवचार-9423468059, भास्कर कापडे, शाम दायमा, पुंजाजी गावंडे, देशमुख गुरुजी, विष्णु जायले, अमरावती-रोहित काले-8554068558, हरीश गिरी, ललित भेंडेकर, गोंदिया-डी.के. डोय-9226270872, संजय पिल्लारे, सुरेंद्र लिल्हारे, कमलजी देवेंद्र देशमुख, पांडूरंग पिल्लारे

19 अगस्त 2022

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल : लेमन ट्री प्रीमियर, नियर इस्कान गेट, नागेश्वर रोड, द्वारका (गुजरात)

सम्पर्क-हरेश भाई जोशी-7016108433, सुनील भाई सोनी-9925555035, हेमन्त भाई-9426285578, चिराग माहेश्वरी-9725323930, विजय भाई पटेल- 99251 04035, विवेक कापड़े-7984064374, जयनीश

पानवाला-7984248480, हितेश भाई शुक्ला-7048171555, पी.के. शुक्ला-9426583664, विजयनाथ साहनी-9898032172, श्यामलाल राजपूत-9327648601, विजयालक्ष्मी बेन-8401763630, प्रमीत मेहता -7990980150, प्रग्नेश भाई (डाकोर)- 9904922935, राजेश अग्रवाल (राजकोट)-9824391747, धवल भाई (द्वारिका)-98984 90019, दीपेश गाँधी-886612400, देवेन व्यास- 95588 07927, रमेशभाई तम्बतकर -7770872022, अतुल भाई जानी (सुरेन्द्र नगर)-8469334185

21 अगस्त 2022

भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : शिक्षण संगीत आश्रम, स्वामी श्रीवल्लभ दास मार्ग, निअर गुरुकृपा हॉटल, प्लॉट नं. 6, सायन (पूर्व), **मुम्बई**

(सायन स्टेशन से 5 मिनट की दूरी पर)

आयोजक मण्डल - तुलसी महतो-9967163865, डॉ. संतलाल पाल-9768076888, यशवंत देसाई-9869802170, नागसेन पवार -9867621153, राहुल पाण्ड्या, डॉ. सतीश-7066098758, रवीन्द्र गायकवाड़-9920680113, रोहित शेट्टी, मनोज झा, राकेश तिवारी, हमप्रसाद पाण्डे, बुद्धिराम पाण्डे, सुनील उपाध्ये, जी.डी. पाटिल, रवि पाटिल, मोहन सैनी, सुहासिनी दयालकर, गायत्री दयालकर, एम.बी. रत्नाकर, श्रीनिवास, राम पलट, ज्योति आहूजा, शैलेश जोशी, अनिल कुंभारे, बिना सिंह, राधा पाल, मानव और पीयूष, अजय मंचेकर, गंगा, जिया, सीता और सोनू, सुनील उपाध्ये, सुनील साल्वी, प्रकाश सिंह, संजय गायकवाड़, गोरखनाथ, अनय सिंह, अजय कुमार सिंह, प्रवीण राय, भावप्रसाद पांडे, सुरेश यादव, अरविंद अरोड़ा, विवेक पवार, ममता

28 अगस्त 2022

भगवती भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल :

एकलव्य बैंक्विट हॉल, कटहल मोड़ और दलादली के बीच, रिंची हॉस्पिटल से आगे सहदेव पेट्रोल पंप के नजदीक,

राँची (झारखण्ड)

मुख्य आयोजक - इन्द्रजीत राय - 8210257911, 9199409003, लाल बाल मुकुन्द नाथ सहदेव - 7783009299, मोहन शर्मा- 9431175892, आभा रानी एव मोटाइ कुदादा- 8340317589, सत्य प्रकाश सिंह- 9123244809, डॉ. आर.के. हाजरा- 7903113893, अमरेन्द्र कुमार सिंह- 9162155183, चन्द्र शेखर पाण्डेय- 7004337114, दिलीप कुमार राज- 9304318211, हरेन्द्र कुमार महतो- 9304337091, अनुप कुमार चेल (बुण्डू) - 7535817357, भुवनेश्वर कुमार प्रमाणिक (बुण्डू) - 9771333701, प्रमोद साव, (गोमिया) - 8210885811, सत्येन्द्र भारती (सिजवा)-9835121114, अरूण मुण्डा (फुसरो)- 8863866106, नीरज कुमार श्रीवस्ताव (टाटानगर)- 9234395840, श्याम किशोर सिंह (बाघमारा)- महेन्द्र बिरूली (चाईबासा), शान्तीलाल जी (बलियापुर धनबाद), अरूण कुमार (धनबाद) राम नरेश ठाकुर (धनबाद), **आयोजक राँची -** प्रकाश साहु, धर्म दयाल साहू, ध्रुव कुमार वर्मा (पिंटु) संतोष कुमार महतो, मुन मुन सिंह, अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मुना सिंह, इन्द्रदेव राम, साकेत राम, राजेश मिश्रा, राजु निशाद, कलेन्द्र साहू, हिमांशु जी, शिव शंकर जी, अरूण कुमार सिंह, करण जी, श्याम चन्द्र श्वासी, केशव मिश्रा, निरू वर्मा, सुरेन्द्र तिवारी, प्रेम लाल मेहरा, रौशन विसाद, संतोश पाठक, लता देवी, पुनम देवी, राजेन्द्र वर्मा, काण्डे कुदादा, शंकर सिन्हा (डोरण्डा) अजय जी, भूषण राय, **टाटीसिलवे**-लक्ष्मी मुर्मू, सुनिता बड़ाईक, संगिता देवी, राम दास मुर्मू, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बुंडू के समस्त गुरू भाई एवं बहन- 7717732131, 9771333701, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार तमाड़ के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार टाटानगर के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9234395840, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार विष्णुगढ़ के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9135939696, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार गोमिया के समस्त गुरु भाई एवं बहन-9835393422, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार भूमरा पहाड़ा क्षेत्र एवं चतरो चट्टी के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9430337501, 9771680648, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार फुसरो के समस्त गुरु भाई एवं बहन-8210176388, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार सिजुआ के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9835121114, 7004283749, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार रजरप्पा के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बोकारो के समस्त गुरू भाई एवं बहन- 8789219358, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार धनबाद के समस्त गुरू भाई एवं बहन- 787094501, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार बाघमारा एवं मधुबन के समस्त गुरु भाई एवं बहन, अन्तर्राष्ट्रीय सि.सा. परिवार गुमला के समस्त गुरु भाई एवं बहन- 9113320509, 6201118390

याचना

एक सन्त को बड़ी तीव्र भूख लगने लगी, मगर खाने को कुछ नहीं था। मन ने कहा-''प्रभु से माँग लो।'' अन्तरात्मा बोली-''विश्वासी आदमी का यह काम नहीं है।''

मन-''खाना न माँगो, पर धीरज तो माँग लो।''

अन्तरात्मा-''हाँ, धीरज माँगा जा सकता है।''

इस पर उन्हें अपने अन्दर भगवान की दिव्य वाणी सुनाई दी-''धीरज का समुद्र, मैं सदा तेरे साथ हूँ। तू याचना करके अपने विश्वास को क्यों खो रहा है? क्या मैं बिना माँगे नहीं देता? भक्त के योग-क्षेम का सारा भार उठाने की तो मैंने घोषणा कर रखी है।''

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। 9.22।।

सन्त-''सच है! मैं भूला था प्रभो!''

18 सितम्बर 2022

माँ विंध्यवासिनीसाधना शिविर

शिविर स्थल : विंध्याचल

उपहारस्वरूप
शक्तिपात दीक्षा

महाकाली

महाविद्या दीक्षा

यह तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है।
आप चाहें या न चाहें विघटनकारी तत्व शत्रुओं के रूप में आपके जीवन की शांति,
सौहार्द भंग करते ही रहते हैं जिनसे व्यक्ति हर क्षण त्रस्त रहता है...
और उनसे छुटकारा पाने के लिए टोने-टोटके आदि के चक्कर में फंसकर
अपने समय और धन दोनों का ही व्यय करता है, परन्तु फिर भी शत्रुओं से
छुटकारा नहीं मिल पाता।

महाकाली दीक्षा के माध्यम से व्यक्ति शत्रुओं को निस्तेज एवं परास्त करने में
सक्षम हो जाता है, चाहे वह शत्रु आभ्यान्तरिक हो या बाहरी,
इस दीक्षा के द्वारा वह उन पर विजय प्राप्त कर लेता है,
क्योंकि महाकाली ही मात्र वे शक्ति स्वरूपा है,
जो शत्रुओं का संहार कर अपने भक्तों को रक्षा कवच प्रदान करती है।

।। क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं दक्षिणे कालिके
क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं फट् ।।

योजना केवल 13-14 एवं 25 अगस्त इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- 'नारायण मंत्र साधना विज्ञान', जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे। संस्था के बैंक खाते का विवरण पेज संख्या 2 पर देखें।

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 July, 2022
Posting Date : 21-22 July, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. RAJ/BIL/2010/34546
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : अगस्त एवं सितम्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
25 अगस्त
16 सितम्बर

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)
13-14 अगस्त
10-11 सितम्बर

प्रेषक -
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002